खंड

1

अनुवादः अवधारणा और महत्व

इकाई 1 अनुवाद : अवधारणा और आयाम 9

इकाई 2 अनुवाद : प्रकृति एवं क्षेत्र 26

इकाई 3 भारतीय एवं वैश्विक परिप्रेक्ष्य में अनुवाद का महत्त्व 38

इकाई 4 अनुवाद के उभरते मुद्दे 49

खंड परिचय

खण्ड 1 अनुवादः अवधारणा और महत्त्व

'अनुवाद सिद्धांत' पाठ्यक्रम के इस खण्ड 'अनुवादः अवधारणा और महत्त्व' में अनुवाद की अवधारणा और उसके महत्त्व से जुड़ी चार इकाईयां शामिल की गई हैं जिनसे अनुवाद की अवधारणा, आयाम, प्रकृति और क्षेत्र तथा वैश्विक एवं भारतीय परिप्रेक्ष्य में उसके महत्त्व को समझने की कोशिश की गई है। इसके साथ ही अनुवाद के मुद्दों पर भी विचार किया गया है। इन इकाईयों के माध्यम से अनुवाद की अवधारणा और उसके स्वरूप का एक मानचित्र प्रस्तुत होगा। पहली इकाई 'अनुवाद' अवधारणा और आयाम' के अन्तर्गत अनुवाद की व्युत्पत्ति, उद्गम, स्रोत और लक्ष्य भाषा, अनुवाद के आधार और अनुवाद के आयामों पर विचार किया गया है जबकि दूसरी इकाई 'अनुवाद : प्रकृति और क्षेत्र' में अनुवाद की प्रकृति के विषय में विचार करते हुए अनुवाद को विज्ञान कला अथवा शिल्प या पुनर्सृजन मानने सम्बन्धी मुद्दों पर ध्यान दिया गया है इसके अतिरिक्त अनुवाद के क्षेत्र एवं उसकी व्याप्ति की चर्चा की गई है। इसी प्रकार तीसरी इकाई 'भारतीय एवं वैश्विक परिप्रेक्ष्य में अनुवाद का महत्त्व' अनुवाद की प्रासांगिकता के विभिन्न कारणों पर विचार करते हुए भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया में अनुवाद की उपादेयता पर प्रकाश डालती है।

चौथी और इस खण्ड की अंतिम इकाई 'अनुवाद के उभरते मुद्दे' विभिन्न मुद्दों पर विचार करते हुए भाषिक, सांस्कृतिक रूपान्तरण तथा अनुवाद की दृश्यता जैसे मुद्दों को विवेचन के केन्द्र में लाती है।

इकाई 1 अनुवाद : अवधारणा और आयाम

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 अनुवाद क्या है? अनुवाद की व्युत्पत्ति, उद्गम, स्रोत भाषा, लक्ष्य भाषा

1.2.1 प्राचीन काल में अनुवाद का उद्गम

1.3 अनुवाद की अवधारणा

1.4 अनुवाद के प्रकार

1.5 व्याख्याओं के आधार और परिसीमा

1.6 अनुवाद का उद्देश्य

1.7 अनुवाद का आधार

1.7.1 अनुवाद का आधार : मूल भाषा

1.8 परिचालन

1.9 अनुवाद के आयाम

1.9.1 अनुवाद और धार्मिक साहित्य

1.9.2 अनुवाद और वैचारिक ज्ञानात्मक साहित्य

1.9.3 अनुवाद और वैज्ञानिक तकनीकी विकास

1.9.4 अनुवाद और व्यापार

1.9.5 अनुवाद और विज्ञापन

1.9.6 अनुवाद और संचार माध्यम

1.9.7 अनुवाद और पर्यटन उद्योग

1.9.8 अनुवाद और न्यायालय

1.9.9 अनुवाद और सांस्कृतिक सम्बन्ध

1.10 सारांश

1.11 अभ्यास के लिए प्रश्न

1.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप -

- अनुवाद की अवधारणा से परिचित हो सकेंगे;
- अनुवाद के प्रकारों को जान सकेंगे;
- अनुवाद के विभिन्न आयामों से परिचित हो सकेंगे।

1.1 प्रस्तावना

भारत नदियों, वनस्पतियों के कारण समृद्ध देश रहा है। इसलिए यहां विश्व भर से अनेक जातियां जीविका की सुविधा के लिए आती रही हैं। ये जातियां अपनी अपनी भाषा और बोली ले कर आती थीं। अपनी अपनी भाषा में वे इन्द्र वरुण और रुद्र की स्तुति या निन्दा करती थीं। बहुवचन 'जनाः' और 'विवचन जनम्' भिन्न भाषा बोलने वाले भिन्न जनपद के निवासियों के द्योतक शब्द है। प्रत्येक भाषा के अनेक रूप हैं, अनेक मुहावरे और लोकोक्तियां हैं। एक जनपद की भाषा से दूसरे जनपद की भाषा में अंतर आ जाता है। एक ही जनपद के पूर्व और पश्चिम की भाषा में अंतर आ जाता है। शक, कुषाण, हूण तथा आस्ट्रिक जातियां यहां क्रमशः आईं। यहूदी और यूनानी जातियां भी भारतवासी रही हैं। पतंजलि के समय प्राकृत भाषा भी अस्तित्व में आ चुकी थी। पुराने नाटकों में उच्च जन संस्कृत बोलते हैं तो स्त्रियों को प्राकृत बोलते दिखलाया गया है। शिक्षा के भेद से यह भेद किया दिखाया गया है। प्रत्येक भाषा में संबद्ध भौगोलिक क्षेत्र के व्यक्तियों के रहन सहन के ढंग और आचार विचार की गति संरक्षित रहती है। भावात्मक एकता के लिए प्रत्येक क्षेत्र के इन रूपों एवं भावों को दूसरे क्षेत्र के रूपों एवं भावों विचारों के साथ तालमेल बनाए रखना आवश्यक होता है। तालमेल बनाए रखने के लिए जिस जानकारी की आवश्यकता है उसकी आपूर्ति का सशक्त माध्यम है अनुवाद। अनुवाद पठन पाठन को समृद्ध करने की तकनीक है। लेखन के विविध क्षेत्रों में अनुवाद ही हमें देश विदेश के लेखकों, कहानीकारों एवं कवियों से जोड़ता है। यह हमारी भाव संपदा को समृद्ध कर के हमें भेदभाव से ऊपर उठाता है। भेदभाव से रहित होकर ही व्यक्ति संवेदनशील बनता है।

ईरान पर आक्रमण करके सिकन्दर ने ईरानी वैदिक साहित्य जिन्द अवेस्ता के सुवर्णमंडित अठारह खण्ड प्राप्त किए थे और इन्हें यूनान ले गया था। यूनान अपने ज्ञान विज्ञान की समृद्धि के लिए ईरान का ऋणी है। इस बात को यूनान और यूरोपियनों ने अच्छी तरह छिपाया। रोम ने जब यूनान को पराजित किया तब ईरान से प्राप्त यह सारा जिन्द अवेस्ताई जिन्द अवेस्ता का अनुवाद कराया और यह अनुवाद सैंकड़ों अनुवादकों द्वारा कई वर्षों में किया गया। रोम में भी अनुवाद हुए। दो भाषाओं के बीच इस प्रकार अनुवाद का प्रचलन आवश्यकता के दबाव से संभव हुआ। संस्कृत में शब्दों की आवृत्ति का प्रचलन था। आवृत्ति अन्तः भाषायी हे। संस्कृत में टीका ग्रंथ लिखे गये। पतंजलि, सायण इत्यादि ने टीका ग्रंथों के माध्यम से वेदों तथा ब्राह्मण ग्रंथों के शब्दों की व्याख्या की और इस प्रकार व्याकरण ग्रंथों का प्रणयन हुआ। चरक संहिता सब से प्राचीन वैद्यक ग्रंथ है। इसमें सांख्य दर्शन का पूरा परिचय दिया गया है। विश्व का प्राचीनतम दर्शन कपिल का सांख्य दर्शन है। सांख्य दर्शन के बाद न्याय वैशेषिक दर्शन पर पुस्तकें लिखी गयीं। सिकन्दर के समय अरस्तू भारत की सीमा पर कुछ दिन ठहरे थे। भारत चिन्तन की यह दार्शनिक परंपरा उनके साथ यूरोप पहुंची अरबों ने जब फारस पर विजय प्राप्त कर ली तब उन्होंने भारतीय आर्यों की वैचारिक सामग्री का अनुवाद अरबी में किया। अरब के व्यापारियों ने भी वैचारिक आदान-प्रदान में भूमिका निभाई। अरब और यूरोप की भाषा में आदान-प्रदान का माध्यम अनुवाद था। इसके पहले बौद्ध धर्म ढाई हजार वर्ष पूर्व सिंहल चीन जापान आदि देशों में पहुंच गया था। इन देशों ने अपनी भाषाओं में इनके ग्रंथां के अनुवाद कराए। अशोक के समय बौद्ध धर्म की प्रभूत उन्नति हुई। पालि और प्राकृत की बौद्ध धर्म की पुस्तकों का अनुवाद पालि में, अरबी फारसी भाषाओं में किया गया। जिससे प्रभावित होकर बहुत सारे देश बौद्ध धर्म के अनुयायी हुए। बौद्ध धर्म के बाद बाइबिल की रचनाएं हुईं। बाइबिल के अनुवाद विश्व की समस्त भाषाओं में कराए गए। संसार में ईसाई धर्म को मानने वालों की संख्या सबसे अधिक है। उसके बाद बौद्ध धर्म के अनुयायी दूसरे नंबर पर हैं। महाभारत और रामायण जैसे महाकाव्यों की रचना भारत में क्रमशः व्यास और बाल्मीकि ने की। इन दोनों ग्रंथों के अनुवाद या इनसे प्रभावित काव्य ग्रंथ भारत की अन्य भाषाओं में निर्मित हुए। इसके बाद काव्य शास्त्रों की उत्पत्ति हुई। रस सिद्धांत, ध्वनि सिद्धांत, वक्रोक्ति सिद्धांत, अलंकार शास्त्र इत्यादि ग्रंथों के अनुवाद यूरोपीय भाषाओं में हुए। विश्व में और कहीं काव्य शास्त्रों पर इतना अधिक चिन्तन नहीं हुआ। गम्भीर साहित्य के अतिरिक्त मनोरंजक लोक कथाओं का सृजन भी भारत में प्रारम्भ हुआ। पंचतंत्र की कथाओं का अनुवाद फारस में सबसे पहले हुआ। फारस में फारसी और उसके बाद अरबी दोनों भाषाओं में हुआ। अनुवाद के माध्यम से यूरोपीय भाषाओं को भी पंचतंत्र की कहानियां मिली। काव्य और कहानी के अनुवाद में मूल पाठ को पहले संवदेना का विषय बनाकर हृदय में उतारा जाताहै। आत्मसात करने के बाद ही अनुवादक अनुसृजन कर सकता है। सृजन और अनुसृजन दोनों समान संवदेनशीलता की अपेक्षा करते हैं। कालिदास के नाटकों को भारत और विश्व के प्रत्येक भाषा भाषी ने अनुवाद

के माध्यमसे अपनाया। यह अनुवाद की महिमा है कि संसार यह जानता है कि बाल्मीकि रामायण से उत्तररामचरित में राम और सीता के चरित्र में क्या अन्तर आ गया है।

'सरस्वती' पत्रिका में कार्डिनल न्यूमन के 'लिटरेचर' का अनुवाद आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 1904 में प्रकाशित कराया। नागरी प्रचारिणी पत्रिका में 1905 में प्रकाशित जोसेफ एडिसन के प्लेजर्स ऑफ इमेजिनेशन का अनुवाद आचार्य शुक्ल ने 'कल्पना का आनन्द' नाम से किया। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 1903 में सरस्वती के सम्पादक का कार्यभार सम्भालते ही हिन्दी लेखकों को अनुवाद के लिए प्रोत्साहित करना प्रारम्भ कर दिया था। इसके पहले मैक्समूलर ने इस दिशा में काफी काम किया। एशियाटिक सोसाइटी द्वारा भी अनुवाद को प्रश्रय मिला था।

1.2 अनुवाद क्या है? अनुवाद की व्युत्पत्ति, उद्‌गम, स्रोत भाषा, लक्ष्य भाषा

एक भाषा की विषयवस्तु में निहित भावों एवं विचारों की रक्षा करते हुए उसे दूसरी भाषा में परिवर्तित करना अनुवाद कहलाता है। संरक्षण की इस प्रक्रिया द्वारा ही आज हम शेक्सपियर के नाटकों का रसास्वादन कर सकते हैं। विश्व की प्रायः समस्त भाषाओं में इसके अनुवाद हुए हैं। अनुवाद का शास्त्रीय अर्थ है भाषान्तरण। अनु के अनेक अर्थों में एक अर्थ है अनुगमन। वाद का अर्थ पाठ होता है। किसी पाठ का अनुगमन अर्थात पुनः कथन दूसरी भाषा में जब होता है तब वह अनुवाद की शक्ल लेता है।

अनुवाद शब्द 'वद्' धातु में 'अनु' उपसर्ग और 'धन् प्रत्यय के योग से बना है (अनु + वद् + (धन प्रत्यय) = अनुवाद) वद् का अर्थ बोलना या कहना।

'अनु' उपसर्ग-पीछे, बाद में, अनुवर्तिता आदि अर्थों में प्रत्युक्त होता है। इस तरह अनुवाद का शाब्दिक अर्थ हुआ किसी के कहने के बाद कहना। या, किसी कथन के पीछे (अनुवर्ती) अथवा बाद का कथन। पुनः कथन या पुनरुक्ति।

प्राचीन काल में शिक्षा की मौखिक परम्परा थी। गुरु जो कहते थे, शिष्य उसे दोहराते थे इस दुहराने को भी 'अनुवाद' अथवा 'अनुवचन' कहा जाता था। 'अनुवाद' भी मूलतः यही था। बाद में 'अनुवाद' वेद के उस प्रभाग (सेक्शन) को कहा जाने लगा जिसे एक बार गुरु से सुन कर दुहराया या पढ़ा जा सके।

ऋग्वेद से लेकर ब्राह्मणग्रन्थों, उपनिषदों और व्याकरण ग्रंथों में 'अनु' उपसर्ग तथा 'वद् पदों का अलग-अलग प्रयोग मिलता है। जिनका अर्थ 'गुरु की बात का शिष्य द्वारा दुहराया जाना;' पश्चातकथन, दुहराना, पुनः कथन, ज्ञात को कहना, समर्थन के लिये प्रयुक्त कथन, विधि या विहित का पुनः कथन, आवृत्ति सार्थक आवृत्ति आदि है।

पाणिनी ने 'अष्टाध्यायी' में (अनुर्यत्समया (2.1.15) के अनुसार) 'अनु' शब्द का प्रयोग पीछे-पीछे, किनारे-किनारे, साथ-साथ, बाद में अर्थात् समीपवाची अर्थ में किया है जैसे

अनुरथम = रथ के पीछे-पीछे

अनुगंगम् = गंगा के किनारे

अनुरुपम = अनुरुप (समरूप)

अनुज्येठम् = ज्येष्ठ के बाद में (क्रमानुसार)

इस प्रकार अनुवाद के प्रसंग में अनु का अर्थ है, किसी कथन से मिलता हुआ या समरूपी कथन, पूर्वकथन के अनुसार अथवा पश्चाद्वचन। सार्थक अभ्यास को अनवुाद माना गया है।

हमारे यहां लिपि का आविष्कार बाद में हुआ ऋग्वेद का कथन ऋषियों द्वारा पहले हुआ। स्मृति परंपरा से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को यह कथन हस्तांतरित किया जाता था। पर यह स्मृति आधारित परंपरा मात्र दोहराई जाती है। उसमें किसी पुनर्रचना या अनुवाद की गुंजाइश नहीं थी। दोहराने की प्रक्रिया ने ऋग्वेद के श्लोकों को विकृत नहीं होने दिया और संस्कृत साहित्य का यह अमूल्य ग्रंथ यथावत शुद्ध बना रहा। शास्त्रीय संस्कृत के अतिरिक्त लौकिक संस्कृत की परंपरा भी चल रही थी। यह लौकिक संस्कृत ईरान, ईराक, यूरोप आदि कई हिस्सों में बोली जाती थी। लैटिन अरबी

फारसी तुर्की आदि कई भाषाओं का इस लौकिक संस्कृत में मिश्रण हुआ। बदले में लौकिक संस्कृत ने उन सब यूरोपीय और ईरानी भाषाओं को प्रभावित किया। उनकी भाषाओं के कई शब्द संस्कृत मूल के भाषाशास्त्रियों ने ढूंढे हैं। यह मिश्रण की प्रक्रिया बहुदेशिक और बहुभाषिक रही है। इसके अतिरिक्त अनुवाद की प्रक्रिया भी यूनान रोम में शुरू हो गई थी। सिकन्दर जिस जिन्द अवेस्ता को ईरान पर आक्रमण कर के ले गया था उसका अनुवाद उसने यूनानी और रोमन भाषा में कराया था। 'जिन्द अवेस्ता' के श्लोक लगभग वे ही हैं जो अथर्ववेद में मिलते हैं। क्रमशः यूनानी लोग संस्कृत साहित्य से अनुवाद द्वारा ही परिचित हुए। ऋग्वेद का अनुवाद भी यूरोप की सभी भाषाओं में हुआ। भारत को सभ्य बनाने का दावा करने वाले अंग्रेजों ने जब इस अनुवाद को पढ़ा तब उनकी आंखें खुलीं। इस परिप्रेक्ष्य में हम देखें तो अनुवाद का अर्थ होता है एक भाषा में निहित भावों एवं विचारों को दूसरी भाषा में बदल कर उसे संप्रेषणीय बनाना। अनुवाद को न तो हम शुद्ध विज्ञान के अंतर्गत ले सकते हैं न शुद्ध कला के मूल भाषा के यथार्थ सौन्दर्य को हम साधारणीकरण की प्रक्रिया द्वारा ही पकड़ सकते हैं। साधारणीकरण वस्तु या व्यक्ति के भावों को पकड़ना और आत्मसात् करना है। जब हम रचना के भाव सौन्दर्य को पकड़ कर उसका अनुभव करते हैं तब उसका आस्वादन होता है और यह आत्मसात कर ली जाती है। जब रचना या 'वाद' को आत्मसात् कर लेते हैं तब उसका अनुगमन दूसरी भाषा में होता है। दूसरी भाषा में उसका उल्लेख करना अनुवाद है। संस्कृत में गुणवाद और गुणानुवाद की परंपरा एक भाषायी ही थी जैसे विशेष्य विशेषण के आधार पर पुरंदर या वृत्रहा। इन दोनों शब्दों का अर्थ इन्द्र है। पुरों का दलन करने वाला इंद्र को कहते हैं। वृत्रासुर का हनन करने वाला भी इन्द्र।

1.2.1 प्राचीन काल में अनुवाद का उद्‌गम

संस्कृत साहित्य में अन्तःभाषिक अनुवाद भाष्यों के द्वारा हुए। पर बख्त्यार खिलजी ने जब नालंदा विश्वविद्यालय पर आक्रमण किया तब वहां के बौद्ध विद्वान अपने बौद्ध साहित्य के ग्रंथों को लेकर रातों रात भूटान तिब्बत से लेकर चीन भाग गये थे। चीन के बौद्ध विद्वानों ने बौद्ध साहित्य का अनुवाद चीनी भाषा में टीम बना कर किया। इस टीम का अध्ययन करने से पता चलता है कि कितनी गहरी सूझबूझ और गंभीर दायित्व की भावना के साथ चीनी विद्वान अनुवाद कार्य में जुटे थे। अनुवाद के बिन्दु के प्रारंभ में ही इतना गंभीर प्रयास महत्त्वपूर्ण है। अनुवाद टीम के द्वारा होता था। इस टीम में नौ विशेषज्ञ होते थे। उनका निम्नांकित क्रम था :

1. ई चु (प्रधान अनुवादक) यह संस्कृत में लिखे अथवा प्राकृत पालि में लिखे ग्रंथों की भाषा की व्याख्या करता था।
2. चइ ई (अर्थपरीक्षक) प्रधान अनुवाद के सहित निहित अर्थ पर विचार विमर्श करता था।
3. चइ वन् (पाठ परीक्षक) प्रधान अनुवादक के पाठ को ध्यानपूर्वक सुनता और उसकी शुद्धता का ध्यान रखता था।
4. शु त्सु संस्कृत का विद्वान होता था और पाठ को ध्यानपूर्वक सुनता और संस्कृत की लिपि का परिवर्तन चीनी भाषा में करता था।
5. पि शीइ लिप्यंतरित शब्दों का अनुवाद चीनी भाषा में करता था।
6. चो वन (पाठ रचयिता) चीनी शब्दों को वाक्यों में व्यवस्थित करता था एवं उपयुक्त वाक्यों की रचना करता था।
7. त्सान ई पाठों की तुलना और अनुवाद की शुद्धता सुनिश्चित करता था।
8. खान तिठ (संवीक्षक) व्यर्थ फालतू अभिव्यक्तियों को निकाल देता और शैली को अर्थगर्भित बनाता था।
9. जुन वन (पुनरीक्षक) टीम के सारे निर्णयों को अन्तिम रूप देता था।

उपर्युक्त विवरण यह याद दिलाता है कि चीन ने बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया था। इसलिए अनुवाद के उद्‌गर्भ काल में ही उसने एक धार्मिक उत्साह के साथ अनुवाद कैसे संतोषप्रद हो इसकी प्रक्रिया तय की। प्रारंभ में ही प्रविधि को वैज्ञानिकता दे दी गई।

अँग्रेजी में अनुवाद के लिए ट्रांसलेशन शब्द का व्यवहार होता है। ट्रांस का अर्थ अंग्रेजी में आरपार है। यह शब्द लैटिन भाषा से आया है। किसी रचना का दूसरी भाषा में प्रत्यारोपण या भाषान्तरण द्वारा उसे प्रेषणीय बनाना अनुवादक का कार्य है। अनुवादक को ध्यान रखना पड़ता है कि किसी भाषा पर कोई दबाव न पड़े। इस प्रकार अनुवाद एक कलात्मक प्रकार्य है जिसमें रूप और वस्तु का दूसरी भाषा में वैज्ञानिक क्षमता द्वारा पुनर्सृजन होता है। हमारे देश में अनुवाद एक

विषय के रूप में अब पढ़ाया जाने लगा है। पर विदेशों में कई विचारकों ने इस पर विचार प्रकट किया है। रिचार्ड ब्रिसलीन ने बतलाया कि अनुवाद से तात्पर्य है एक भाषा के भावों और विचारों का अन्य भाषा में रूपांतरण। किन्तु टी.एच. सेपोरी ने इसकी सीमाएं दिखलाई हैं। टी.एच.सेपोरी के अनुसार रूपान्तरण को कई दृष्टियों से अत्यंत कठिन माना है क्योंकि एक भाषा का शाब्दिक पर्याय और वैचारिक तालमेल अन्य भाषा के साथ सदैव समरूप और समानान्तर नहीं होता। कोष में दिए शाब्दिक पर्यायों को चुनना दुष्कर कार्य है। क्योंकि प्रत्येक शब्द की एक अपनी इयत्ता प्रत्येक भाषा में होती है और यह आवश्यक नहीं कि अन्य भाषा में भी उसका ठीक पर्याय उपलब्ध हो। अनुवादक को 'भ्रामक सादृश्य' और अनुरूपता के प्रति सतर्क रहना पड़ता है। यदि कृत्रिम शब्द व्यवहृत हुए तो अनुवाद नष्ट हो जाता है। मूल भाषा स्रोत भाषा है और लक्ष्य भाषा वह भाषा है जिसमें अनुवाद किया जा रहा है। इन दोनों की प्रविधि में अंतर हो सकता है इसलिए व्यवधान और अर्थान्तर की संभावना बनी रहती है। हर भाषा में कुछ आचंलिक शब्द होते हैं, लोकोक्ति और मुहावरे होते हैं, कथक्कड़ियां होती हैं। अनुवादक को इन बाधाओं के पार जाना पड़ता है। विभिन्न प्रकार के शब्द कोषों के रहते हुए भी अनुवादक की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि जिस विचारधारा में निर्मित हुई है वह उसी विचारधारा से प्रभावित होकर अर्थग्रहण कर सकता है। अनुवादक में अपने निज के विचारों और भावों से परे जाने की क्षमता आवश्यक है। इसी क्षमता के अनुसार वह मूल कथन का तात्पर्य और अर्थ ग्रहण कर सकता है। भाव की भंगिमा पकड़ने के लिए उसे निज के लाभ हानि से परे जाना होता है। तभी वह लेखक की मानसिकता को अनुवाद में मूर्त कर सकता है। मूल भाषा के भावों से तादात्म्य स्थापित करने के बाद ही वह अपने भावों से उसके भावों का अन्तर समझ सकता है। अनुवाद यथार्थ से थोड़ा भी विचलित होगा तो वह कृत्रिम हो जायेगा। इसके लिए स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा दोनों के संदर्भ एवं भावों में पारस्परिक संगति होना आवश्यक है। 'ट्रांसलेशन एण्ड ट्रांसलेशन' नामक अपनी पुस्तक में मि. पोस्अगेट ने जब 'ईमानदारी' क साथ 'वैचारिकता से परिचित' होने का आयाम जोड़ा तब वह वैचारिकता जिस लेखक के मस्तिष्क से उत्पन्न हुई उस लेखक के प्रति भी ईमानदारी तत्व जोड़ रहे थे। अनुवाद शैक्षिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए होता है। यह सूचनार्थ होता है। अतः इसमें लोकोपयागिता स्वतः जुड़ जाती है।

अनुवाद जिन लोगों के लिए किया जा रहा है उनका बौद्धिक स्तर क्या है वे अनुवाद से किस प्रकार लाभ उठाएंगे?

शब्द संदर्भों का विशिष्ट महत्त्व है। शब्द के प्रयोग में सार्थकता होनी चाहिए। रहीम का दोहा है 'रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून। पानी गए न ऊबरे मोती मानस चून' मोती, मानस और चून के संदर्भ में पानी शब्द का अर्थ संदर्भ अलग-अलग है। पानी के स्थान पर जल या नीर का प्रयोग नहीं किया जा सकता।

अनुवाद की प्रमाणिकता की जांच के लिए मूल्यांकन की पद्धति अपनाई जाती है। मूल्यांकन के तीन मुख्य मानक है। 1. पश्च अनुवाद, 2. फील्ड टेस्टिंग, 3. क्षमता का अवधारण, 4. मूल भाषा और ध्येय भाषा की भाषायी क्षमता का मूल्यांकन। पहला ध्येय भाषा से मूल भाषा में पुनः अनुवाद करा के देखा जाता है कि अनुवाद कहां तक सफल तथा सटीक हुआ है। दूसरा फील्ड टेस्टिंग में कई पाठकों द्वारा यह परीक्षण किया जाता है कि वे अनुवाद द्वारा मूल भाषा के कथ्य और तथ्य को किस सीमा तक हृदयंगम कर पा रहे हैं। तीसरा उक्त दोनों पद्धति द्वारा अनुवादक की क्षमता की अवधारण की जांच हो जाती है। चौथा मूल भाषा के सब से निकट शब्द का ग्रहण ही अनुवादक को करना चाहिए। इसके लिए मूल भाषा के भावों को आत्मसात कर के लक्ष्य भाषा से शब्द चयन करना पड़ता है। श्रीमती लीला रे तथा डा. जगन्ना चक्रवर्ती दोनों ने इस समस्या पर विचार किया है। दोनों का मत है कि अनुवाद विचारों एवं भावों का भाषान्तरण है इसलिए समीपस्थ शब्दों का प्रयोग ही समीचीन है। अनुवाद पुनर्रचना नहीं है यह प्रतिकृति है। पुनर्रचना आत्मनिष्ठ और वैयक्तिक होती है। अनुवाद वैयक्तिकता से परे जाता है। अनुवाद किसी भाषा में निहित विचारों को ठीक तरह से समझने के लिए होता है। इसलिए अनुवाद में आंतरिक भावबोध का होना आवश्यक है। यह तभी संभव है जब शब्द विन्यास, वाक्य विन्यास संदर्भ एवं अर्थ सही हों।

अनुवाद अन्तरभाषायी प्रेषणीयता का साधन है। इसलिए मूल भाषा जिस देश और समय की है अनुवादक को मनोवैज्ञानिक रूप से उसके निकट होना पड़ता है। तभी वह तत्युगीन परंपरा, सामाजिक आचार-विचार आर्थिक राजनीतिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक परिवेश के साथ अपने भावों को जोड़ कर उनके निकट पहुंच सकता है। इसका तात्पर्य यह है कि अनुवादक में दोनों भाषाओं के प्रति राग बोध अपेक्षित है। उक्त निकटता के अनुभव के बाद ही वह दोनों

के प्रति रागात्मकता का आस्वाद कर सकता है। यह आस्वाद रचनात्मकता की वृद्धि करता है। इसके द्वारा वह अनुवाद को पूर्णतः सम्प्रेषणीय बना सकता है।

उक्त तथ्यों के आधार पर अनुवाद की परिभाषा का निर्धारण किया जा सकता है। अनुवाद की परिभाषा कई देशी विदेशी विद्वानों ने निर्धारित की है। एम.ए. हेलिडे ने अनुवाद को संबंध मानते हुए परिभाषा दी है।

"अनुवाद एक संबंध का नाम है जो दो या दो से अधिक पाठों के बीच होता है। ये पाठ समान स्थिति में समान प्रकार्य सम्पादित करते हैं। दोनों पाठों का सन्दर्भ समान होता है और उसमें व्यंजित होने वाला सन्देश भी समान होता है।"

आर आर हार्टमन तथा स्टार्क ने अनुवाद को प्रक्रिया मानते हुए परिभाषा दी है।

"एक भाषा या भाषा भेद दूसरी भाषा या भाषा भेद में प्रतिपाद्य को स्थानांतरित करने की प्रक्रिया या उसके परिणाम को अनुवाद कहते हैं।"

रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव और कृष्ण कुमार गोस्वामी ने पुस्तक "अनुवादः सिद्धान्त और समस्याएं" में परिभाषा लिखी है।

'एक भाषा (स्रोत भाषा) की पाठ सामग्री में अन्तर्निहित तथ्य का समतुल्यता के सिद्धान्त के आधार पर दूसरी भाषा (लक्ष्य भाषा) में संगठनात्मक रूपान्तरण अथवा सर्जनात्मक पुनर्गठन को ही अनुवाद कहा जाता है।"

1.3 अनुवाद की अवधारणा

वाह्य अगत अनेक भौगोलिक इकाइयों में बंटा है इन भागोलिक इकाइयों के अनेक भाषायी रूप हैं। प्रत्येक भाषा में अनेक बोलियां हैं, अनेक मुहावरे एवं लोकोक्तियां हैं। पर्यायवाची शब्द हैं। इन भाषायी रूपों में संबद्ध क्षेत्र के व्यक्तियों के रहन-सहन के ढंग, आचार-विचार की गति संरक्षित रहती है। मनुष्य की जिज्ञासा सनातन हो भावात्मक एकता के लिए प्रत्येक क्षेत्र के इन रूपों और भावनाओं का दूसरे क्षेत्र के रूपों एवं भावनाओं के साथ तालमेल आवश्यक होता है। अनुवाद भाषिक क्षेत्रों के बीच संप्रेषण संभव बनाने वाला अनुशासन है। वस्तु का पुनर्निर्माण करता है। संस्कृत में भाषान्तरण की परंपरा नहीं थी, गुणानुवाद की परंपरा थी। इस परंपरा से अनुवाद की परंपरा क्रमशः विकसित हुई बौद्ध साहित्य में अनुवाद प्राचीन समय से है। पश्चिम में रवींद्रनाथ ठाकुर की गीतांजलि के व्यापक स्वागत पर शोध करने वालों ने यह रेखांकित किया है कि इस शताब्दी के दशकों तक उनकी लोकप्रियता का कारण पश्चिम का उनके कार्य के प्रति बौद्धिक या कलात्मक प्रशंसा भाव का होना नहीं है। बल्कि पश्चिम द्वारा रचित 'प्राच्यवाद' की अधिरचना में उनके काव्य का उपयुक्त बैठना है। अनुवाद मूलतः एक प्रकार का पुनर्लेखन है और पुनर्लेखन चाहे उसका उद्देश्य कुछ भी हो एक विशेष विचारधारा एवं काव्यशास्त्र को अभिव्यक्त करता है। इतिहास लेखन, आलोचना, सम्पादन की तरह ही अनुवाद भी पुनर्लेखन है जो युग की प्रवृत्तियों के अनुसार परिचालित होता है। अनुवाद की अवधारणाओं में व्यापक परिवर्तन आया है। अब अनुवाद सिद्धांत में किसी ऐसी प्रणाली की तलाश नहीं की जाती जो अनूदित पाठ की स्रोत-पाठ के संदर्भ में मूल्यांकित करता हो बल्कि अब उस प्रक्रिया को व्याख्यायित करने की कोशिश की जाती है जिससे अनुवाद संभव होता है। इस प्रविधि में पारंपरिक भाषा केन्द्रित अनुवाद सिद्धांत के मूल्यांकन परक निर्देशात्मक प्रतिमानों के लिये स्थान नहीं है। पारंपरिक भाषा केन्द्रित अनुवाद सिद्धांत पर देरिदा के 'विखंडनवाद' ने भी प्रहार किया है। देरिदा का मानना है कि अर्थ का आधार अस्थिर होता है और बीज शब्द या 'गहन संरचना' जैसी कोई वस्तु नहीं होती। इसलिये एक ही भाषा के अंतर्गत या एक भाषा से दूसरी भाषा में शुद्ध संकेतितों का परिवहन असंभव होता है। ऐसे में अनुवाद की धारणा बदलकर रूपांतरण की बात करनी चाहिए। देरिदा एक भाषा से दूसरी भाषा में एक पाठ से दूसरे पाठ में नियंत्रित रूपातंतरण की बात करते हैं। देरिदा अनुवाद की किसी भी ऐसी परिभाषा पर प्रश्न चिह्न लगाते हैं जिसमें उसे मूल के अर्थ का संवाहक या संप्रेषक माना जाता है। देरिदा का मानना है कि अनुवाद को एक ऐसे दृष्टांत के रूप में ग्रहण किया जा सकता है जिसमें भाषा को मूल पाठ में परिवर्तन परिवर्द्धन करते हुए देखा जा सकता है।

अनुवाद भाषिक क्षेत्रों के बीच संप्रेषण बनाने वाला अनुशासन है। अनुवाद शब्द का शास्त्रीय अर्थ है-भाषान्तरण पश्चात् कथन पूर्व विधि द्वारा विशिष्ट विषय का कार्य विशेष के निमित्त पुनरूल्लेख, अर्थानुवाद आदि। अर्थानुवाद तीन प्रकार का माना गया है यथा-

विरोधो गुणवादः स्यानुवादो त्र धारिते।

भूतार्थवाद स्तद्धनार्थवाद स्त्रिधा मतः।।

विरोध में जहां विशेष्य-विशेषण का विरोध बंधता है वहां गुणवाद रहता है। गुणवाद और अवधारित स्थल में सिद्धार्थवाद (भूतार्थवाद) पड़ता है जैसे-इन्द्रोवृत्रहा। भूतार्थवाद दो प्रकार का है स्तुत्यर्थवाद और निन्दार्थवाद। अनुक्षण कथन का प्रमाणान्तर से अवगत अर्थ का शब्द द्वारा संकीर्तन भी अनुवाद है। यथा, अनुवादेचरणानाम् (पाणिनी-24-2) पाणिनी के इस सूत्र का काशिकार ने (अनवुाद शब्द का) अर्थ यों लगाया हैः

"प्रमाणान्तरावगत स्वार्थरूप शब्देन मात्रा अनुवादः" भो जी दीक्षित ने इस सूत्र का अर्थ किया है; 'सिद्धस्योपन्यासट'।

इन शास्त्रीय अर्थों से भिन्न आज का अंनुवाद 'ट्रांसलेशन' का पर्याय माना जा सकता है। जैसाकि पहले कहा गया है लैटिन भाषा में 'ट्रांस' का अर्थ है 'आर-पार'। यह शब्द अंग्रेजी में फ्रेंच भाषा के माध्यम से आया। ट्रान्सलेटर का अर्थ था एक व्यक्ति से अन्य को हस्तान्तरण अनुवाद की साहित्य सापेक्ष्य परिभाषा इस प्रकार हो सकती है किसी रचना का अन्य भाषा में प्रत्यारोपण एवं भाषान्तरण द्वारा उसे प्रेषणीय बनाना। इसे कलात्मक यथार्थ का अनुचिन्तन कहा जा सकता है जिसमें मूल भाषा का यथार्थ सौंदर्य, अनुवाद रचनात्मक क्षमता के द्वारा अन्य भाषा में रूप और वस्तु का पुनर्निर्माण करता है।

संस्कृत में भाषान्तरण की परंपरा नहीं थी गुणानुवाद की परंपरा थी। इसी परंपरा से अनुवाद की परंपरा क्रमशः विकसित हुई बौद्ध साहित्य में अनुवाद प्राचीन समय से है। वैश्विक संदर्भ में भी पिछले कुछ वर्षों में ही यह एक नए अनुशासन के रूप में विकसित हुआ है। हिंदी में अनुवाद अध्ययन की विभिन्न प्रवृत्तियाँ सातवें दशक में विकसित हुई हैं। साठ के दशक के उपरांत भारतीय विश्वविद्यालयों में अनुवाद के कुछ पाठ्यक्रमों का प्रारम्भ हुआ है। अनुवाद त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन सन् 1961 ई. में शुरू हुआ है। अनुवाद पर अनुसंधान एवं संगोष्ठियों के आयोजन ने सन् सत्तर के उपरांत हिंदी में अनुवाद अध्ययन को विकसित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। इसदिशा में उत्तर भारत में सर्वप्रथम दिल्ली विश्वविद्यालय तथा दक्षिण में केरल विश्वविद्यालय ने हिंदी में अनुवाद पाठ्यक्रम का अध्यापन कार्य प्रारम्भ किया। वर्तमान संचार क्रान्ति युग में ज्ञान के स्रोतों का प्रसार हुआ है ओर यह आवश्यक हो गया है कि विभिन्न स्रोतों से ज्ञान को समृद्ध किया जाये। इंटरनेट हमेंनए संस्कार दे रहा है। अनुवाद के माध्यम बदल रहे हैं। भाषा नये कलेवर ओढ़ रही है। वाक्य छोटे होते जा रहे हैं। रोमन का चलन बढ़ गया है। संकेतों के नये अनुवाद माध्यम बन रहे हैं। इंटरनेट ने सामाजिक राजनीतिक गोलबंदी की संभावनाओं को पैदा किया है। राष्ट्र राज्य के अप्रासंगिक होने के क्रम में कम्युनिकेशन के क्षेत्र में गहरी अनास्था पैदा हुई। लोगों का विश्वास डिगा किंतु इंटरनेट ने इस कमजोर स्थिति में प्रभावी हस्तक्षेप कर संभावनाओं को पैदा किया। नए सिरे से विचारों के आदान-प्रदान को प्रेरित किया है। अनुवाद की इसमें प्रभावी भूमिका है। भाषा व्यवहार के सभी क्षेत्रों के अनुवाद किसी न किसी रूप में विद्यमान है। अनुवाद भाषा का एक व्यापार है।

1.4 अनुवाद के प्रकार

अनुवाद के निम्नांकित प्रकार हैं :

1- साहित्यिक (1) गद्य अनुवाद (2) पद्य अनुवाद

2- वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद

3- मशीनी कम्प्यूटर अनुवाद

अंतर्राष्ट्रीय अनुवाद समिति की अध्यक्ष सुश्री लीला रे के शब्दों में "सर्वोत्तम अनुवादक वे ही हैं जो शब्द के अनुवाद में न पड़ कर मूल लेखक की रचनात्मक क्षमता से अपनी क्षमता का तादात्म्य करते हैं।" इसके लिए आवश्यक है कि वे मूल के संशोधन के प्रलोभन या अपनी क्षमता की अभिव्यक्ति के मोह में न पड़ कर बिम्ब ग्रहण, प्रतीक पद्धति और

मूल्य प्रतिपत्तियों एवं भाषिक संरचना आदि से परिचित हो लें। इन्हीं से वह अनुवाद को प्रभावी बना सकता है। आधुनिक युग के अनुवाद विशेषज्ञ नाइडा ने अनुवाद की तीन पद्धतियां बताई हैं- 1. भाषा शास्त्रीय, 2. भाषा मूलक, 3. समाजवैज्ञानिक। आजकल साहित्य का धरातल समाज वैज्ञानिक हो गया है। इस प्रकार प्रथम दो पद्धतियां प्राकृतिक धरातल पर शब्दशः पंक्तिबद्ध अनुवाद को प्रथम वरीयता देती हैं। साहित्यिक अनुवाद में दूसरा धरातल तत्त्वान्तरण का होता है। पद्य के अनुवाद में संवेदनशीलता प्रमुख होती है। यह शब्दानुवाद न होकर तत्त्वपरक अनुवाद होता है। तीसरा धरातल अर्थग्रहण के साथ अर्थान्तरण। इसमें भावार्थ ग्रहण कर के भावान्तरण किया जाता है। साहित्यिक अनुवाद करते समय भाषाशास्त्रीय और भाषामूलक परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखना चाहिए। सदियों के अन्तराल में कोई भाषा निर्मित होती है। इसलिए उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि होती है। भाषा के शब्द मूल्यपरक होते हैं। भाषा की आन्तरिक शक्ति का आधार उसका शब्द भण्डार है। इससे मूल्य परिपत्ति का वहन प्रत्येक शब्द में होता है। लीला रे ने ठीक ही सचेत किया है कि अनुवादक को मूल भाषा के संशोधन के लोभ या अपनी क्षमता की अभिव्यक्ति के मोह में न पड़ना चाहिए। केसा ग्राण्डे ने अनुवाद के चार प्रयोजन इस प्रकार निर्धारित किया हैं-

1. **व्यावहारिक अथवा परिणामवादी** :- इसके अन्तर्गत अनुवाद का सटीक होना आवश्यक है। वैज्ञानिक या तकनीकी अनुवाद इसके अन्तर्गत आते हैं। आचार्य शुक्ल का 'कास्ट' निबंध इसके अंतर्गत आता है।

2. **सौंदर्यपरक अनुवाद** :- इसमें संवेदनशीलता तथा भावप्रवणता का होना आवश्यक है। सूर्यकांत त्रिपाठी निराला द्वारा रवीन्द्रनाथ टैगोर की कविताओं का बांग्ला से हिन्दी में अुनवाद इसका आदर्श उदाहरण है।

3. **नृजातिविज्ञान सम्मत** :- जातीय एकता एवं सांस्कृतिक पूर्णता के लिए यह आवश्यक है। इस में आदिम जातियों एवं उपजातियों के सामाजिक व्यवहार विश्वास एवं जीवन शैली इत्यादि का ज्ञान संचित होता है तथा सभ्यता की प्रत्येक मंजिल से अब तक के विकास के आंकड़े सुरक्षित रहते हैं। सामाजिक एवं समाजवैज्ञानिक विषयों के अनुवाद में इस प्रणाली की उपयोगिता है।

4. **भाषाशास्त्रीय** :- इसमें शब्द और रूप के साथ भाषायी परिपक्वता आवश्यक है। इसमें मूल भाषा और लक्ष्य भाषा के भाषा वैज्ञानिक अंगों का ज्ञान आवश्यक है। कम्प्यूटर द्वारा किये गये अनुवाद इसी श्रेणी के हैं।

अनुवाद में दो भाषाएं प्रयोग में लाई जाती हैं इसलिए इसमें अन्तर अनुशासन आवश्यक तत्व है। साधारणतः अन्तर अनुशासन के लिए दोतरफा क्रियाशीलता आवश्यक होती है। चोमस्की प्रसिद्ध भाषावेत्ता है। उसने भाषिक क्षमता और भाषिक निष्पत्ति के भेद को स्पष्ट किया है और दोनों में क्रियाशीलता को महत्त्व दिया है। भाषिक क्षमता भाषा की आन्तरिक क्रियाशीलता पर निर्भर करती है और भाषिक निष्पत्ति व्याकरण सम्मत शब्द और समुचित वाक्य विन्यास के अर्थों की संगति पर निर्भर है। इसमें प्रथमतः भाषानुवाद की प्रक्रिया सजग होती है। अनुवादक पहले मूल भाषा के अर्थ और विन्यास को ग्रहण करता है। लेखक और अनुवादक में समय के अन्तराल के कारण सांस्कृतिक दूरी होती है। लेखक के समय से ये परिस्थितियां बदल जाती हैं। सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की उक्ति "जागो फिर एक बार" तत्कालीन पराधीनता के समय की कविता है। अनुवादक इसे उस समय से खींच कर अपने समय के अनुकूल बना सकता है। इस ग्राफ्टिंग में उत्कृष्ट बौद्धिक क्षमता अपेक्षिक है। चोमस्की ने अर्थान्वय के दो भेद बताए हैं। पहला अर्थ संगति क्षमता है ओर दूसरा उसकी क्रियाशीलता। अर्थ संगति की क्षमता यथार्थपरक होती है, सत्य पर आश्रित है। क्रियाशीलता अर्थ तत्व पर आश्रित है। अनुवाद वास्तव में दोनों भाषाओं के अर्थ का समायोजन करता है। इसमें अनुवादक को ग्राफ्टिंग की सुविधा नहीं है। निराला की 'जागो फिर एक बार' कविता को उसी दिक काल में अनूदित करना पड़ेगा। तब पराधीनता की वेदना और निराला की अर्न्तव्यथा का सहसंबंध जुड़ेगा। निराला के असली व्यक्तित्व की पहचान इसी यथार्थ अनुवाद से होगी। नाइडा के द्वारा मान्य अनुवाद की प्रक्रिया के स्तरों के तीन वर्गीकरण हैं मूल पाठ का प्रथम उपक्रम लेखक है। द्वितीय उपक्रम मूल का अर्थ और विन्यास है। तृतीय उपक्रम अनुवादक है जो अर्थ और विन्यास ग्रहण कर के दूसरी भाषा में बदलता है। अर्थ संदर्भ का समायोजन और उसकी संगति आवश्यक होती है। प्रसाद जी की कविता "हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती स्वयं प्रभा समुज्वला स्वतंत्रता पुकारती' के अनुवाद में अर्थ संदर्भ का थोड़ा सा भी विचलन काव्य सौन्दर्य को नष्ट कर देगा। सौन्दर्य की प्रेषणीयता और भावबोध की यथार्थता अत्यंत आवश्यक है।

1.5 व्याख्याओं के आधार और परिसीमा

शब्द भाषा के स्वरूप के प्रथम सोपान हैं। इसके बाद वाक्य की स्थिति आती है। वाक्य को ही भाषा की लघुतम इकाई माना गया है। वाक्य ही किसी अवधारणा, विचार या भाव को स्पष्ट रूप से व्यक्त करता है। अनुवाद की परिसीमा यहीं से आरंभ होती है। भाषाओं की भिन्नता का एक कारण यह भी है कि वाक्यों में शब्दों का क्रम भिन्न-भिन्न रूपों में होता है। इस क्रम के अभ्यास के कारण तनिक से उलट फेर से पूरी अवधारणा अस्पष्ट या भ्रान्तिपूर्ण हो जाती है। व्याख्यायें अवधारणायें सिद्धांतों पर आधारित होती हैं। अवधारणायें व्यक्ति मानस की उपज होती हैं और व्यक्ति विशेष ही उनके लिए ध्वनि संकेत भी निर्धारित करता है। वस्तुओं की तरह अवधारणाएं भी किसी स्थान या काल विशेष में बनती हैं और वहां की भाषा में उनके लिए प्रयुक्त शब्दों का प्रचलन हो जाता है। अनुवाद कार्य में अनुवादक का दोहरा मानसिक दबाव झेलना पड़ता है। पहले तो वह मूल भाषा के वाक्य को पढ़ कर उसमें प्रयुक्त शब्द क्रम का अनुसरण करते हुए, उस वाक्य के अर्थ को ग्रहण करता है और फिर उसे लक्ष्य भाषा की वाक्य योजना के अनुरूप शब्द क्रम के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। अनुवाद की सीमाएं दो ध्रुवों से जुड़ी हुई हैं तुल्यरूपता और अर्थ। इस संदर्भ में एक दृष्टांत उद्धृत है, कुछ वर्ष पूर्व संयुक्त राष्ट्रसंघ में एक उद्धरण को लेकर काफी तनाव हुआ क्योंकि उसमं पश्चिम यूरोप के भावी पतन को 'बहुत बड़ा अत्याचार' कहा गया था। फ्रांसीसी शब्द बूटाल अर्थात् चिन्ताजनक को अंग्रेजी का ब्रूटल समझ कर शाब्दिक अनुवाद कर दिया गया था और उनका आपसी तनाव तभी कम हुआ जब उन्हें बताया गया कि मुहावरेदार फ्रांसीसी भाषा में इस शब्द का अर्थ बहुत कुछ अंग्रेजी की सीरियस (गंभीर) शब्द से मिलता जुलता होता है।

दो ध्रुवों तुल्यरूपता और अर्थ का अर्थ है अनुवाद कार्य की प्रक्रिया तथा उत्पादन। इन्हें साधने का तरीका यही है कि अनुवादक मूल भाषा पाठ का बुद्धिगत विश्लेषण करते हुए अर्थ को संप्रेषित करे। उसका यह विश्लेषण ही अनुवाद को सफल या असफल बनाता है। इस संबंध में डॉ. इन्द्रनाथ चौधरी के विचार ध्यान देने योग्य है वस्तुतः प्रोक्ति के वाक्यों द्वारा अभिव्यक्त अर्थों के बीच एक विशिष्ट औपचारिक अर्थगत सम्बन्ध नहीं होता। हर भाषा के कुछ संदर्भ और प्रसंग होते हैं। प्रसंग स्थानिक और देश काल से जुड़ कर भाषा की धरातलीय संरचना में घर किए रहते हैं ओर दूसरी ओर संस्कृति से प्रभावित भाषा की आभ्यंतरिक संरचना में नाना ऐतिहासिक संदर्भ मौजूद रहते हैं। प्रसंग का सम्बन्ध भाषा के लाक्षणिक तथा व्यंजनात्मक रूप एवं उससे जुड़े स्थानिक देश काल से होता है और संदर्भ का सम्बन्ध भाषा में निहित गहरे सांस्कृतिक संदर्भों से होता है। इसीलिए अर्थ कभी कोशगत नहीं होता, वह प्रसंग एवं संदर्भगत होता है।"

(द्रष्टव्यः साहित्यिक अनुवाद के संदर्भ में अनुवाद अध्ययन का स्वरूप, (लेख) अनुवाद बोध, सं. डॉ. गार्गी गुप्ता, 190, पृ 95)

1.6 अनुवाद का उद्देश्य

सामाजिक प्राणी होने के कारण मनुष्य में सदैव दूरे प्राणियों, दूसरे देशों, दूसरी संस्कृतियें के प्रति जिज्ञासा रही है। उसके अन्दर प्रगति करके आगे बढ़ने की आकांक्षा सदा बलवती रही है। यह जिज्ञासा एवं आकांक्षा अत्यंत सृजनात्मक होती है। यहां हम एक देश द्वारा दूसरे देशों पर आक्रमण कर के उनके साहित्य राजनीति या संस्कृति के ज्ञान प्राप्त करने या मोड़ देने में निहित विध्वंसक उद्देश्यों की चर्चा से विरत रहेंगे। सृजनात्मक उद्देश्य के अन्तर्गत अनुवाद का उद्देश्य व्यक्ति के भौतिक एवं मानसिक क्षितिज का विकास है। व्यापक स्तर पर यह विकास समाज और देश के, भाषा और संस्कृति के उत्थान से जुड़ता है। किसी देश या किसी क्षेत्र के लोगों ने किन उपायों से आर्थिक उन्नति की, कैसे कैसे आन्दोलन हुए, शिक्षा में प्रगति के लिए किस प्रकार से बहुस्तरीय प्रयास और उपाय किए गए यह सारी जानकारी हम बिना भ्रमण किए आसानी से उनकी पुस्तकों, पैम्फ्लेटों और सूचनाओं के अनुवाद के माध्यम से प्राप्त करते हैं। फ्रांस में वाल्टेयर के लेखन ने किस प्रकार आंदोलन तेज किया, जर्मनी में हिटलर ने नाजीवाद के सहारे कितने अत्याचार ढाए और रूस ने किसानों मजदूरों का राज्य कायम करने के लिए किन उपायों का अवलंबन किया, हमारे देश में इसकी जानकारी वहां की पुस्तकों के अनुवाद के माध्यम से ही हुई है। अमेरिका यूरोप आदि से सूचनाएं अंग्रेजी में प्राप्त होती हैं और अनुवाद के माध्यम से तेलगु, कन्नड़, मलयालम, तमिल प्रदेशों तथा हिन्दी भाषी प्रदेशों में इसका प्रचार प्रसार होता है। अनुवाद 'वसुधैव कुटुम्बकम' की संकल्पना की पूर्ति में सहायता देता है। अनुवाद ने हमारे समक्ष विश्व को एक गांव बना दिया है जिसमें हर व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के घर परिवार से लेकर आचार-विचार की पूरी जानकारी रखता है। अनुवाद द्वारा

भावात्मक एकता के अवसरों में वृद्धि करना सर्वोत्तम उद्देश्य है। रवीन्द्रनाथ टैगोर की 'गीतांजलि' का अनुवाद इस उद्देश्य से किया गया था कि पश्चिम को पूर्व के दर्शन और संस्कृति से परिचित कराया जाये। अनुवाद के इस उद्देश्य ने टैगोर को नोबेल प्राइज से प्रतिष्ठित करा दिया। एशिया, अफ्रीका या और स्थानों में जितने नोबेल प्राइज मिल रहे हैं वे सब अनुवाद के माध्यम से।

1.7 अनुवाद का आधार

वेदों में जिस प्रकार की संस्कृत भाषा का प्रयोग हुआ है उसे अखिल भारतीय रूप देने के लिए शास्त्रीय संस्कृत में उसका अनुवाद आवश्यक था। क्योंकि वैदिक संस्कृत में जिन शब्दों का प्रयोग हुआ था वे शब्द अब प्रचलित नहीं थे। शब्दों के अप्रचलित हो जाने से उनके अर्थ और संदर्भ भी ज्ञात नहीं हो सके। उस समय के विद्वानों के सामने समस्या यह थी कि किस आधार पर वैदिक संस्कृत को शास्त्रीय संस्कृत में अनूदित किया जाये। इस समस्या के निराकरण के बीच ही व्याकरण का जन्म हुआ। सब से पहले पाणिनि ने अपने 'अष्टाध्यायी' ग्रंथ में शब्दों के धातु रूप के आधार पर संदर्भों को समझ कर अर्थ निश्चित किया। अर्थ निश्चित करने में धातु रूप का आधार लेने का तात्पर्य था शब्द के व्युत्पत्तिमूलक अर्थ को आधार बनाया। यास्क ने अपने 'निरुक्त' में थोड़े बहुत हेरफेर के साथ इसी व्युत्पत्तिमूलक अर्थ का निर्वचन किया है। मीमांसकों ने आप्रवचन कोष वचन आदि आठ आधार माने। आप्त वचन में संत्स्कृति के तर्क निहित हैं जैसे 'सती' का सहधर्मिणी। इसका अनुवाद अंग्रेजी में मुश्किल है संधि समास आदि कारक नियम व्युत्पत्ति अर्थ से नहीं समझा जा सकता।

भर्तृहरि ने धातु रूप के द्वारा शब्दों के अर्थग्रहण की संभावना को अमान्य कर दिया। किसी विशेष संदर्भ में शब्दों को पूर्वापर क्रम से जैसे रखा जाता है उसी पूर्वापरता से शब्द का अर्थ निःसृत होता है।

वेदों में सृष्टि की उत्पत्ति के क्रम में पश्यन्ती, मध्यमा और बैखरी को लेकर नया भाषा विज्ञान बनाया। वस्तुतः दर्शन का पुट होने के कारण इसे भाषा दर्शन कहना चाहिए। भर्तृहरि ने शब्द को ब्रह्म कहा। शब्द ब्रह्म की अभिव्यक्ति ब्रह्माण्ड है। दार्शनिक जैसा दिखने वाला यह शब्द ब्रह्म विज्ञान के इस नियम के करीब है कि सृष्टि की उत्पत्ति विस्फोट द्वारा हुई। जैसे विस्फोट के कई चरण हैं वैसे ही शब्द ब्रह्म की अभिव्यक्ति तीन चरणों में होती है। अभिव्यक्ति का पहला चरण पश्यन्ती हैं पश्यन्ती में अर्न्तदृष्टि का स्फुरण हो जाता है। 'प्रतिभा' इसी अन्तर्दृष्टि का स्फुरण है। इस प्रथम चरण में शब्द और विचार में कोई भिन्नता नहीं होती। शब्द और विचार अभिन्न होते हैं। तुलसीदास के शब्दों में 'गिरा अर्थ जल बीचि सम कहियत भिन्न न भिन्न' शब्द और विचार जल और लहर से उठते हुए बिन्दुओं के समान अभिन्न होते हैं।

इस अभिन्न अवस्था में ब्रह्माण्डीय यथार्थ का अवबोधन चेतना के चमकते हुए शांत प्रवाह के रूप में होता है। महाकवि निराला ने अपने वेदांत के अनुसार अपनी कविता 'कौन तम के पार रे कह' की एक कड़ी में 'अखिल जल जल धार से कह' लिखकर इसी प्रशान्त चैतन्य प्रवाह को प्रस्तुत किया है।

दूसरा चरण 'मध्यमा' का है। इसमें भाषा पूर्व की ही आद्यस्थिति होती है जिसमें वाक्य के सभी भाषिक तत्व बीज में वृक्ष की तरह अव्यक्त रूप में उपस्थित रहते हैं। इसी से कवियों के 'बीज शब्द' ढूंढने का महत्त्व बढ़ा था। बैखरी भाषा पूर्व का वह अन्तिम चरण है जिसमें शब्द ब्रह्म भाषा का रूप ग्रहण कर लेता है। अव्यक्त बीज के भाषिक तत्व व्यक्त होकर भाषा का नाम धारण कर लेते हैं। सुमित्रानन्दन पंत ने पश्यन्ती मध्यमा और बैखरी शक्तियों का क्रमशः विकास अपनी कविता "प्रथम रश्मि का आना रंगिणी तूने कैसे पहचाना कहाँ-कहाँ से बाल विहंगिनि पाया तूने यह गाना" में इस कड़ी द्वारा प्रस्तुत किया है "व्यक्त हुई तू धर कर नाम रूप नाना"। पन्त जी ने पश्यन्ती मध्यमा और बैखरी का नाम लिए बिना उसकी विशेषताओं के द्वारा ब्रह्माण्ड के विकास का नक्शा खींचा है। भर्तृहरि ने भाषा के इन्हीं तीन चरणों के द्वारा भाषा के विकास का चित्रांकन किया है। भाषा के इस विकास को गहराई से देखें तो भाषा की आंतरिक संरचना को सार्वभौम माना गया है। इस सार्वभौम रूप में ही भाषा विशेष की सभी विशेषताएं होती है। सार्वभौम संरचना से ही अपने-अपने समय और देश से प्रभावित विशेष-विशेष भाषाओं का उद्भव होता है। यही भाषा विशेष संप्रेषण का आधार बनती है।

भर्तृहरि के तीन चरणों में एक और चरण 'परा' बाद में वैयाकरणों ने जोड़ा। यह शब्द भी ऋग्वेद से ही मान्य चला आ रहा है। परा शक्ति द्वारा मनुष्य अपने प्रत्यक्ष जीवन में असामान्य बातों का अनुभव करते हैं। किसी भावी घटना का पहले से ही आभास हो जाना या स्वप्न का सच हो जाना इत्यादि भौतिक नियमों से नहीं समझा जा सकता है। यह अतीन्द्रिय बोध या अतीन्द्रिय दृष्टि ही अन्तःप्रज्ञा कहलाती थी। आज के वैज्ञानिक युग में यह परामनोविज्ञान का विषय हो गया है। वैज्ञानिक मैक्स डैसोर ने सबसे पहले 1889 में परामनोविज्ञान शब्द का प्रयोग किया जिसे बाद में 1930 में जेबी रिने ने ग्रहण कर लिया। ग्रीक शब्द पैरा हैं जिसका अर्थ है अलग-अलग शब्द। जैसे वेदों में 'परा' शब्द का एक आयाम है उसी प्रकार -पैरा के ग्रीक अर्थ 'अलग थलग' अर्थ में एक 'अजनबीपन' है। तेन्यानेव ने पाठ की 'साहित्यिकता' की खोज करते हुए बतलाया था कि एक प्रणाली की साहित्यिक उपप्रणालियां समान स्तर पर नहीं स्थित होती बल्कि नीचे ऊपर श्रेणीबद्ध होती है। कभी कोई हाशिए की प्रणाली केन्द्र में आ जाती है और केन्द्र की प्रणाली हाशिए पर चली जाती है। प्रणालियों की स्थिति में यह हेरफेर ही किसी साहित्य के परिवर्तन और विकास के मूल में होता है। तेनान्यवे इसे डिफेमिलियराइजेशन अर्थात अजनबीपन कहते हैं। अनुवाद की प्रक्रिया भी एक प्रणाली है जिसने विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। ग्रीक शब्द पैरा को आज मान्यता प्राप्त हो गई है। किन्तु भर्तृहरि के अनुसार 'परा' कोई चरण नहीं। वे केवल तीन ही चरण की अवधारणा प्रस्तुत करते हैं। आधुनिक अनुवाद विज्ञान में भर्तृहरि की 'सार्वभौम' की अवधारणा ग्रहण की गई है। मनुष्य की भाषाओं में जो अन्तर है वह ऊपर सतह का अन्तर है इसलिए अनुवाद करने का अर्थ है ऊपर सतह से नीचे उतर कर उसकी आंतरिक समान्तर पर ध्यान केन्द्रित करना अर्थात् स्रोत भाषा की विशिष्टताओं को हटा कर मध्यमा से पश्यन्ती में उतर कर सार्वभौम भाषा की तलाश और इसके बाद लक्ष्य भाषा में सामग्री का रूपान्तरण। पश्चिम के वारेन वीवर और नाम चामस्की ने भर्तृहरि प्रणीत भाषा के इन आधारों में से बहुत कुछ को ग्रहण किया।

वारेन वीवर ने अपने 'मेमोरेन्डम' में लिखा कि सभी भाषाएँ मनुष्य ने आविष्कृत और विकसित की हैं और मनुष्य की वाक इंद्रियां एक समान हैं जो समान ध्वनि समूहों को उच्चारण करने में सक्षम हैं। मनुष्य के मस्तिष्क में समान संभावनाएं हैं इसलिए भिन्न स्थल और भिन्न समय में भाषा अवश्य ही समान रूप से ही प्रकट हुई होगी। एक ही नींव पर खड़ी कई मीनारों पर एक एक मीनार के हिसाब से कई व्यक्ति खड़े हैं। सामाजिक भावना प्रबल होने के कारण वे परस्पर एक दूसरे से बात करना चाहते हैं। वे जोर जोर से चिल्लाएं तो भी बात ठीक से समझ में नहीं आएगी। सम्प्रेषण बाधित होगा। लेकिन नींव में एक सामूहिक तहखाना है। जब अलग-अलग खड़े व्यक्ति नीचे उतर कर उस तहखाने में पहुंचते हैं तब उन ध्वनि समूहों का अनुसरण करते हुए वे आपस में अच्छी तरह से अपने भावों एवं विचारों का सम्प्रेषण कर सकते हैं। अतः चीनी से अरबी में अनुवाद करने का सही तरीका मीनार से मीनार तक चिल्लाना नहीं बल्कि नीचे उतर कर सार्वभौम भाषा की तलाश करना है क्योंकि मानव सम्प्रेषण का यही सामूहिक आधार है। स्रोत भाषा में छिपा यही सामूहिक आधार वास्तविक आधार है जो अज्ञात है इसलिए उसकी खोज आवश्यक है। सार्वभौम भाषा की तलाश कर लेने के बाद लक्ष्य भाषा में उसके अनुवाद का रास्ता चुना जाय।

नाम चामस्की ने वारेन वीवर की सार्वभौम भाषा से मिलती जुलती अपनी अवधारणा पेश की है। उन्होंने तल संरचना और गहन संरचना (डीप स्ट्रक्चर्स) की अवधारणा रखी। तल संरचनाएं भाषा की ऊपरी सतह हैं। ये ऊपरी सतह आकस्मिक है। इस सतह से नीचे उतर कर गहन संरचनाओं में भाषा निर्माण का केन्द्र स्थित होता है। चामस्की ने इन गहन संरचनाओं को मानव मन का नैसर्गिक अवयव माना है। इसी के अनुसार उन्होंने स्थापना दी कि मानव की भाषाओं का एक सामान्य (कामन) स्थापत्य होता है। उन्होंने "प्रजनक व्याकरण" (जेनरेटिव ग्रामर) की अवधारणा सृजित की जिसके अनुसार संसार का प्रत्येक मनुष्य बोलना सीखने के साथ ही एक सामान्य व्याकरण का आभ्यांतरण कर लेता है जिस व्याकरण से संसार के और सब लोगों की भाषाओं का प्रजनन होता है। प्रजनक व्याकरण एक प्रणाती है जिसके नियम वाक्यों की संरचना के विवरण को स्पष्ट और परिभाषित तरीके से निर्धारित करते हैं।

प्रजनन व्याकरण के तीन अव्यव इस प्रकार हैं- 1. वाक्यगत, 2. अर्थगत, 3. स्वनप्रक्रियात्मक (फोनोलाजिकल) इनमें से केवल वाक्यगत व्याकरण की भूमिका वाक्य की संरचना के सृजन में होती है। शेष दो अर्थगत एवं स्वनप्रक्रियात्मक अंगों की भूमिका वाक्य की व्याख्या में होती है। ये दोनों व्याख्यात्मक अंग हैं। प्रजनक व्याकरण के वाक्यगत अवयव के दो घटक हैं जिन्हें वे आधार (बेस) और रचनान्तरणपरक (ट्रांसफार्मेशन) कहते हैं। ये आधार घटक सार्वभौम हैं। इन्हें यूनिवर्सल की श्रेणी में रखकर पुनर्लेखन को आधार दिया गया है।

इस आधार घटक का निर्माण पुनर्लेखीय निगमों के अनुक्रम और शब्दकोष जैसे दो उपघटकों द्वारा होता है। अंग्रेजी में चामस्की ने इन पुनर्लेखी नियमों के लिए 'रिराइटिंग रूल्स' लिखा है। यह शब्दों के क्रम को सही स्थान पर रखने की एक संरचना है। वस्तुतः यह 'बोध का नियम है जिसका संबंध स्वयं से लेकर विषय वस्तु तक है। जैसे ये तीन शब्द है 'वह आता है' और सिर्फ यही तीन शब्द किसी भाषा में हों तो बोलने वाला यह जानता है कि इन तीन शब्दों के कुछ समुच्चय इस भाषा के हैं जैसे 'वह आता है' अथवा 'आता है वह' तथा 'वह है आता' या 'है वह आता' इस भाषा के नहीं हैं। आधार का पहला अंग यही क्रम का बोध है। आधार घटक का दूसरा उपघटक 'शब्दकोषीय' है। इस शब्दकोषीय उपघटक के द्वारा कोषगत विषयों के वाक्यगत अर्थगत और स्वनक्रियात्मक गुण निर्धारित होते हैं। इन दोनों उपघटकों के सहारे आधार घटक गहन संरचना का प्रजनन करता है। इस प्रजनन के फलस्वरूप इनका 'रचनान्तरण' 'तल संरचना' मे संभव होता है। तल संरचना तक पहुंचने की इस प्रक्रिया को किसी एक भाषा से संबद्ध न कर के सार्वभौम मानना ही चामस्की की विशेषता है।

इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि चामस्की ने दोहरी गतिविधियों वाले मानदण्ड निर्धारित किए हैं। आधार से गहन संरचना और गहन से 'तल संरचना' के ये प्रक्रियात्मक सोपान अनुवाद की प्रविधि निर्मित करने में महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुए हैं। अमेरिका में बाइबिल का अनुवाद करने वाले अनुवाद विशेषज्ञ नाइडा ने चामस्की के इन आधारों द्वारा एक तकनीक विकसित की जो अनुवाद करने के लिए उपयोगी साबित हुई। एक ओर यह तकनीक स्रोत भाषा को विसंकेतित अर्थात् डिकोड करता है, दूसरी ओर लक्ष्य भाषा में इसकी समतुल्य अभिव्यक्ति के उचित प्रज़नन की प्रक्रिया को सही ढंग से समझने के लिए अनुवादक को दृष्टि प्रदान करता है। नाइडा का मौलिक योगदान यह है कि उसने चामस्की के पहले सतह को छोड़ दिया है। उसने अनुवाद सिद्धान्त के आधार के लिए उसके अन्तिम दो सतह लिए हैं। नाइडा ने अपनी अनुवाद प्रविधि में पहला पद स्रोत भाषा के पाठ को अर्थ के सब से करीब 'बीज पाठ' में संरचनात्मक रूप से रूपांतरण माना। दूसरा चरण स्रोत भाषा के अर्थ को लक्ष्य भाषा के सामान्य संरचनात्मक स्तर पर स्थानांतरित करना है। तीसरे पद पर मूल भाषा के अर्थगत तथा शैलीगत समतुल्य अभिव्यक्ति को लक्ष्य भाषा में प्रजनित करना है। इस प्रकार नाइडा मूल पाठ के 'तल संरचना' से 'गहन संरचना' में पहुंचते हैं और इसके बाद मूल पाठ की 'गहन संरचना' को लक्ष्य भाषा की 'गहन संरचना' में स्थानांतरित करते हैं। इस प्रकार 'गहन संरचना' से लक्ष्य भाषा की 'तल संरचना' में आकर उसका प्रजनन करते हैं।

साहित्य मीमांसकों द्वारा व्याख्यायित साधारणीकरण सिद्धांत के एक अवयव सह अनुभूति को नाइडा ने अनुवाद की प्रविधि में ले लिया है। नाइडा ने कहा कि 'भाव की समानुभूति' (इम्पैथी ऑफ स्पिरिट) के द्वारा स्रोत भाषा की 'गहन संरचना' को लक्ष्य भाषा की 'गहन संरचना' में स्थानान्तरण 'भाव की समानुभूति' द्वारा संपन्न हो जाता है। नाइडा एक लेबल कहते हैं। कोई शब्द यदि किसी जाति की भाषा में नहीं है तो उसके स्थान पर उस जाति में पाए जाने वाले शब्द को स्थानांतरित किया जा सकता है। एस्किमों जाति में 'लैम्ब' शब्द नही है तो एस्किमों के 'सील' शब्द का प्रयोग उसके स्थान पर हो सकता है। लिख सकते हैं सील अबोधता का प्रतीक है।

1.7.1 अनुवाद का आधार : मूल भाषा

नाइडा ने गत्यात्मक सक्रिय समतुल्यता (डायनिमिक इक्वलेन्स) को श्रेष्ठता प्रदान की। फार्मल इक्वलेन्स ऊपरी औपचारिक समतुल्यता इससे नीची श्रेणी में है। गत्यात्मक समतुल्यता में भाव पर बलाघात दिया जाता है। 1910 में श्री आर रघुनानथ राव ने 'अनुवाद की कला' नामक पुस्तक में इसी भाव आधारित समुल्यता को श्रेष्ठ माना। श्री अरविन्द ने भी अनुवाद को शब्द का पुनरूत्पादन न मान कर 'पुनर्रचना' माना जिसमें समतुल्य बिम्ब और भावात्मक सौन्दर्य की पुनः रचना की जाती है। पश्चिम में बीसवीं शताब्दी के छठे दशक तक प्रजनक व्याकरण समतुल्यता और सर्वांगी (सिस्टमेटिक) व्याकरण के अनुसार ही अनुवाद के सिद्धांत निर्मित हुए।

जर्मनी के विश्वविद्यालयों ने अनुवाद को विज्ञान की श्रेणी में रखा। यहां के प्रोफेसर आटो कोद इत्यादि विशेषज्ञों ने समतुल्यता के इर्द गिर्द ही शब्द के समतुल्य अथवा पूरे पाठ को एक इकाई के रूप में देखकर संरचनागत समतुल्य की अवधारणा प्रस्तुत की। जर्मनी के काव्यशास्त्री अन्तः प्रज्ञा पर जोर दे रहे थे। इस इंटयूशन के मानक का प्रभाव अनुवाद की अवधारणा पर पड़ा। जर्मनी के सारलैण्ड विश्वविद्यालय, सारब्रूकेन के प्रसिद्ध प्रोफेसर वोलफ्रेम विल्स ने अनुवाद को

विज्ञान तो माना पर इसमें भाषा पाठ की आत्मा तक पहुंचने के लिए अन्तःप्रज्ञा का मेल कर दिया। इसमें भाष्य विज्ञान और प्रजनक अवयवों का मेल है जो दो भाषाओं का परस्पर अनुवाद करते समय गहन से ऊपर आ कर तल संरचना में पैठ कर अनुवाद के विज्ञान को विकसित करने में विश्वास करता है। विल्स ने सार्वभौम के सिद्धांत को भी मान्य करते हुए कहा है कि भाषान्तर दो मूलभूत कारकों के कारण संभव होता है। मानव अनुभव के सामूहिक अभ्यन्तर (कामन कोर) के कारण है। 2. भाषाओं के बीच मूलभूत समानता का कारण भाषाओं के वाक्यगत संरचना तथा उसके बीज शब्द में अन्तर्निहित होता है। बाद में बेलजियम इजराइल नीदरलैण्ड आदि देशों में मूल भाषा पर केन्द्रित करने के स्थान पर लक्ष्य भाषा में मूल पाठ के अभिग्रहण तथा उसके संदर्भ पर केन्द्रित कर दिया। साहित्य के क्षेत्र में इसकी महत्ता खास तौर से प्रदर्शित की गई। यह परिचालन सिद्धांत है।

1.8 परिचालन

साहित्य के विद्यार्थी परिचालन से अच्छी तरह परिचित है। इतिहासज्ञों और आलोचकों ने इसी परिचालन के सहारे इतिहास और साहित्य की विवेचना की है। अकबर को कोई नीतिकुशल कहता है और कुछ लोग विशाल हृदय उदारवादी। सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की कविता 'राम की शक्ति पूजा' की पंक्ति 'शक्ति राम में हुई अन्तर्हित' की व्याख्या करते हुए डा. रामविलास शर्मा ने भौतिक प्रणाली अपनाते हुए बतलाया कि 'शक्ति बाहर से भीतर जा रही है इसलिए यह ऊर्जा है, जड़ ऊर्जा है चेतना नहीं है। परिचालन का विचारधारात्मक आधार बहुत पुराना है। साहित्य में इस प्रकार का परिचालन कवि के समकालीन युग के स्वभाव और आलोचक के अपने युग के स्वभाव को देखते हुए किया जाता रहा है। पर अनुवाद के क्षेत्र में इस परिचालन पर ध्यान केन्द्रित किया थियो हर्मस ने। 1985 में उनकी पुस्तक "साहित्य का परिचालनः साहित्यिक अनुवाद के क्षेत्र में एक अध्ययन"। सदियों पूर्व से अनुवाद के क्षेत्र में परिचालन (मैनीपुलेशन) होता रहा है किन्तु विश्वविद्यालयों में अलग विषय होने के बाद इस ओर ध्यान दिया गया और अधिकांश पुस्तकें लिखी गईं जैसा कि ऊपर के उदाहरणों से स्पष्ट है परिचालन किसी उद्देश्य को लेकर किया जाता है। डा. रामविलास शर्मा ने निराला के वेदान्त में भौतिकता का पुट देने के उद्देश्य से वैसा परिचालन किया और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने क्रूरता के आरोप से मुक्त करने के लिए अकबर के विषय में अपनी वह राय दी या औरंगजेब के विषय में लिखा कि वह स्वयं हिंदी कविता करता था और दरबार में हिन्दी कवियों को बुलाता था। थियो हर्मस ने 'उद्देश्य' को नोटिस में लिया और आन्द्रे लीफेबेरे ने इसे आगे विकसित करते हुए कहा कि अनुवाद एक प्रकार से 'पुनः लेखन' है और यह विशेष-विशेष उद्देश्य से एक विशेष विचारधारा और काव्यशास्त्र को व्यक्त करता है। पुनर्लेखन के विचारधारात्मक आधार को स्पष्ट करने पर पुनर्लेखन की प्रकृति भी स्पष्ट हो जाती है। लीफेवर ने कहा कि अनुवाद में स्रोत पाठ का परावर्तन नहीं होता अर्थात मूल पाठ का प्रतिबिम्बन (रिफ्लेक्शन) नहीं होता बल्कि अपवर्तन (रिफ्रैक्शन) होता है। अपवर्तन में परसेप्सन पर अवबोधन पर बल दिया जाता है।

1.9 अनुवाद के आयाम

मनुष्य की आवश्यकता के अनुसार जीवन के आयाम बढ़े हैं इसी के अनुसार अनुवाद के आयाम बढ़ गये हैं। इन आयामों को निम्नांकित उप आयामों में विभाजित किया जा सकता है।

1.9.1 अनुवाद और धार्मिक साहित्य

अनुवाद के विभिन्न अनुवाद सब से पहले सदियों पूर्व धार्मिक साहित्य के अनुवाद में व्यक्त हुए। वेदों के भाष्य अन्तःभाषिक अनुवाद हैं। बौद्ध साहित्य के चीनी, तिब्बती, सिंहली, भूटानी, जापानी भाषाओं में अन्तर्भाषिक अनुवाद किए गए। बाइबिल के अनुवाद ईसाई धर्म के प्रचारकों ने पहले योरपीय भाषाओं में किए। तत्पश्चात् सभी अफ्रीकी, एशियायी भाषाओं में अनुवाद हुए। इन्हें धार्मिक साहित्य के अन्तर्गत इसलिए लिया गया क्योंकि प्राचीन काल में इनके अनुवाद धर्मप्रचार की दृष्टि से किए गए। ज्ञान प्रसार की दृष्टि से अठारहवीं शताब्दी में अनुवाद ने अनेक आयामों को स्पर्श किया।

1.9.2 अनुवाद और वैचारिक ज्ञानात्मक साहित्य

सोलहवीं शताब्दी में योरप के ज्ञानोदय ने धर्म के पीछे ढकेल कर विज्ञान के आयामों को महत्त्व दिया। विज्ञान की दृष्टि से बाइबिल का अध्ययन हुआ और उसमें वर्णित सृष्टि की उत्पत्ति के सिद्धांत को खारिज कर दिया गया। तत्पश्चात् गैलीलियो, ब्रूनो, न्यूटन आदि वैज्ञानिकों की खोज ने धार्मिक चर्च के अधिकारियों तथा राज्य प्रशासकों में खलबली मचा दी। गैलीलियो ब्रूनो आदि को दिए गए दण्ड ने उनकी प्रसिद्धि में अत्यंत वृद्धि की। यही समय था जब योरप का ज्ञान प्रकाश चारों ओर फैला और उन वैज्ञानिकों के विचारों को अनुवाद के द्वारा संसार में प्रसारित किया गया। दूसरे देशों ने भी अपने अपने साहित्य में विज्ञान की खोज करना प्रारंभ किया। राजा राममोहन राय ने वेदों को दैवी करण से मुक्त कर के उसमें वैज्ञानिक आयामों की खोज की। भारतीय मानस में व्याप्त अन्धविश्वासों को तर्क और विवेक का आधार ले कर मुक्त किया। सामाजिक बुराइयों खास कर सतीप्रथा पर आघात किया। स्वामी दयानन्द ने वेदों के सहारे शूद्रों एवं स्त्रियों की शिक्षा का प्रसार किया। राममोहन राय ने वैचारिक साहित्य का अनुवाद किया। 1974 ईसवी में एशियाटिक सोसाइटी की कलकत्ता में स्थापना हुई और इसके द्वारा भारतीय साहित्य के अनुवाद अंग्रेजी में हुए। इस अनुवाद के पीछे अंग्रेजों का एक औपनिवेशिक उद्देश्य यह था कि वे भारतीय मानस और भारतीय समाज को अच्छी तरह समझ कर अपना साम्राज्य चला सकें। किन्तु इस अनुवाद कार्य ने भारतीय गर्व और आत्म सम्मान की वृद्धि की। फोर्ट विलियम कालेज की स्थापना होने के बाद अंग्रेजी साहित्य तथा फ्रेंच आदि विदेशी साहित्य को हिन्दी में उपलब्ध कराने की ओर ध्यान गया। औपनिवेशिक उद्देश्य तो यह था कि अंग्रेजों की उच्चता की प्रतिष्ठा और भारतीयों के मन में हीनता बोध का सृजन किया जाये। इससे वे उपनिवेशवाद को एक आधार भी दे रहे थे। किन्तु उनका उद्देश्य सफल नहीं हुआ। फोर्ट विलियम कॉलेज द्वारा विदेशी साहित्य के अनुवादों ने भारतीय मानस में प्रतियोगिता की भावना पैदा की। बाइबिल के सामने वेद और वेदान्त जैसे आगे बढ़ गये थे उसी तरह शेक्सपियर के साथ कालिदास और भवभूति आदि को रखा गया। यह सब ज्ञानात्मक साहित्य अनुवादों के माध्यम से सुपरिचित हुए। राजा राममोहन राय की विशेषता यह थी कि उन्होंने अंग्रेजी साहित्य के सकारात्मक तत्वों को लेकर अपने मानकों का निर्माण किया। उन्होंने ईसाइयत के मूलभूत तत्वों को ले लिया। उनके द्वारा किए गए भारतीय साहित्य के अनुवादों की भारतीय मन के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। अनुवाद के आयाम के अंतर्गत ही पुनर्जागरण की रोशनी का प्रसार है। ऋग्वेद के कई भाषाओं में अनुवाद हुए जैसे एच.एच. विलसन और आर. एच. ग्रिफिथ ने अंग्रेजी में अनुवाद किया तथा फ्रीड्रिक रोजन ने लैटिन में अनुवाद किया। अथर्ववेद का हिटनी और लैनमैन ने अंग्रेजी में अनुवाद कियसा। सामवेद का जे. स्टीवेन्सन ने अंग्रेजी में अनुवाद किया। टी.एच. ग्रिफिथ ने यजुर्वेद का अंग्रेजी में अनुवाद किया। कीथ ने तैत्तरीय संहिता का अंग्रेजी में अनुवाद किया। ऋग्वेद का जर्मन में अनुवाद एच. ग्रासमान, ए. लुटविग और एच. ओल्डनवर्ग ने किया और फ्रेंच में लांग्ल्वाने अनुवाद किया। ऐतरेय ब्राह्मण का मार्टिन हाग ने अंग्रेजी में अनुवाद किया और कीथ ने शतपथ ब्राह्मण का अंग्रेजी में अनुवाद किया। जर्मन, फ्रेन्च, अंग्रेजी आदि के अतिरिक्त एशियायी भाषा चीनी, फारसी आदि में भी संस्कृत ग्रंथ अनूदित हुए। रूस में हैकल के रिडिल ऑफ यूनिवर्स ने क्रान्ति का बीजारोपण करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। लेनिन ने इसी से इस ग्रंथ की प्रशंसा की। इस ग्रंथ का अनुवाद यूरोप और रूस की भाषाओं में हुआ। हिन्दी में 'विश्वप्रपंच' नाम से इसका अनुवाद आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने किया। इसके साथ डार्विन के विकासवाद को अनूदित करते हुए लंबी भूमिका हिन्दी भाषियों को उपलब्ध कराई जिससे उनके ज्ञानात्मक आयाम का विकास हुआ।

1.9.3 अनुवाद और वैज्ञानिक तकनीकी विकास

आज के वैज्ञानिक युग में अनुवाद के आयाम रचनात्मक रूप से विकसित हुए हैं क्योंकि प्रत्येक देश दूसरे देशों में हुए सारी खोजों का उपयोग कर के उससे आगे की खोज में संलग्न होता है। सरकारी संस्थाएं एवं निजी संस्थाएं दोनों इन खोजों से फायदा उठा कर आगे का विकास तय करती हैं। चरक संहिता में औषधि विज्ञान की तकनीक पेड़ पौधे और दवाइयों के नाम और रोगों की पहचान का पुराना भारतीय तरीका सुरक्षित है। चीन, जापान आदि एशियाई देशों के साथ यूरोप के देशों में सरकारी संस्थाओं तथा औषधि निर्माता कम्पनियों ने चरक संहिता के कई अनुवाद कराए। आयुर्विज्ञान में सुश्रुत शल्य विज्ञान के आदि आचार्य कहे जाते हैं। आपरेशन के दरम्यान किन तरीकों एवं दवाइयों का प्रयोग उचित है सुश्रुत संहिता के अनुवाद द्वारा ही इसका ज्ञान विश्व को प्राप्त हुआ और इस क्षेत्र में अग्रिम विकास की संभावनाएं तलाशी गईं। संजीवनी बूटी के लिए अब तक खोज हो रही है। यह विदेशी समाचारों के अनुवाद ही हमें बताते हैं। मध्यकाल में विजयी देश विजित देशों से अपने वैज्ञानिक शोध एवं अन्य साहित्य को सौंप देने की शर्त्त पर संधि करते

थे। फिर इन ग्रंथों का अनुवाद अपनी भाषा में करवाते थे। आधुनिक काल में आवाजाही स्वतंत्र हो गई है। हर देश अपनी उपलब्धि को दूसरों के साथ साझा करने को तैयार रहता है। ज्योतिर्विज्ञान के क्षेत्र में ग्रह नक्षत्रों की गतिविधियों की गणना करने वाले प्रसिद्ध ज्योतिषविज्ञानी आर्यभट्ट अनुवाद के माध्यम से विश्वप्रसिद्ध हो गये हैं। आज भी ग्रहों की खोज एवं चाल की जानकारी के लिए भारत समेत दूसरे देशों में हुए अनुसंधानों को अनुवाद के माध्यम से प्राप्त किया जाता है। रसायन विज्ञान के विकास में वेदों में उपलब्ध सोना आदि धातुओं के प्रयोग की प्रविधि को भारत की अन्य भाषाओं में अनूदित किया गया और फिर अरब देश होता हुआ यह चीन, जापान, योरप पहुंचा। अथर्ववेद में अनेक औषधियों के नाम और प्रविधि का वर्णन है जिनका दूसरी भाषाओं में अनुवाद किया गया और कैंसर जैसे लाइलाज रोग की औषधि ढूढ़ने मे इन पर प्रयोग हुए और चल रहे हैं। चिकित्सा और गणित के क्षेत्र में भारत सब से समृद्ध था। बहुत दिनों तक यह विवाद चला कि शून्य (जीरो) और दशमलव का आविष्कार किसने किया पर सारी खोजों का परिणाम निकला कि यह भारत की देन है। अनुवाद के द्वारा अरबों ने यह दशमलव प्रणाली भारत से प्राप्त की। इसी प्रकार कागज के निर्माण तथा बारूद के निर्माण की तकनीक भी एशिया ने उनके साहित्य के अनुवाद द्वारा ही प्राप्त की।

फ्रांस, जर्मनी, यूगोस्लाविया तथा इटली जैसे ज्ञानोदय से प्रभावित देशों ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी के आयामों को विकसित करने में रुचि दिखलाई। पूंजीवादी ताकतों के विकास में इन सब की प्रमुख भूमिका थी। एक देश में किया गया आविष्कार अनुवाद द्वारा तत्काल दूसरे देश में पहुंच जाता है। प्रौद्योगिकी और वैज्ञानिक आयाम अनुवाद के आयामों को बढ़ाते जाते हैं। आज भी अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में उपलब्ध छोटी से छोटी खोज आविष्कार अनुवाद द्वारा पूरे संसार को तत्क्षण उपलब्ध होता है। प्रत्येक देश अपनी भाषा में अपने सिद्धान्त एवं उपलब्धि लिखता है। अनुवाद का एक महत्वपूर्ण आयाम यह भी है कि दूसरी भाषा के तकनीकी शब्दों के ग्रहण में अत्यंत उदारता दिखलाई गई है। अंग्रेजी में यह उदारता प्रारंभ से रही है। एलोपैथी शब्द की व्युत्पत्ति ग्रीक के 'अलोस' (अन्य) तथा पॉथोस (पीड़ा के संयोग से मानी गई है। अंग्रेजी में ग्रीक, लैटिन, फ्रेंच, अरबी, फारसी, चीनी शब्दों का ग्रहण मेडिकल कोश में कर लिया गया है। हिन्दी भाषा का निर्माण होते समय भी इन सभी भाषाओं के कई शब्द ग्रहण किये गये थे। आज भी हम अनेक शब्दों को या तो मूल रूप में ग्रहण कर लेते हैं या हिन्दी भाषा की प्रकृति के अनुसार उसका संशोधित रूप ले लेते हैं। अकादमी एकेडमी का संशोधित रूप ही है। इसी प्रकार 'नाटो' 'यू.एन.ओ.' आदि संक्षिप्त शब्दों को भी यथावत ग्रहण कर लिया गया है। जैसे सभ्यता और संस्कृति के निर्माण में आदान प्रदान की प्रक्रिया चलती रही है वैसे ही भाषा में भी यह प्रक्रिया चली आई है। अनुवाद के आयामों में इस प्रक्रिया द्वारा सहजता एवं सरलता का अनुभव हुआ है। ऊपर के दृष्टांत में संस्कृत के अक्षरों और अर्थ की ग्रीक भाषा में समानता देखी जा सकती है। आज विकसित देश और विकासशील देश की तुलनात्मक स्थिति देखें तो हम विकसित देश की सहायता के बिना किसी अनुसंधान या आविष्कार में सफल नहीं हो सकते। विकसित देश अपनी विकसित तकनीक के कारण ही विकसित है। अनुवाद के द्वारा ही हम उनकी तकनीक ग्रहण करते हैं। बहुराष्ट्रीय कम्पनियां अपने यहां तकनीक के अनुवाद के लिए भी अनुवादक रखती है।

1.9.4 अनुवाद और व्यापार

अनुवाद के आयामों में व्यापार की उन्नति सम्मिलित है। भारत का बना सिल्क रेशम मिस्र की ममी में प्राप्त हुआ था। अरब के व्यापारियों ने भारत से रेशमी वस्त्र यूरोप तक पहुंचाए थे। व्यापार करने के लिए कई देशों की भाषाओं का ज्ञान आवश्यक है। अनुवाद द्वारा इन भाषाओं की जानकारी होती है। मुगल काल में हस्तशिल्प उद्योगों की वृद्धि हुई थी। इनका निर्यात अन्य देशों में तभी संभव हुआ जब अपनी भाषा का अनुवाद उन देशों की भाषाओं में किया गया और उनकी भाषा को अपनी भाषा में अनूदित किया गया। ईस्ट इंडिया कम्पनी ने व्यापार की वृद्धि के लिए अनुवादों का आश्रय लिया। आज की बहुराष्ट्रीय कम्पनियां अपना माल बेचने के लिए संबंधित देशों की भाषाओं में अनुवाद द्वारा वार्ता आगे बढ़ाती है। उनके विज्ञापन कई भाषाओं में अनूदित होते हैं।

1.9.5 अनुवाद और विज्ञापन

भारत में कई भाषाएं प्रचलित हैं। बहुर्राष्ट्रीय कम्पनियों को हिन्दी के साथ तमिल, तेलुगू, कन्नड़ मलयालम में भी अनुवाद कराना पड़ता है। ग्राहक संख्या बढ़ाने के लिए अनुवाद के आयामों को सरल एवं विस्तृत किया गया है। सरकार अपने कार्यक्रम को सर्वसुलभ बनाने के लिए कई भाषाओं में अनूदित करा के प्रकाशित कराती है। अस्पताल क्लीनिक, शैक्षिक संस्थान, प्रबंधन प्रशिक्षण आदि अपने को लोकप्रिय बनाने के लिए विज्ञापन में अनुवाद का सहारा लेते हैं। टाटा

इंस्टीट्यूट में कैंसर का इलाज कैसे किया जा रहा है या चेन्नई में ब्रेन ट्यूमर का आपरेशन कैसे होता है इसकी जानकारी पर आधारित सूचनाओं के प्रसारण ने अनुवाद के आयामों में वृद्धि की है। शादी के विज्ञापन अनूदित हो कर छपते हैं।

1.9.6 अनुवाद और संचार माध्यम

संचार माध्यम के अंतर्गत रेडियो, टेलीविजन और समाचार पत्र आते हैं। आजकल गांव-गांव में रेडियो टेपरिकॉर्डर, लैपटॉप और समाचार पत्र पहुंच गये हैं। वीडियो प्रसारण भी विद्युत बैटरी ने संभव बना दिया। इन माध्यमों ने भौगोलिक सीमाएं तोड़ दी हैं। अनुवाद के माध्यम से पूरी-पूरी पुस्तकें, पैम्फ्लेट तथा बायोडाटा टी.वी. या लैपटाप पर उपलब्ध हो जाता है। रेडियो द्वारा भारत में प्रचलित लगभग सभी भाषाओं में समाचार प्रसारित होते हैं। इसके अलावे अंग्रेजी में भी संसार के समाचारों का प्रसारण होता है। प्रादेशिक भाषाओं में प्राप्त सामग्री को हिन्दी भाषा तथा अन्य भाषाओं में अनूदित कर के प्रसारित किया जाता है। न्यूज एजेन्सियों द्वारा प्राप्त सूचनाएं अनुवाद द्वारा हिन्दी या अंग्रेजी में उपलब्ध की जाती है। 'रायटर' अंतर्राष्ट्रीय न्यूज एजेंसी है जहां से सभी भाषाओं के अनुवाद द्वारा प्राप्त समाचार वितरित होते हैं।

टेलीविजन भी कम्प्यूटर आधारित हैं। आजकल अनेक ब्लॉग प्रचलित हुए हैं। कोई भी व्यक्ति या संगठन अपना ब्लॉग बना कर किसी भी प्रकार का समाचार या विज्ञापन दे सकता है। दूसरे देशों के समाचारों को अनुवाद द्वारा ही अंग्रेजी और हिन्दी उर्दू में प्रसारित किया जाता है। राजनेताओं सामाजिक कार्यकर्ताओं एवं संस्कृति कर्मियों से जो साक्षात्कार लिए जाते हैं। उनका अनुवाद कराकर ही प्रसारण किया जाता है। अनुवाद के आयाम को फिल्मों ने लंबा जीवन दिया है। अनुवाद के द्वारा हम फ्रेन्च, रूसी, जर्मन और अंग्रेजी फिल्मों की डबिंग कर के हिन्दी में प्राप्त कर लेते हैं। भारतीय भाषाओं में अनेक उत्कृष्ट फिल्में बनी हैं।

अनुवाद के द्वारा हम इन्हें हिन्दी प्राप्त करते हैं। अनुवाद के आयामों ने मनुष्य के मनोरंजन के आयामों में वृद्धि की है। अनुवाद ने सूचना क्रान्ति उपस्थित कर दी है।

1.9.7 अनुवाद और पर्यटन उद्योग

आजकल की ट्रैवल एजेंसियों ने आकर्षक बुकलेट प्रकाशित कर के देश विदेश के पर्यटन स्थलों के चित्र जानकारी सहित प्रकाशित किए हैं। समाचार पत्रों में भी ये चित्र विवरण सहित प्रकाशित होते हैं। ये एजेंसियां कई प्रकार की छूट भी देती हैं। भारत पर्यटन की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। दक्षिण से काशी आने वाले जितने पर्यटक हैं उतने ही काशी से कांची और केरल जाने वाले हैं। ऐसे समय अनुवाद और अनुवादक की मांग बढ़ जाती है। केरल के टूरिस्ट गाइड को हिन्दी में अनुवाद करना पड़ता है और हिन्दी गाइड को तमिल मलयालम में अनुवाद की निपुणता प्राप्त करनी पड़ती है। गाइडों में परस्पर प्रतियोगिता की भावना रहती है। विदेश जाने वाले हिन्दुस्तानी पर्यटकों को ऐसे अनुवादक की जरूरत है जो भारतीय भाषाओं के साथ अंग्रेजी, जर्मन, फ्रेंच, जापानी आदि की भी जानकारी रखता है। इस प्रकार अनुवाद के आयामों में धनोपार्जन की दृष्टि से भी विकास हो रहा है।

1.9.8 अनुवाद और न्यायालय

न्यायालय में मध्यकाल के फारसी दस्तावेजों को हिन्दी या अंग्रेजी में अनूदित करने वाले अनुवादकों की आवश्यकता होती है। उच्चतम न्यायालय में प्रत्येक प्रदेश से मुअक्किल आते हैं। उनके दस्तावेज उन्हीं की प्रादेशिक भाषा में होते हैं। उन्हें अंग्रेजी में अनुवाद कराना पड़ता है। उच्च न्यायालय में भी अभी अंग्रेजी ही चलती है। हिन्दी भाषी प्रदेशों में प्रायः हिन्दी में जिरह होती है किन्तु यदि उच्च न्यायालय में गैर हिन्दी भाषी जज की नियुक्ति हुई तब सारी जिरह अंग्रेजी में करनी होती है। ऐसी स्थिति में मुअक्किल को आशु अनुवादक की जरूरत होती है। सब दस्तावेज अनुवाद द्वारा अंग्रेजी में उपलब्ध कराने होते हैं। न्यायालय परिधि में कई प्रकार के अनुवादक प्राप्त होते हैं।

1.9.9 अनुवाद और सांस्कृतिक संबंध

दूसरे देशों के साथ मित्रता का हाथ बढ़ाने वाले देश उन देशों की संस्कृति और साहित्य आदि को समझने के लिए अनुवाद का माध्यम लेते हैं। दो चार वाक्य सीख कर बोलने से आत्मीयता तो स्थापित हो जाती है पर उसके साहित्य संस्कृति का पूरा परिचय नहीं मिलता। जैसे अमेरिका के राष्ट्रपति ने भारत के प्रधानमंत्री का व्हाइट हाउस में स्वागत

करते हुए कहा 'आप का स्वागत है।' यह सास्कृतिक संबंधों को सुदृढ़ करने का एक रास्ता भर है। इसकी अगली कड़ी साहित्य और संस्कृति के परिचय से अवगत हो कर अपने साहित्य संस्कृति का संवर्द्धन है। आजकल प्रत्येक देश में इसी उद्देश्य से सांस्कृतिक संबंध परिषद की स्थापना होती है। भारत में इसके अंतर्गत दूसरे देशों की संस्कृति से उन्हें अवगत कराना है। यह सारा परिचयात्मक आदान-प्रदान अनुवाद द्वारा होता है। प्रतिनिधिमंडल दूसरे देशों में जाते समय अनुवादकों को साथ लेकर जाते हैं। सांस्कृतिक संबंध के संवर्द्धन की आवश्यकता ने अनुवाद को उत्पादक कलापूर्ण विज्ञान में परिवर्तित कर दिया है।

उक्त सारे अनुवादकीय आयामों के विकास का तात्पर्य विश्व मैत्री का सुदृढ़ीकरण है।

1.10 सारांश

अनुवाद दो भाषाओं के बीच भाषिक अन्तरण ही नहीं अपितु उनके बीच सवाद का माध्यम भी है। अनुवाद केवल सूचना या तथ्य का अन्तर ही नहीं उन भाषाओं की संस्कृतियों के बीच आदान-प्रदान भी है। संवाद की आवश्यकता से अनुवाद का जन्म माना जा सकता है किन्तु आज ज्ञान प्रसाद के इस देश में अनुवाद की प्रकृति और क्षेत्र तो बदला ही है उसकी भूमिका भी बदली है आज वह अपरिहार्य है। सूसन बेसनेट के शब्दों का प्रयोग करें तो वह मानव के वैचारिक आदान-प्रदान का मौलिक कार्य हो गया है। अनुवाद का उद्देश्य बदलता रहता है। इसका उपयोग भी किया जाता है। अपने निहित स्वार्थों की पूर्ति के लिए अनुवाद के आयाम अनेक स्तरीय हैं। जीवन के सभी क्षेत्रों से संबंधित कार्य व्यापारों में अनुवाद का विस्तार है।

1.11 अभ्यास के लिए प्रश्न

1. अनुवाद को परिभाषित कीजिए तथा विभिन्न परिभाषाओं का विवरण दीजिए।
2. क्या भारत में अनुवाद की परंपरा रही है? भारतीय अनुवाद परंपरा का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।
3. अनुवाद और गुणानुवाद में क्या अन्तर है? सोदाहरण बताएं।
4. अनुवादक में किन गुणों की आवश्यकता है?

1.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1) बोरा, राजमल, अनुवाद क्या है
2) हरिमोहन, अनुवाद विज्ञान और कला
3) विश्वनाथ अय्यर, एम.ई., 1987 अनुवाद कला, दिल्ली, प्रभात प्रकाशन
4) पालीवाल, रीता रानी, 1982, अनुवाद प्रक्रिया, दिल्ली, साहित्य निधि
5) तिवारी, भोलानाथ, 1996, वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद की समस्याएं, दिल्ली, शब्दकार
6) भाटिया, कैलाशचन्द्र, अनुवाद कला सिद्धान्त और प्रयोग, दिल्ली, तक्षशिला

इकाई 2 अनुवाद : प्रकृति एवं क्षेत्र

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 अनुवाद एक शैक्षिक विषय के रूप में

2.3 अनुवाद की प्रकृति

- 2.3.1 अनुवाद विज्ञान है
- 2.3.2 विज्ञान के रूप में अनुवाद की सीमा
- 2.3.3 अनुवाद कला है
- 2.3.4 कला के रूप में अनुवाद की सीमा
- 2.3.5 अनुवाद शिल्प है
- 2.3.6 अनुवाद पुनर्सृजन है

2.4 अनुवाद का क्षेत्र एवं व्याप्ति

- 2.4.1 विश्वग्राम की संभावना और अनुवाद
- 2.4.2 विश्वसाहित्य की परिकल्पना और अनुवाद
- 2.4.3 राष्ट्रीय एकात्मकता और अनुवाद
- 2.4.4 संचार-सूचना क्रान्ति और अनुवाद

2.5 सारांश

2.6 अभ्यास के लिए प्रश्न

2.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

2.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप यह समझ सकेंगे कि

- क्या अभ्यास द्वारा अनुवाद की कला सीखी जा सकती है?
- क्या अनुवाद के अध्ययन में वैज्ञानिक पद्धति का निरुपण संभव है?
- क्या अनुवाद में विज्ञान जैसे सार्वभौम नियम या सिद्धान्त निगमित किया जा सकता है?
- अनुवाद और नवीन भाषाओं के अध्ययन में क्या संबंध है?
- अनुवाद का क्षेत्र एवं व्यापकता कितनी है?
- सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भों में अनुवाद किस तरह विस्तृत है?
- आज के विश्वव्यापी संचार में अनुवाद की क्या भूमिका है?

2.1 प्रस्तावना

इस खण्ड की पिछली इकाई में अनुवाद की अवधारणा और आयामों से परिचित हुए। प्रस्तुत इकाई अनुवाद की प्रकृति और उसकी व्यापकता से संबंधित है। अनुवाद उतना ही प्राचीन है जितनी कि मानव सभ्यता। जब से मनुष्य गुफावासी

से सामाजिक प्राणी बना, उसने अपने समाज के अन्य सदस्यों के साथ संदेश, भाव या विचार विनियम के लिए भाषा को खोजा। भाषा मानव सभ्यता की बड़ी उपलब्धि है। मनुष्य के अन्य भाषा-भाषी समुदाय के सदस्यों के साथ संवाद के प्रयत्न में अनुवाद का जन्म हुआ। आज दुनिया के किसी कोने का कोई समुदाय पूरी दुनिया से कटकर अलग-थलग नहीं रह सकता। अतएव अनुवाद की प्रासंगिकता और व्यापकता असंदिग्ध है। अनुवाद के बिना विश्वसंचार की कल्पना असंभव है। इसलिए वैश्विक गांव की संकल्पना अनुवाद की फलश्रुति है, यह कहे तो अतिश्योक्ति न होगी। अनुवाद की महत्ता को देखते हुए उसके अर्थ, स्वरूप, प्रकृति, प्रक्रिया को व्यवस्थित रूप देने की आवश्यकता है। इस प्रकार के प्रयत्न से अनुवाद एक शैक्षिक विषय के रूप में उभरता है। पुनः यह प्रश्न स्वाभाविक है कि अनुवाद के ज्ञान की प्रकृति क्या है? क्या हम कुछ नियमों सिद्धान्तों को सीखकर अथवा करो और सीखों के मार्ग पर चलकर अभ्यास से अनुवाद को सीख सकते हैं, इसका विवेचन-विश्लेषण आवश्यक है।

2.2 अनुवाद एक शैक्षिक विषय के रूप में

अनुवाद अध्ययन के विद्यार्थी के सम्मुख यह प्रश्न स्वाभाविक है कि एक शैक्षिक नियम के रूप में अनुवाद का अध्ययन किस प्रकार किया जाए।

प्राचीन सभ्यताओं यथा सिन्धु घाटी, मिश्र और मेसोपोटामिया की सभ्यताओं के बीच संबंध और संचार के प्रमाण मिलते हैं और दुनिया के सभी क्षेत्र संचार क्रांति के फलस्वरूप प्रत्यक्ष संपर्क में है। विश्व में भाषा का समय के सापेक्ष विविध कारणों से जन्म और मृत्य होता रहता है। विश्वक्षितिज पर जिन भाषाओं का आज अस्तित्व है, कुछ सौ वर्षों पूर्व उनके स्थान पर दूसरी भाषाएं थीं। उन पूर्व भाषाओं के समाप्त होने के बावजूद उस समय का ज्ञान सुरक्षित है। वस्तुतः यह सब अनुवाद का परिणाम है। अब यह स्पष्ट है कि अनुवाद की विशाल परंपरा रही है। ऐसे बहुत से लोग जिन्होंने स्वेच्छया अनुवाद का क्षेत्र चुना और कुछ ग्रंथ या साहित्य का अनुवाद किया उनमें अधिकांश का यह मानना है कि अनुवाद को अपनी स्वप्रेरणा और व्यक्तिगत अनुभव से सीखा जा सकता है और किसी भी तरह से इसके पढ़ाने की व्यवस्थित रीति नहीं निगमित की जा सकती है और न ही अनुवाद के सिद्धान्तों की व्यवहारिक अनुवाद में कोई उपयोगिता है। कुछ विद्वानों का ऐसा मत है कि अनुवाद का संबंध दो भाषाओं के अध्ययन से संबंधित है जो भाषा विज्ञान का विषय है अतएव एक स्वतंत्र विषय के रूप में अनुवाद की संभावना क्षीण है। अधिकांश ऐसे भी लोग हैं जिन्होंने अनुवाद शिक्षण की व्यवस्थित रीति को खोजने और विन्यस्त करने का प्रयत्न किया है। इनकी दृष्टि में अनुवाद को एक शैक्षिक विषय के रूप में विकसित किया जा सकता है। आज कई विश्वविद्यालयें या संस्थानों में अनुवाद के पाठ्क्रम को एक स्वतंत्र विषय के रूप में पढ़ाया जा रहा है ओर उसको उच्च अध्ययन के शैक्षिक विषय के रूप में विकसित किया जा चुका है। अनुवाद की व्यापकता और महत्त्व को ध्यान में रखें तो यह स्पष्ट है। इसके अध्ययन से अनुवाद कौशल में सिद्धहस्त हुआ जा सकता है। अनुवाद की प्रक्रिया को समझने के पूर्व अनुवाद की वास्तविक प्रकृति को समझना आवश्यक है।

2.3 अनुवाद की प्रकृति

अनुवाद के बारे में यह प्रश्न स्वाभाविक है कि क्या यह कोई वैज्ञानिक अध्ययन है या कलात्मक प्रयत्न या अनुसंधान योग्य सिद्धान्त या तकनीकी शिल्प या भाषा विज्ञान की एक शाखा अथवा कि साहित्य। भिन्न भाषा-संस्कृतियों के सेतु के रूप में अनुवाद की भूमिका जटिल एवं बहुपक्षीय क्रिया जैसी प्रतीत होती है।

अनुवाद की प्रकृति के बारे में विभिन्न प्रकार के मत हैं। इन मतों को प्रमुखतः निम्न श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है-कला, विज्ञान, शिल्प और पुर्नसृजन। इन श्रेणियों को अनुवाद की प्रकृति के मूल अवयव भी कह सकते हैं। अनुवाद की प्रकृति को सम्यक रूप से समझने के लिए इन श्रेणियों का विवेचन-विश्लेषण आवश्यक हैं।

2.3.1 अनुवाद विज्ञान है

प्रत्येक शैक्षिक विषयों की प्रकृति के बारे में प्रायः यह परीक्षा की जाती है कि वह विषय कला है या विज्ञान; और इसी प्रसंग में कला और विज्ञान में परस्पर विरोध दिखाया जाता है। यह कहा जाता है कि विज्ञान एक व्यवस्थित ज्ञान है

जो अनुसंधान और पर्यवेक्षण पर आधारित होता है एवं कला एक व्यवस्थित अभ्यास है जिसमें आत्माभिव्यक्ति और सृजन प्रक्रिया सन्निहित होती है। किन्तु किसी भी एक विषय के बारे में निश्चयपूर्वक यह कथन कि वह केवल कला है या वह केवल विज्ञान है, असत्य होगा। प्रत्येक कला किसी न किसी विज्ञान पर आधारित होती है और वैज्ञानिक सत्य के अभ्यास से कलात्मक अभिव्यक्ति की जा सकती है। यथा संगीत कला है तो उसके पीछे ध्वनि से संबंधित विज्ञान है और द्रव में किसी वस्तु के डूबने पर उत्पलवन का विज्ञान है तो अपने अभ्यास से संतुलन को साध कर एक तैराक अपनी कला का प्रदर्शन भी करता है। निष्कर्षतः अनुवाद कला भी है और विज्ञान भी। किन्तु यह आवश्यक नहीं है कि अनुवाद का अभ्यास कर उसे साध लेने वाला अनुवादक विज्ञान में भी निपुण हो और अनुवाद के विज्ञान में दक्ष व्यक्ति अनुवाद कला में समर्थ हो।

पुनः एक प्रश्न है कि अनुवाद विज्ञान कैसे है? अनुवाद को कला मानने वाले विद्वानों की एक लम्बी श्रृंखला है किन्तु अनुवाद विज्ञान भी है, यह कथन सहज स्वीकारने में बहुतों को आपत्ति होती है। विज्ञान से हमारा आशय क्या है? विज्ञान का शाब्दिक अर्थ है विशेष ज्ञान अर्थात् विज्ञान सिद्धान्तों और सुनिश्चित ज्ञान का वह समूह है जो किसी चुने हुए क्षेत्र में प्रत्येक संबंधित घटना का कार्य-कारण नियमों के आधार पर स्पष्टीकरण रखने की क्षमता रखता है और वे नियम इतने अटल और निश्चित होते हैं कि उनके आधार पर भावी घटना की भविष्यवाणी की जा सकती है। सुनिश्चितता और पूर्वानुमान करने की क्षमता विज्ञान के दो अनिवार्य तत्व माने जाते हैं। इनके अपवाद की संभावना नहीं होती है। एक खगोल वैज्ञानिक पूर्ण विश्वास के साथ ग्रहण आदि खगोलीय घटनाओं की भविष्यवाणी कर सकता है जो सेकेण्ड की गणनाओं में सत्य ठहरता है, एक गणितज्ञ अपनी गणना से किसी गणितीय समस्या का सुनिश्चित उत्तर निकाल सकता है, एक रसायन शास्त्री बिना किसी त्रुटि के दो या अधिक तत्वों के मिश्रण से किसी रसायनिक यौगिक का निर्माण कर सकता है? एक जीवन विज्ञानी जीवनधारी या वनस्पति की शारीरिक संरचना की यथातथ्य व्याख्या कर सकता है और एक भौतिक विज्ञानी प्रकृति में छिपी ऊर्जा से प्रकाश और शक्ति उत्पन्न कर बड़ी से बड़ी मशीनें चलवा सकता है। फिर यह जिज्ञासा स्वाभाविक है कि क्या अनुवाद में भी विज्ञान के जैसे सर्वमान्य सिद्धान्त हो सकते हैं और उनसे सुनिश्चित परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं? सामाजिक विज्ञानों के परिणाम भौतिक, रसायन आदि प्राकृतिक विज्ञानों की तरह सुनिश्चित नहीं हो सकते हैं। अनुवाद विज्ञान के ऐसे सर्वमान्य सिद्धांतों का निगमन असंभव सा प्रतीत होता है जिनसे दुनिया की किसी भी दो भाषाओं के बीच अनुवाद हो सके। जब भी हम अनुवाद के सामान्य नियमों के आधार पर अनुवाद करते हें तो हमें कई बार हास्यास्पद परिणाम प्राप्त होते हैं। इतिहास, राजनीति, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र आदि सामाजिक विषयों के शास्त्रकारों का यह विश्वास है कि इन विषयों में पूर्ण निश्चितता और यथार्थ का अभाव होता है। अर्थात् इन विषयों में अपवाद रहित नियमों का अभाव होता है एवं उन नियमों के अनुसार निश्चयपूर्वक भविष्यवाणी नहीं की जा सकती है।

सामाजिक विज्ञानियों का ऐसा मत है कि निश्चय पूर्वक भविष्य कथन विज्ञान का सच्चा मानदण्ड नहीं है और उनका तर्क है कि किसी विषय का विज्ञान होना पूर्ण निश्चितता और दृढ़तापूर्वक भविष्यवाणी की संभावना पर निर्भर नही है बल्कि उस विषय के रीति-विधान पर निर्भर है। किसी विषय के अध्ययन की परंपरा जितनी पुष्ट और व्यवस्थित होगी, वह उतना ही विज्ञान सम्मत होगा। कोई भी शैक्षिक विषय जिसके अध्ययन में वैज्ञानिक प्रणाली को अपनाया जा सकता है और उसके सामान्य नियमों के आधार पर निश्चयपूर्वक कथन की बजाय पूर्वानुमान भी लगाया जा सकता है, वह विज्ञान हो सकता है। बहुत से विषय जो भाषा, समाज एवं संस्कृति से संबंधित होते हैं और उनमें अध्ययन की वैज्ञानिक पद्धति को अपनाया जाता है, सामाजिक विज्ञानों की कोटि में गिने जाते हें। यह सत्य है कि मनुष्य के सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ एवं भाषिक व्यवहार पूरे विश्व में एक समान नहीं होते, जिसका संबंध अनुवाद विज्ञान से है, न ही भाषिक-व्यवहारों का विश्लेषण उसी प्रकार आसान होता है जिस प्रकार भौतिक पदार्थों का होता है। विज्ञानों के नियम अटल एवं सामान्य हैं, भाषिक व्यवहारों के नियम अनिश्चित एवं विविधतापूर्ण हैं। फिर भी यह पूर्णतया मनमानी पर निर्भर नहीं है, उसमें भी सामान्य नियमों को ढूंढा जा सकता है उसमें एक निश्चित व्यवस्था है। वस्तुतः यह व्यवस्था ही भाषा विज्ञान का आधार है। ऐसा न होता तो हम भाषा विकास के कारणों को खोज नहीं पाते, भाषा विकास की प्रक्रिया को न समझ पाते और न उसके बारे में किसी प्रकार अनुमान लगा पाते। वस्तुतः बहुत से प्राकृतिक विज्ञानों में हम निश्चयपूर्वक भविष्यवाणी की बजाय केवल पूर्वानुमान भर कर सकते हैं। उदाहरण स्वरूप मौसम विज्ञानों में भी मौसम विज्ञान जैसे विषय हैं जो संभावनाओं को व्यक्त करते हैं न कि सुनिश्चित भविष्यवाणियों को। शुद्ध भौतिक

विज्ञानों के नियम पूर्णतया सामान्य नहीं होते जो सभी स्थितियों में लागू हो, यही कारण है कि भौतिकी में भी नये नए सिद्धान्तों की अनवरत खोज होती रहती है जो पूर्व के नियमों की सीमाओं को व्याख्यायित करते हैं। अतएव इस संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि भौतिक विज्ञानों और सामाजिक विज्ञानों में कार्य-कारण नियमों के आधार पर भविष्यवाणी या पूर्वानुमान में केवल मात्रात्मक भेद है न कि स्वरूपगत। वर्कले ने इसका समर्थन करते हुए लिखा कि कुछ विज्ञान, विशेषकर मानविकी से संबंधित रखने वाले शतप्रतिशत पूर्वानुमानों की कसौटी पर खरे नहीं उतरते।

स्पष्टतया अनुवाद में विज्ञान बनने की पूर्ण संभावना दिखायी देती है। इसे ही सुनिश्चित करते हुए विद्वानों ने इसे "अनुवाद विज्ञान" की संज्ञा दी है। अनुवाद को विज्ञान मानने का प्रस्ताव यूजीन नायडा ने अपनी पुस्तक **'Towards science of translating'** में किया। अनुवाद को विज्ञान मानने के सम्बन्ध में एक तथ्य और ध्यातव्य है। अनुवाद की प्रक्रिया वैज्ञानिक होती है। जो अनुवादक इस प्रक्रिया से जितना अधिक परिचित होता है वह उतना ही सफल अनुवादक होता है। जब हम वैज्ञानिक प्रक्रिया की बात करते हैं, तब निरीक्षण, परीक्षण, प्राप्त तथ्य का वर्गीकरण, विश्लेषण, तुलना, सूत्र-निर्धारण, नियम, सिद्धान्त आदि तत्वों का समावेश हो जाता है। ये तत्व अनुवाद की प्रक्रिया में सहायक होते हैं। विज्ञान के अध्ययन में वैज्ञानिक तटस्थ भाव रखता हे। उसका प्रमुख ध्यान वस्तुनिष्ठता पर होता हे। अनुवादक को भी स्रोत भाषा की पाठ्य-सामग्री को लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करते समय वैज्ञानिक की भांति तटस्थ रहना पड़ता है और पाठ्य-सामग्री का वस्तुनिष्ठ और यथावत अनुवाद करना पड़ता है।

अनुवाद को विज्ञान-सम्मत सिद्ध करने के तर्क प्रस्तुत किए जा सकते हैं'

प्रथमतः अनुवाद का संबंध भाषा विज्ञान से है। भाषा में अध्ययन की वैज्ञानिक प्रणाली का असंदिग्ध रूप से समावेश है। भाषा के सर्वमान्य सामान्य सिद्धान्तों की खोज हो चुकी है जिसके आधार पर भाषा के इतिहास, विकास और परिवर्तन की प्रक्रिया को बखूबी समझा जा सकता है। भाषा के इन्हीं सिद्धान्तों और नियमों के आधार पर भाषा को विकसित और समृद्ध करने का प्रयत्न दिखाई देता है। शब्दावली निर्माण के कार्य का व्यक्तिगत एवं संस्थागत प्रयास बहुत कुछ इन्हीं कारणों से संभव हो पाया है। बहुत से विद्वान भाषा की उत्पत्ति के दैवीय सिद्धान्त को मानते हैं, तो भी भाषा व्यवस्था और विवेचना-विश्लेषण में वैज्ञानिक अध्ययन की प्रक्रिया का समावेश सहज संभव हो पाया है। अनुवाद का अनिवार्य संबंध भाषा विवेचना-विश्लेषण से है। पश्चिमी भाषा वैज्ञानिक नाइडा और ओटिंगर अनुवाद की प्रक्रिया को तुलनात्मक भाषा विज्ञान से जोड़ते हुए इसे विज्ञान की श्रेणी में रखते हैं।

विभिन्न समाज के भाषिक-व्यवहारों एवं सांस्कृतिक संदर्भों के विवेचन-विश्लेषण के फलस्वरूप ऐसे सिद्धान्तों एवं सामान्य नियमों को कुछ हद तक खोज लिया गया है जिसके उपयोग से अनुवाद के सामान्य नियमों का निगमन किया जा रहा है। आज विज्ञान, प्रशासन, विधि जैसे भिन्न-भिन्न विशेष संदर्भों के क्षेत्रों में अनुवाद के सामान्य नियमों को विन्यस्त और व्यवस्थित करने का तेजी से प्रयत्न दिखाई दे रहा है। विज्ञान एवं प्रशासनिक भाषा से संबंधित अभिधात्मक स्तर की भाषा के अनुवाद से संबंधित सामान्य नियम मान्य होने लगे हैं किन्तु इन सबके बावजूद साहित्यिक अनुवाद आज भी बहुत हद तक चुनौती बना हुआ है। फिर भी विद्वानों ने भाषान्तरण के लिए अनुवाद व्याकरण को कुछ हद तक अन्वेषित करना प्रारंभ कर दिया है। निश्चित ही वर्तमान स्वरूप में अनुवाद एक विज्ञान के रूप में प्रतिष्ठित हो चुका है वैसे ही जैसे कि अन्य सामाजिक विज्ञान। अर्थात् इसमें अध्ययन की सुनिश्चित प्रणाली विकसित कर ली गयी है एवं बड़ी संख्या में ऐसे तथ्यों को व्यस्थित कर विवेचित-विश्लेषित कर लिया गया है जिनमें वैज्ञानिक अध्ययन की प्रणाली का प्रयोग किया जा सकता है। मीरेमदी की यह मान्यता है कि अनुवाद को विज्ञान माने या कला, आधुनिक अर्थों में यह करो और सीखो, विकास, सुधार और अनुसंधान की फलश्रुति है।

जिस प्रकार विज्ञान के नियमों एवं सिद्धांतों से तकनीक का विकास होता है और तकनीक के अनुप्रयोग से अपने कार्य को संभव व सुगम बनाया जा सकता है वैसे ही आज अनुवाद के नियमों और सिद्धांतों के आधार पर मशीनी अनुवाद की तकनीक विकसित की जा चुकी। आज बहुत से साफ्टवेयर निर्मित किए जा चुके हैं जिनमें कुछ क्षेत्रों में कामचलाऊ स्तर पर अनुवाद किया जा सकता है। ऐसी वेबसाइट है जो नेट पर ऑनलाइन अनुवाद की सुविधा प्रदान कर रही है। आधुनिक युग में मशीनी अनुवाद, अनुवाद के क्षेत्र में एक बड़ी उपलब्धि है। यह इस बात का प्रतीक है कि अनुवाद में विज्ञान की कितनी सहयोगी भूमिका होती है।

2.3.2 विज्ञान के रूप में अनुवाद की सीमा

इन सभी प्रकार के मशीनी अनुवाद की अपनी सीमाएं हैं। सारे यांत्रिक प्रयत्न श्रेष्ठ अनुवाद का परिणाम नहीं दे सकते हैं। अनुवाद में प्रमुखतः भाषा विज्ञान के विविध स्रोतों यथा अर्थगत या सामाजिक-भाषिकी के वैज्ञानिक आंकड़ों का प्रयोग होता है। सम्प्रति यह कम्प्यूटर विज्ञान से जुड़ चुका है और मशीनी अनुवाद और कम्प्यूटर आश्रित जैसी शाखाओं का जन्म हो चुका है किन्तु अनुवाद विज्ञान की संभावना के बावजूद स्वयं में विज्ञान नहीं है अनुवाद के नियमों में इतनी दृढ़ता नहीं होती कि इन्हें बार-बार के प्रयोगों से इसे वैध ठहराया जा सके। अनुवाद में "शब्दशः भाषान्तरण" की परिभाषा इसे अनुवाद के निकट लाने की कोशिश करती है लेकिन किसी पाठ का शब्दशः अनुवाद **(Word for World Translation)** प्रायः ही हास्यास्पद हो जाता है। इसलिए अनुवाद में शाब्दिक भाषान्तरण की बजाय उक्त भाषा के पाठ के अर्थ को केन्द्र में रखते हुए स्रोत भाषा में उसी अर्थ के लिए संभावित विकल्पों से उपयुक्त शब्दों/पदों का चयन करते हैं। इस प्रकार अनुवाद समतुल्यता की खोज है। यद्यपि अनुवादक वैज्ञानिक सिद्धान्तों और आंकड़ों का प्रयोग करता है, तो वह इसका प्रयोग इस रूप में करता है कि उसमें व्यक्तिगत रुचि, पक्ष, कल्पना एवं भाव-भंगिमाओं की अभिव्यक्ति की कुछ हद तक छूट रहती है। सांस्कृतिक संदर्भों के प्रसंग में समतुल्यता की खोज में उपस्थित यह छूट अनुवाद के विज्ञान बनने में बड़ी बाधा है। अनुवाद करते समय आने वाली किसी समस्या के अनेकों समाधान हो सकते हैं और एक रचनाशील अनुवाद के किसी भी समस्या का त्वरित समाधान निकाल सकता है। अनुवाद से संबंधित समस्या एक समान तरह की हो सकती हैं किन्तु इसमें ऐसे किसी सिद्धान्त या नियम का बनना असंभव है जो प्रत्येक समय और प्रत्येक दशा में एक ही तरह से लागू हो सके। क्योंकि विश्व की सभी भाषाओं और उनके सांस्कृतिक संदर्भों में पर्याप्त भिन्नता होती है।

न्यूमार्क के अनुसार अनुवाद, किसी पाठ के अर्थ का दूसरी भाषा में अन्तरण है। इसलिए अनुवाद में सिद्धांतया नियमों के निगमन में अन्य बड़ी बाधा, इस अर्थ से संबंधित है, जो स्वयं मानविकी में विवाद का विषय हैं। विश्व की कोई दो भाषा अर्थ के स्तर पर एक जैसी नहीं होती। उसकी अपनी-अपनी विशेषताएं होती हैं।

2.3.3 अनुवाद कला है

प्रायः यह देखा गया है कि किसी एक निश्चित पाठ के विभिन्न अनुवादकों द्वारा किए गए अनुवादों में भिन्नता मिलती है। ऐसा इसलिए होता है कि अनुवाद अनिवार्यतः एक कला है न कि विज्ञान। भाषा का ज्ञान, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की समझ, लेखन की कला आदि बहुत से ऐसे कारक हैं जो अनुवाद की गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं, यही कारण है कि एक ही पाठ के दो या अधिक अनुवाद पूर्णतया एक जैसे नहीं होते। सम्प्रेषण एक कला है, वक्तृत्व कला है और अच्छा लेखन भी एक कला है। वह प्रभावधर्मी होता है। अनुवाद का इससे अनिवार्य संबंध है इस दृष्टि से अनुवाद भी एक कला है। दूसरे शब्दों में लेखन या भाषिक सम्प्रेषण कला है तो भाषान्तरण भी एक कला है। कला का अपना कौशल होता है और वह व्यवस्थित ढंग से व्यवहार में लाई जाती है। कला व्यक्ति को कुछ तो ईश्वर प्रदत्त प्रतिभा के रूप में मिलती है तो कुछ उसकी तकनीक को सीख कर प्रवीण हुआ जा सकता है अथवा अपने प्रयत्नों से उसे निखारा जा सकता है। इसी प्रकार अनुवाद में कुछ अपनी प्रतिभा के बल पर और कुछ अनुवाद के गुणों को निखार कर इसे कलात्मक ऊँचाई तक पहुंचाया जा सकता है। कलाएं अनेक हैं और प्रत्येक कला का उद्देश्य होता है- सौंदर्य का अनुसंधान और रसानुभूति। अनूदित रचना विशेषकर साहित्यिक अनुवाद मे भी भाषिक सौन्दर्य होता है और उसे पढ़ने में आनन्द की उपलब्धि होती है। अनुवाद इस प्रकार हो कि स्रोत भाषा का पाठ और लक्ष्य भाषा का पाठ अलग-अलग स्वतंत्र भाषिक पाठ का रसास्वादन कराएं और उन दोनों पाठों को पढ़ने के बाद ही यह ज्ञात हो सके कि यह उक्त पाठ अनुवाद है, और अकेले उनका संपूर्ण प्रभाव हो और लक्ष्य भाषा के पाठ में भाषांतरण की छाया न दिखे तो वास्तविक रूप में उसे हम सच्चे अर्थों में अनुवाद कहेंगे।

कला का संबंध मनुष्य के रसात्मक बोध से है। मूर्तिकला, चित्रकला, वास्तुकला, संगीत और कविता आदि की गणना ललित कला के रूप में की जाती है। यदि स्वर-लय, तान-वितान, शब्द, भाव आदि से व्यवस्थित रचना ललित कला है तो एक स्रोत के ललित्य को दूसरी लक्ष्य भाषा में पुनः उसी रसात्मक प्रभाव के साथ अंतरित कर देना तो उक्त ललित कला से भी उच्च स्तर की कला है; वस्तुतः उच्च कोटि की कला है। कोई एक साहित्यकार यदि कलाकार है तो उसी स्तर का अनुवाद करने वाला दो भाषाओं का भी उतने ही बड़े स्तर का कलाकार है और वस्तुतः उससे भी बड़ा क्योंकि

उसमें कारयित्री और भावयित्री प्रतिभा दोनों का अद्भुत सामंजस्य है। किसी साहित्यकार के पास किसी एक भाषा और उस भाषिक संस्कृति के साधन होते हैं तो अनुवादक के पास स्रोत और लक्ष्य, दोनों भाषाओं के शब्द और भाव रूपी साधन मौजूद होते हैं जिनके सहारे वह श्रेष्ठ और कलात्मक अनुवाद संभव कर सकता है।

यह धारणा सामान्य है कि कला ईश्वर प्रदत्त तथा जन्मजात होती है और इसे अर्जित नहीं किया जा सकता है। यह भी कहा जाता है कि कलाकार या लेखक जन्म से उत्पन्न होता है, परिश्रम से नहीं बन सकता। इस अर्थ में विचार करते हुए यह निष्कर्ष निकालें कि अनुवाद एक कला है और इसे भी कला के रूप में सीखा नहीं जा सकता है, तो इस विचार की सत्यता आंशिक है। किसी के पास जन्मजात प्रतिभा हो, कोई केवल इसी से कलाकार नहीं हो जाता। निष्ठापूर्वक प्रशिक्षण और अभ्यास से व्यक्ति को अपनी कला को उन्नत और प्रौढ़ करना पड़ता है। फिर यह निर्णय कैसे संभव है कि किसी व्यक्ति में किसी कला की प्रतिभा है या नहीं। हां कभी-कभी किसी को प्रयत्नों के बावजूद सिखाया नहीं जा सका। किन्तु इसके पीछे एक संभावना यह भी हो सकती है कि उसमें कला को सीखने के प्रति निष्ठा की कमी है। अनुवाद एक श्रेष्ठ कला है।

अन्य कलाएं सहज उपलब्ध होती हैं तो अनुवाद कला विशेष प्रयत्न और अभ्यास से ही प्राप्त हो सकता है। अतः प्रयत्न और अभ्यास से भी अनुवाद कला सीखी जा सकती है। अनुवादक की कलात्मकता इस बात में निहित है कि वह मूल कृति को हृदय में धारणा कर उसके मूल कथन के साथ-साथ भाव-विचार-शैली और सांस्कृतिक संदर्भों को पूर्ण रूप में समतुल्यता के साथ लक्ष्य भाषा में संप्रेषित कर दे। उसी समय अनुवाद का कलात्मक कौशल दृष्टिगत होता है। इस प्रकार अनुकरण के अर्थ में अनुवाद एक ललित कला है। कला में अनुकरण का भी बहुत महत्त्व है। अभिनय कला प्रायः अनुकरण पर आधारित होता है। स्रोत भाषा के पाठ की उसी रसात्मक बोध के साथ दूसरी भाषा में अभिव्यक्ति वही अनुवादक कर सकता है जिसमें एक कलाकार सदृश कलात्मक कौशल विद्यमान है।

2.3.4 कला के रूप अनुवाद की सीमा

अनुवाद कला और ललित कला में मौलिक अन्तर यह है कि ललित कला में कलाकार आत्माभिव्यक्ति करते हैं, परन्तु अनुवादक को अनुवाद में आत्माभिव्यक्ति करने की स्वतंत्रता नहीं होती है। वह मूलकृति की आत्माभिव्यक्ति को दूसरी भाषा में अनूदित करता है। केवल इतने से ही अनुवाद कला नहीं हो जाता है। अनुवादक और कलाकार का अन्तर इस बात में भी निहित है कि अनुवादक कला का सृजन नहीं करता वरन् वह स्रोत भाषा के पाठ के साथ संबंध स्थापित करता है और उसे तटस्थ भाव से उसी रसात्मक बोध के साथ लक्ष्य भाषा में व्यक्त कर देता है। इस प्रकार अनुवादक और कलाकार का मुख्य अंतर सृजन पद्धति को लेकर है।

अनुवाद कला में कठिनाई कहां है वस्तुतः अनुवादक के लिए कलात्मक चुनौती समतुल्यता के खोज की है अनुवाद के अन्तर्गत यह समतुल्यता अर्थगत भी होनी चाहिए और शैलीगत भी। समतुल्यता की खोज में अनुवाद को कलात्मक अभिव्यक्ति की थोड़ी बहुत छूट रहती है।

2.3.5 अनुवाद शिल्प है

प्रश्न यह उठता है कि क्या ललित कला के अर्थ में अनुवाद एक कला है? वस्तुतः ललित कला के सभी लक्षणों को दृष्टिगत रखते हुए विचार करें तो अनुवाद की सीमा स्वयमेव स्पष्ट हो जाती है। चित्र, मूर्ति, संगीत, काव्य आदि की पारंपरिक ललित कला की श्रेणी में अनुवाद को नहीं रखा जा सकता ।

ऑक्सफोर्ड अंग्रेजी कोश के अनुसार 'कौशल या तकनीक' को शिल्प कहते हैं। इस सम्बन्ध में नालंदा विशाल शब्द सागर द्वारा दिया गया अर्थद्रष्टव्य है, इसका अर्थ है किसी वस्तु को हाथ से बना कर तैयार करने का काम, दस्तकारी या कारीगरी अथवा कला व्यवसाय। प्रशिक्षण और अभ्यास से किसी उपयोगी वस्तु को संरचित करने का कौशल प्राप्त कर लेना ही शिल्पगत दक्षता है और इस प्रकार का कार्य शिल्प है। शिल्प में रचनाकार के व्यक्तित्व की छाप नहीं होती है बल्कि वह दक्षता के साथ उस कार्य को कर लेता है। उसकी अनकों एक जैसी प्रतिकृति होने के बावजूद उसमें शिल्पकार की वैयक्तिक विशिष्टता, प्रतिभा और सृजनशीलता का अभाव होता है इसलिए शिल्पकार की अपेक्षा कलाकार एवं शिल्प की अपेक्षा कला को उच्च स्थान मिलता है।

कुछ विद्वान अनुवाद को कला या विज्ञान के अतिरिक्त शिल्प की श्रेणी में रखते हैं। इस अर्थ में न्यूमार्क ने अनुवाद को विवेचित करते हुए लिखा है कि किसी एक भाषा में लिखित पाठ या कथन को दूसरी भाषा के उसी पाठ या कथन के द्वारा स्थानापन्न करने का प्रयास ही शिल्प है। दूसरे शब्दों में अनुवाद को शिल्प के रूप में रखते हुए न्यूमार्क का यह मत है कि संप्रेषणपरक और अर्थपरक, दोनों प्रकार के अनुवाद में यथातथ्य अनुवाद, अनुवाद प्रक्रिया का आधार है और इस आधार पर वह घोषित करता है कि यदि लक्ष्य भाषा और स्रोत भाषा के अर्थ परस्पर संगत हों तो यथातथ्य अनुवाद ही सर्वथा उपयुक्त प्रक्रिया है। इस सम्बन्ध में डॉ. भोलानाथ तिवारी अपना मत व्यक्त करते हुए लिखते हैं कि

"शिल्प के अन्तर्गत 'कारीगरी' पर अधिक महत्त्व दिया जाता है इसके साथ ही अभ्यास का भी शिल्प में बहुत महत्त्व है। यदि शिल्पकार में अभ्यास, शिक्षा, योग्यता आदि गुण है, तो उसके शिल्प में सौन्दर्य आ जाता है। अनुवादक के लिए भी यह गुण आवश्यक होते हैं। अतः यदि स्रोत सामग्री, तथ्य, सूचना विज्ञान पर आधारित हो, तो एक शिल्पकार की भांति अनुवादक भी अनुवाद करने में सक्षम होगा। यदि स्रोत की सामग्री वस्तुनिष्ठ तथा सूत्राधारित है, तो अनुवाद निःसंदेह शिल्प का ही रूप ले लेता है। कार्यालयी अनुवाद, विधि, साहित्य, विज्ञान आदि सम्बन्धित अनुवाद एक प्रकार से शिल्पकारी ही है। अतः अनुवाद को शिल्प कहना अनुचित नहीं है। हां यह अवश्य ध्यातव्य है कि यदि सामग्री का सम्बन्ध तथा सूचना सूत्र, विज्ञान आदि से हो और उसमें आत्माभिव्यक्ति का अभाव हो, तो उसके अनुवाद को शिल्प कहा जा सकता है। परन्तु यदि मूल सामग्री का सम्बन्ध साहित्य की किसी विधा से हो तो अनुवाद कला की कोटि में आयेगा।"

2.3.6 अनुवाद पुनर्सृजन है

अनुवाद शब्द की व्युत्पत्ति वद् (धातु) में 'अनु' उपसर्ग लगाने से हुयी है। अनुवाद='अनु' (उपसर्ग), वद् (धातु)। इसका अर्थ है 'पुनः कथन', अर्थात् समान कथन। किसी के कथन को समान रूप से कहना, किसी के कथन के अनुरूप कहना अथवा किसी के कहने के बाद कहना- अनुवाद है। जब किसी एक भाषा में कही गई बात को किसी दूसरी भाषा में समान रूप से व्यक्त किया जाए तब उसे अनुवाद की संज्ञा दी जाती है। 'पुनः सृजन' का अर्थ भी लगभग यही है। सृजन का अर्थ है 'मूल रचना' अथवा 'सृष्टि' अथवा 'निर्मिति'। इनकी फिर से रचना करना पुनः सृजन कहा जाएगा। तात्पर्य यह है कि अनुवादक जब किसी स्रोत भाषा की रचना को किसी दूसरी भाषा में पुनः सृजित करता है, तब उसे 'पुनः सृजन' कहा जाता है। यहां यह ध्यातव्य है कि मूल भाषा की सामग्री को किसी दूसरी भाषा में प्रतिस्थापित करते समय उसे केवल भाषा परिवर्तन करना है, भाव परिवर्तन नहीं।

मौलिक रूप से सृजन और अनुवाद की प्रक्रिया पूर्णतया समान होती है। अनुवादक जबतक मूल रचना के साथ तादत्म्य स्थापित कर उसकी अनुभूति, आशय संदेश या अभिव्यक्ति के साथ तदाकार नहीं हो जाता तब तक उसके द्वारा किया गया अनुवाद श्रेष्ठ अनुवाद की कोटि में नहीं आ सकता। अतएव अनुवादक में सृजनशील प्रतिभा अत्यावश्यक है। एक मौलिक रचनाकार अपनी अत्यंत मौलिक अनुभूति को शब्दों के माध्यम से कलात्मक रूप प्रदान करता है। अनुवादक उसी कलात्मक अभिव्यक्ति को दूसरी भाषा में पुनरुत्पादित करता है। इस प्रकार सर्जक और अनुवादक समानधर्मा कलाकार हैं। जिस प्रकार एक रचनाकार अपने मन में आई हुई भावानुभूति को शब्दों में अभिव्यक्त करने के लिए विवश होने लगते हैं और उसे शब्दांकित करने के बाद वह अपार शान्ति और संतोष का अनुभव करता है, उसी प्रकार एक अनुवादक भी जब किसी रचना से प्रभावित होता है तो वह भी अन्दर-बाहर से अभिभूत हो उठता है और अपने आनन्द में अपने अन्य भाषा-भाषियों को शामिल करने की प्रेरणा से अनुवाद में लग जाता है। अनुवादक अनुवाद सामग्री को जब लक्ष्य भाषा में अभिव्यक्ति करता है तो उसके मन की तड़पन भी मूल रचनाकार की तरह पूर्णतया तो नहीं किन्तु बहुत अंशों में उसी के समानान्तर होती है। अनुवाद में एक-एक शब्द का चयन करते समय अनुवादक को आत्मसंघर्ष करना पड़ता है। हिन्दी के प्रतिष्ठित कथाकार जैनेन्द्र कुमार ने इस संदर्भ में लिखा है कि "सच यह है कि ज्ञानी अथवा अनुभवी जन भाषा के सहारे, आत्मशोध अथवा जीवन शोधन की ओर बढ़ रहे होते हैं। यह स्थूल से सूक्ष्म की ओर बढ़ता है। यहां अनुभूति से हीन होकर एक डग भी पग रखना कठिन हो जाता है। अनुवादक को इस बारे में सावधान रहना चाहिए ओर जब तक मूल का अर्थ ऐसा हृदयंगम न हो जाए कि अनुभूति में ध्वनित होता जान पड़े तब तक कलम को रोके रखना ही अच्छा है। मूल की आत्मा के साथ जब अपना भाव चल निकले तभी साथ-साथ कलम को भी चलना चाहिए। अन्यथा हठात् परिश्रम के बल से अनुवादक सफल नहीं होता।"

स्रोत भाषा की सामग्री के उसी अर्थ को लक्ष्य भाषा में पुनरुत्पादित करना अनुवाद है। अनुवाद की इस प्रक्रिया में स्रोत भाषा की सामग्री के अर्थ के लिए लक्ष्य भाषा के संभावित स्थानापन्न करने वाले उपयुक्त शब्दों का चयन करना पड़ता है। कई बार लक्ष्य भाषा में बिल्कुल वही अर्थ देने वाले शब्दों का अभाव होताहै ओर अनुवाद की प्रक्रिया में कुछ अनकहा रह जाता है या अर्थ परिवर्तन की संभावना बनी रहती है। अतएव अनुवाद में समतुल्यता की खोज करनी पड़ती है। एक भाषा की सामग्री का दूसरी भाषा में यथावत और समतुल्य प्रतिस्थापन 'पुनर्सृजन' है। इस दृष्टि से अनुवाद निःसंदेह पुनःसर्जन है। परन्तु अनुवादक की अपनी सीमा होती है। उसे अनुवाद करते समय मूल सामग्री में परिवर्तन का अधिकार नहीं होता है। वह उसमें न तो कुछ जोड़ सकता है और न ही छोड़ सकता है तथा न ही उसमें किसी प्रकार का परिवर्तन कर सकता है।

उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि मौलिक सृजन और अनुवाद की प्रक्रिया दोनों में भावाभिव्यक्ति के स्तर पर समानता है। लौकिक दृष्टि से अनुवाद को सृजनात्मक साहित्य नहीं कहा जा सकता है किन्तु भावाभिव्यक्ति की शैली के स्तर पर अनुवाद मौलिक साहित्य को सृजन की कोटि में आ सकता है।

2.4 अनुवाद का क्षेत्र एवं व्याप्ति

सीमित अर्थ में हम अनुवाद को तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन अथवा एक भाषा की सामग्री को दूसरी भाषा में रूपांतरण से जोड़कर देखते हैं। लेकिन सच्चे अर्थों में सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों में जो महत्त्व एवं व्याप्ति भाषा का है लगभग वही और कहीं उससे भी अधिक महत्त्व अनुवाद का है। अनुवाद का कार्य एक भाषा की कृति को दूसरी भाषा में अनूदित करना मात्र नहीं है, अपितु मानवीय सभ्यता के क्षेत्र में इसकी अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका है। समस्त विश्व को एक परिवार के रूप में देखने की परिकल्पना को साकार करने में अनुवाद अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। भाषा-वैभिन्य आदमी-आदमी के बीच दीवारें खड़ी करता है और कभी-कभी तो इतना संवेदनहीन बना देता है कि भाषा के आधार पर सामाजिक संघर्ष होने लगता है। राष्ट्रीय एकता और समरसता की स्थापना में यह भाषा वैभिन्य और भाषागत विद्वेष एक बड़ी बाधा है। भाषा की दीवारें जहां विश्व को टुकड़ों-टुकड़ों में बांटकर देखने की दृष्टि देती है वही अनुवाद अपनी भाषिक संकीर्णता से उपर उठकर दुनिया एक गांव की संकल्पना को साकार करने का अवसर प्रदान करता है एवं हमारी दृष्टि को मानवीय बनाता है।

विभिन्न भाषाओं के साहित्य को अनूदित रूप में एक साथ आने पर विश्वात्म एवं भावात्म एकता का बोध होता है। एक भाषा के साहित्य का दूसरी भाषा के साहित्य में अनुवाद होने पर, उन दोनों भाषाओं के प्रयोगकर्ता भावनात्मक रूप से परस्पर निकट आते हैं। आज के हमारे दैनिक जीवन में अनुवाद का महत्त्व और प्रासंगिकता असंदिग्ध रूप से बहुआयामी और व्यापक है। इधर के वर्षों में अनुवाद के बहुपक्षीय और बहुआयामी क्रियाकलापों की प्रासंगिकता बढ़ी है और विभिन्न देशों के सामाजिक सांस्कृतिक-सेतु के रूप में इसका अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व बढ़ा है। भारत का दुनिया की प्राचीन सभ्यताओं जैसे ग्रीक, मिश्र और चीन से सम्बन्ध रहा है। विभिन्न सभ्यताओं के समाजों में बोली जा रही विविध भाषाओं के ज्ञान के बिना यह अंतरंग सम्बन्ध सम्भव न था। निश्चित ही मनुष्य अनुवाद के महत्त्व को बहुत पहले से समझता था। अब यहां अनुवाद का अर्थ और महत्त्व आज के तीव्र परिवर्तनकारी संसार में अत्यधिक बढ़ गया है। वर्तमान परिस्थितियों में जब दुनिया में चीजें तेजी से बदल रही हैं, देश-काल की सीमा छोटी हो रही है तो विश्वक्षितिज पर बिखरे विभिन्न देशों या समाजों के बीच न केवल परस्पर घनिष्ट सम्पर्क की आवश्यकता है बल्कि देश-दुनिया में फैले अन्य समुदाय या समाज के लोगों को भी परस्पर संवाद की जरूरत है। इन आवश्यकताओं की पूर्ति में अनुवाद की महत्त्वपूर्ण भूमिका है जो आज की व्यक्तिगत, सामाजिक या राष्ट्रीय आवश्यकताओं को पूरा करता है। निःसंदेह अनुवाद की व्याप्ति केवल ज्ञान-विज्ञान की शाखाओं तक ही सीमित नहीं है, आधुनिक युग में इसका क्षेत्र अत्यंत व्यापक हो गया है।

अनुवाद के इस व्यापक क्षेत्र को स्पष्ट करने के लिए कतिपय उन महत्त्वपूर्ण तथ्यों पर ध्यान देना आवश्यक है जो उसके क्षेत्र की संरचना करते हैं। ये महत्त्वपूर्ण तथ्य निम्नलिखित हैं।

2.4.1 विश्वग्राम की संभावना और अनुवाद

भाषा का अनिवार्य सम्बन्ध समाज और संस्कृति से है। अतः अन्तर्सामाजिक और अन्तसांस्कृतिक सम्बन्धों में भाषान्तरण अनिवार्य हो जाता है। अनुवाद दो भाषाओं को निकट लाने का कार्य करता है और उसके माध्यम से दो संस्कृतियों के मध्य परस्पर मध्यस्थ की भूमिका में खड़ा हो उनके बीच की दूरियों को मिटाता है।

अनुवाद के कारण किसी भी अन्य भाषा और संस्कृति का ज्ञान प्राप्त होता है, उसके प्रति समानुभूति का भाव जाग्रत होता है और अपनी भाषिक सांस्कृतिक श्रेष्ठता का दंभ टूटता है। अतएव अनुवाद विभिन्न भाषा-भाषियों और संस्कृतियों के बीच सामंजस्य और समरसता का भाव पैदा करता है एवं सांस्कृतिक संघर्षों को समाप्त करता है। भिन्न भाषा संस्कृति के लोग जब आपस में एक दूसरे से ज्ञान और अनुभव की साझेदारी करते हैं और परस्पर संवाद स्थापित करने का प्रयत्न करते हैं तो उनके बीच अन्तर्सांस्कृतिक संचार की प्रक्रिया प्रारम्भ होती है। इन भिन्न भाषा-भाषी लोगों के बीच बढ़ते संवाद से उनके दृष्टिकोण और समझदारी में व्यापकता आती है और उनके बीच आपसी सामंजस्य की भावना का विकास होता है। इस रूप में विश्वबन्धुत्व को बढ़ाने में अनुवाद की महती भूमिका है।

विभिन्न राष्ट्रों के बीच सम्पन्न राजनैतिक संधियां, सांस्कृतिक आदान-प्रदान का वातावरण अनुवाद को अनिवार्य बनाता है। यू.एन.ओ., यूनीसेफ, डब्ल्यू.एच.ओ. जैसी वैश्विक संस्थाओं का कार्य और विस्तार अनुवाद के बल पर टिका हुए है। किसी भी वैश्विक संस्था का वैश्विक आधार होना उसके विभिन्न भाषाओं में होने वाले अनुवाद कार्य पर निर्भर हैं। सम्प्रति दुनिया की कोई भी संस्कृति या समुदाय पूरी दुनिया से कटकर अकेले नहीं रह सकता।

आज सामाजिक सांस्कृतिक समृद्धि का अर्थ है कि हम विश्व की अन्य संस्कृति एवं समाज को समझें तथा उसके आलोक में अपने स्वयं की स्थिति का भी परीक्षण करें। जनसंचार माध्यमों के व्यापक संजाल की उपस्थिति से भाषा और संस्कृति की दीवारें मिट रही है। दुनिया की सूचनाओं को मीडिया अपनी भाषा में अनूदित कर जनसामान्य में सुलभ बना रहा है। उदाहरणस्वरूप, एक समय था जब भारत में वैश्विक ज्ञान का पिटारा अंग्रेजी में बन्द था और अंग्रेजी पत्रकारिता के समक्ष भाषायी पत्रकारिता हाशिए पर थी। किन्तु अब यह अब बीते समय की बात हो गयी। हिन्दी मीडिया अब बहुत आगे और समृद्ध है तथा हिन्दी में बहुत कुछ उपलब्ध है। ज्ञान-विज्ञान का खजाना उपलब्ध कराने वाले डिस्कवरी, नेशनल ज्योग्रोफिक, हिस्ट्री आदि चैनल अब हिन्दी में भी उपलब्ध हैं। निश्चय ही यह अनुवाद के कारण घटित हुआ है। अनुवाद के बिना वैश्विक संचार की कल्पना असम्भव थी जिसकी फलश्रुति वैश्विकग्राम है।

2.4.2 विश्वसाहित्य की परिकल्पना और अनुवाद

अनुवाद स्रोत भाषा के भाषिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियों के आस्वादन और अगले स्तर पर लक्ष्य भाषा में स्थानान्तरित करते हुए उसके सार को प्रसारित और प्रशंसित करने की कला है। अनुवाद ज्ञान-विज्ञान और साहित्य को उसकी मूल भाषा की सीमा को अतिक्रमित करते हुए अन्य भाषा भाषियों के लिए आस्वाद्ययोग्य और सुलभ बनाता है। किसी भाषा की अमरकृति अब उस भाषा की दीवारों में आबद्ध होकर नहीं रह सकती। विश्व के ज्ञान साहित्य की लगभग सभी प्रमुख रचनाएं कई भाषाओं में उपलब्ध हैं। जब भी किसी भाषा में कोई नई महत्त्वपूर्ण कृति प्रकाश में आती है तो उसके अनुवाद शीघ्र ही अन्य प्रमुख भाषाओं में होने लगते हैं। कोई प्रासंगिक विचार या संदर्भ अब सभी प्रमुख भाषाओं के साहित्य को एक साथ प्रभावित करने की स्थिति में है ओर उनके आधार पर एक सामान्य विश्व साहित्य की संभावना रूपाकार हो रही है। उदाहरण-स्वरूप उत्तरआधुनिक विचारधारा, वैश्वीकरण, उपभोक्तावाद, तकनीक, सूचनाक्रान्ति आदि जैसे संदर्भ एक साथ पूरी दुनिया के लगभग सभी भाषाओं के साहित्य को प्रभावित कर रहे हैं। कुछ समय पूर्व तक विश्व साहित्य की अवधारणा को कल्पना परक ही माना जाता था। परन्तु जैसे-जैसे विश्व की महत्त्वपूर्ण प्रसिद्ध कृतियों का अन्यान्य भाषाओं में अनुवाद बढ़ता जा रहा है, विश्व साहित्य की परिकल्पना को दृढ़ आधार मिलता जा रहा है। यही स्थिति फिल्म और अन्य माध्यम रचनाओं के साथ भी है। यह अनुवाद की ही देन है कि किसी भाषा की एक महत्त्वपूर्ण फिल्म सफलता के अगले पायदान में दुनिया की अन्य भाषाओं के रूपहले पर्दे पर शीघ्र ही उतरती दिखने लगती है।

किसी रचना, कृति, ज्ञान-विज्ञान या तकनीक की राजनैतिक और भाषिक दीवारें अपनी सीमा में आबद्ध कर नहीं रख सकती हैं। प्रत्येक अच्छी और श्रेष्ठ कृतियां विश्वक्षितिज पर आकर सर्वसामान्य के लिए सुलभ हो जाती हैं। आज विश्व

की महत्त्वपूर्ण कृतियों की सूची बनायी जा सकती है, और उन्हें विश्व के धरोहर के रूप में रेखांकित किया जा सकता है। कालिदास, शेक्सपीयर, वर्डसवर्थ, कीट्स, शेली, तुलसीदास, कबीर, नानक, बाल्मीकि, मिर्जा गालिब, खुसरों, जान मिल्टन, नजरूल इस्लाम, सुब्रमण्यम भारती, रवीन्द्रनाथ टैगोर, इलियट, टाल्सटॉय, गोएथे, कामू, सार्त्र, बैकेट, पाब्लो नेरूदा, रैबले, प्रेमचन्द, मौक्सिम गार्की, एजरा पाउंड, जयशंकर प्रसाद, निराला आदि रचनाकार किसी एक भाषा के रचनाकार नहीं है बल्कि वे समवेत रूप से विश्व साहित्यकार हैं और इनका साहित्य विश्व साहित्य है।

2.4.3 राष्ट्रीय एकात्मकता और अनुवाद

भारत की बहुभाषिक प्रकृति में अनुवाद राष्ट्रीय स्तर पर भावात्मक एकात्मक का सूत्र है। जिस देश में 1652 भाषाएं बोली जाती हैं ओर 22 भाषाओं को संवैधानिक मान्यता हो, स्वाभाविक है कि वहां भाषाई अस्मिता संघर्ष का विषय बने। जातियों, वर्गों एवं सम्प्रदायों में बंटे इस देश की रीतियों एवं परंपराओं में एक साझी संस्कृति के तत्व विद्यमान हैं जो देश की एकता अखंडता को अक्षुण्ण बनाए हुए हैं और सामासिक संस्कृति का परिचय दे रहे हैं। सामाजिक-राजनैतिक ज्वार-भाटे में जब कभी देश की एकता-अखंडता छिजती हुई नजर आती है तो पूरा देश एक साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर भाषा की सीमा का अतिक्रमण करते हुए एक स्वर में हुंकार भर उठता है। वास्तव में कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक देश का निर्मित मानस विभिन्न भाषाओं के साहित्य में एक ही भाव की अभिव्यक्ति करता है। अनुवाद की व्यापक उपस्थिति ने यह स्पष्ट कर दिया है कि हजारों वर्षों के लम्बे इतिहास में भारतीय साहित्य की परम्परा एक ही दिशा में प्रवाहित होती रही है। व्यापक स्तर पर अनुवाद के प्रयत्नों ने यह दिखा दिया है कि चिन्तन और सर्जना के स्तर पर संपूर्ण भारतीय वाङमय में अद्‌भुत समानता है। अनुवादों के आधार पर यह ज्ञात हो सका कि संस्कृत में बाल्मीकि, हिन्दी में गोस्वामी तुलसीदास, बंग्ला में कृतिवास, असमिया में शंकरदेव, तमिल में कम्बन, मराठी में एकनाथ और उड़िया में बलराम आदि एक ही रामकथा को आधार बनाकर अपने समय और देश का धार्मिक सामाजिक नेतृत्व कर रहे थे। देश की सामाजिक संस्कृति का सच्चा स्वरूप अनुवाद के माध्यम से ही साकार हो सकता है और उसे स्थायी रूप दिया जा सकता है।

इतिहास के प्रवाह में भाषाओं एवं लिपियों का जन्म और मृत्यु होता रहता है। सामाजिक, धार्मिक या राजनैतिक कारणों से किसी समय कोई भाषा लोक भाषा बनती है और फिर कालान्तर में कोई दूसरी भाषा। जैसे भारत में ईसापूर्व संस्कृत लोक भाषा थी और कालान्तर में इसका स्थान क्रमशः पालि, प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं से होते हुए हिन्दी, मराठी आदि भाषाएं विकसित हुई। हिन्दी में भी आदि काल की भाषा का स्वरूप जहां अविकसित था नहीं मध्यकाल में अवधी और ब्रज भाषा विकसित हुई एवं आधुनिककाल में खड़ी बोली हिन्दी प्रतिष्ठित हुई। इसी प्रकार आज की देव नागरी लिपि प्राचीन काल की ब्राह्मी लिपि से विकसित हुई है। इन पूर्ववर्ती भाषाओं की रचनाओं के अनुवाद से देश की साहित्यिक परंपरा का वास्तविक ज्ञान हो सका है और देश इनके बल पर अपनी वास्तविक अस्मिता का बोध कर सका है। इस प्रकार अपने इतिहास का वास्तविक ज्ञान पूर्ववर्ती भाषाओं के साहित्य के अनुवाद से प्राप्त हो सकता है। अनुवाद के द्वारा हम भारतीय सांस्कृतिक विरासत का अनुभव कर सकते हैं और इसके सांस्कृतिक दाय पर गौरवान्ति हो सकते हैं।

2.4.4 संचार-सूचना क्रान्ति और अनुवाद

वर्तमान युग संचार-सूचना क्रान्ति का है। सूचना प्रौद्योगिकी ने ज्ञान के साहित्य का विस्फोट कर दिया है और संचार क्रान्ति ने देश-काल की सीमा को अत्यंत संकुचित कर दुनिया को अत्यंत लघु स्वरूप प्रदान कर दिया है। आज समय के साथ-साथ सूचना एवं ज्ञानराशि में बड़ी तेजी से समृद्धि हो रही है। पिछले कुछ वर्षों में सूचनाएं बहुगुणित हो गयी हैं। सूचना एवं ज्ञान की समृद्धि रेडियोएक्टिव तत्वों के विकिरण और उसके अर्द्ध आयु की तरह हो रही है। निश्चित ही यह सब अनुवाद के बल पर संभव हो पा रहा है। अनुवाद के द्वारा हम संचार और तकनीक की खोजों को जान पा रहे हैं और ज्ञान की विभिन्न शाखाओं और क्षेत्रों में हो रही नवीनतम खोजों के बराबर संपर्क में हैं। मीडिया और सूचना क्रांति ने किसी भी रचना का एक साथ एक समय में दुनिया के प्रत्येक कोने में सुलभ कराना संभव कर दिया है। मनुष्य के मस्तिष्क में ज्ञान की बढ़ रही भूख को मिटाने के लिए आज शिक्षा, विज्ञान और तकनीक, जन संचार, व्यापार और वाणिज्य, साहित्य, धर्म, पर्यटन आदि के क्षेत्र में अनुवाद की बहुत आवश्यकता है और इन क्षेत्रों में अब सेवा के रूप में अनुवाद के अधिक अवसर सुलभ हुए हैं।

अनुवाद के गहन अध्ययन की आवश्यकता केवल इस कारण से ही नहीं है कि इससे वैश्विक संपर्क संभव होता है एवं इससे विभिन्न भाषा-संस्कृतियों का परिचय मिलता है बल्कि तुलनात्मक अध्ययन एवं साहित्य अध्ययन के क्षेत्र में भी इसकी प्रासंगिकता एवं महत्व है। अनुवाद अध्ययन का विस्तार शैक्षिक अनुशासनों से लेकर राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व के विषयों तक है। आज के उपभोक्तावादी युग में वैश्विक स्तर के वाणिज्यएवं व्यापार की संभावना अनुवाद के ऊपर निर्भर है। पहले अखबार और पत्रिकाओं में केवल अनुवाद के अवसर थे अब टी.वी., रेडियो और इन्टरनेट आदि माध्यमों की व्यापक उपस्थिति से अनुवाद कार्य का तेजी से विस्तार हुआ है। ये माध्यम सूचनाओं और जानकारियों को अधिकाधिक पाठकों, श्रोताओं और दर्शकों तक उनकी भाषा में एकसाथ पहुंचाते हैं। समाचार एजेंसियां इस कार्य में अनवरत रूप से लगी रहती हैं और अपने सदस्य अथवा उपभोक्ता अखबारों, पत्रिकाओं या चैनलों को विभिन्न भाषाओं में सेवा प्रदान करती हैं। निश्चित ही वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अनुवाद की भूमिका बहुआयामी और बहुपक्षीय हैं। इसका विस्तार केवल ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्रों तक ही सीमित नहीं है अपितु सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन के विविध आयामों तक है।

2.5 सारांश

अनुवाद दो भाषाओं के बीच अन्तरण की एक ऐसी प्रक्रिया है जिसकी एक पद्धति है और कुछ सुनिश्चित नियमों द्वारा इसकी प्रक्रिया पूरी की जाती है इस अर्थ में वह अनुवाद है किन्तु सर्वत्र इन नियमों के अनुपालन के एक जैसे परिणाम नहीं निकलते। अनुवाद एक कला है क्योंकि स्रोतभाषा के पाठ को लक्ष्यभाषा में रूपान्तरित करने की क्षमता किसी कलाकार में ही हो सकती है जो यथावत सूचना या अन्तर्वस्तु ही नहीं स्रोतभाषा के सौन्दर्य को भी बचाए रखे लेकिन यह प्रतिभा सब में एक जैसी नहीं हो सकती। अनुवाद एक कौशल है जो सतत् साधना से संभव होता है इस अर्थ में वह एक शिल्प है। अनुवाद के क्षेत्र विस्तृत हैं। वैश्वीकरण में अनुवाद की प्रभावी भूमिका है तथा भारत जैसे बहुभाषी देश में अनुवाद की प्रासंगिकता असंदिग्ध है।

2.6 अभ्यास के लिए प्रश्न

1. 'अनुवाद एक विज्ञान है' इस कथन का आलोचनात्मक विवेचन कीजिए।
2. अनुवाद को कला मानने के पीछे कौन से तर्क और आधार हैं? समीक्षा कीजिए।
3. अनुवाद को शिल्प मानना कहां तक उचित है? तर्क सहित उत्तर दीजिए।
4. वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में अनुवाद के योगदान का वर्णन कीजिए।
5. सूचनाक्रान्ति के संदर्भ में अनुवाद का महत्त्व बताइए।

2.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. नगेन्द्र (संपा.), 1991, *अनुवाद विज्ञानः सिद्धान्त और व्यवहार*, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।
2. श्रीवास्तव, रवीन्द्र नाथ एवं गोस्वामी, कृष्ण कुमार, 1985, *अनुवादः सिद्धान्त और समस्याएं*, दिल्ली, आलेख प्रकाशन।
3. Richard W. Brishlin, Ed., 1976, *Translation : Application & Research*, New York, Gardner Press
4. तिवारी, भोलानाथ, 1984, *अनुवाद विज्ञान*, दिल्ली, शब्दाकार।
5. गोपीनाथन, जी, 1985, *अनुवाद : सिद्धांत और प्रयोग*, इलाहाबाद, लोक भारती प्रकाशन।

6. अय्यर, एन. ई. विश्वनाथ, 1987, *अनुवाद कला,* दिल्ली, प्रभात प्रकाशन।

7. खेमाणी, आनन्द प्रकाश एवं वेद प्रकाश, (संपा.), 1964, *अनुवाद कला : कुछ विचार,* दिल्ली, एस चांद एण्ड कम्पनी।

8. पालीवाल, रीतारानी, 1982, *अनुवाद प्रक्रिया,* दिल्ली, साहित्य निधि।

9. भाटिया, कैलाश चन्द्र, *अनुवाद कला सिद्धांत और प्रयोग,* दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन।

10. सिंह, सूरजभान, 2003, *अंग्रेजी-हिन्दी अुनवाद व्याकरण,* दिल्ली, प्रभात प्रकाशन।

11. Newmark, Peter, 1981, *Approaches to Translation*, Oxford, Pergamon Press.

12. Nida, E.A. & Taber, E. J., *The Theory and Practice of Translation*, Brill, Leiden.

13. Catford, J. C., *A Linguistic Theory of Translation*, London, Oxford University Press.

14. तिवारी, भोलानाथ एवं चतुर्वेदी महेन्द्र, (संपा.), 1993, *काव्यानुवाद की समस्याएं,* दिल्ली, शब्दकार।

15. तिवारी, भोलानाथ, गोस्वामी, कृष्ण कुमार, गुलाटी, अजीत लाल, (संपा.), 1993, *कार्यालयी अनुवाद की समस्याएं,* दिल्ली, शब्दकार।

16. तिवारी, भोलानाथ, 1996, *वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद की समस्याएं,* दिल्ली, शब्दकार।

इकाई 3 भारतीय एवं वैश्विक परिप्रेक्ष्य में अनुवाद का महत्त्व

इकाई की रूपरेखा

3.1 प्रस्तावना

3.2 अनुवाद की परिव्याप्ति, क्षेत्र एवं प्रयोजन

3.2.1 साहित्यिक क्षेत्र

3.2.2 साहित्येतर क्षेत्र

3.3 अनुवाद की प्रासंगिकता के कारण

3.3.1 सामाजिक-सांस्कृतिक समन्वय

3.3.2 राष्ट्रीय एवं भावात्मक एकता का सेतु

3.3.3 मानव मूल्यों की प्रतिष्ठा और प्रसार

3.3.4 आधुनिक वैचारिक विनिमय

3.3.5 ज्ञान-विज्ञान तथा तकनीक-प्रौद्योगिकी का आदान-प्रदान

3.4 भूमंडलीकरण की प्रक्रिया और अनुवाद की उपादेयता

3.5 अनुवाद : रोजगार का साधन

3.6 भाषा प्रौद्योगिकी और अनुवाद

3.7 तुलनात्मक-साहित्य-अध्ययन में अनुवाद की भूमिका

3.8 राष्ट्र एवं विश्व विकास में अनुवाद का योगदान

3.9 सारांश

3.10 अभ्यास के लिए प्रश्न

3.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

3.1 प्रस्तावना

वर्तमान युग एवं समाज, संचार क्रान्ति एवं बाजारवाद का युग तथा समाज है। भारत की उदारवादी दृष्टि एवं नीति ने बहुसंचार एवं बहुराष्ट्रवाद की अवधारणा को प्रोत्साहित किया है। भारत विश्व के विकसित देशों के लिए एक बहुत बड़ा व्यवसाय-केन्द्र बन गया है। अनेक विदेशी कम्पनियां अपने उत्पादनों को भारतीय बाजार में बेचने के लिए हर सार्थक कोशिश कर रही हैं। विश्व के अनेक देश जानते हैं कि भारत के बाजार का दोहन भारतीय भाषाओं के द्वारा ही सफलता से किया जा सकता है। अतः लगभग हर विदेशी उत्पादन में अब अनुवाद की पैठ हो गई हैं। इलेक्ट्रॉनिक का क्षेत्र हो अथवा चिकित्सा का, खाद्य सामग्रियों का संदर्भ हो अथवा गृह-सज्जा का, जनसंचार का मामला हो या ज्ञान-विज्ञान का सभी में अनुवाद का महत्त्व बढ़ गया है। यह आज के आधुनिक युग में न केवल प्रासंगिक हैं बल्कि अपरिहार्य भी है। किसी भी समाज-देश का विकास अनुवाद के बिना संभव नहीं है। अनुवाद की प्रासंगिकता का केवल एक यही आयाम नहीं है, इसे कई अन्य आयामों के द्वारा भी देखा जा सकता है।

वर्तमान संदर्भों में राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर कला, साहित्य, संस्कृति, ज्ञान- सूचना-तकनीकी, मनोरंजन, खेल आदि की नित-नूतन जानकारियों के लिए अनुवाद कार्य की भूमिका और अधिक बढ़ गई है। सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में दुनिया सिमट कर हमारी मुट्ठी में आ गई है। जनसंचार माध्यमों को सशक्त एवं लोकप्रिय बनाने में अनुवाद कार्य की महत्ता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। अब तो मनुष्य अपनी बौद्धिक क्षमता से यंत्रों द्वारा अनुवाद कार्य को संपन्न

करा रहा है। आज के युग को अनुवाद का युग कहा जाए तो अत्युक्ति नहीं होगी। आज विश्व-संस्कृति को समझने और उसे करीब लाने में मनुष्य की भूमिका सर्वोपरि हो गई है। विश्व-साहित्य के अनुदित ग्रंथों ने इस कार्य को बहुत आसान बनाया है। इसके अलावा आवागमन तथा सूचना तकनीकी के क्षेत्र में प्रगति के कारण लोगों का आपस में मिलने-जुलने, बातचीत करने का सिलसिला व्यापक स्तर पर शुरू हो गया है। इसमें भी व्यापारिक स्तर पर विविध क्षेत्रों में अनुवाद का सहारा लिया जाता है। यह प्रक्रिया आज भी जारी है। विश्व स्तर पर होने वाली नई-नई खोजों एवं जानकारियों को इंसान अपनी भाषा में जानना चाहता है। इसके लिए अनुवाद ही एकमात्र सहारा हो सकता है। इससे भारत जैसे बहुभाषी देश में अनुवाद की सार्थकता एवं आवश्यकता स्वयं ही सिद्ध हो जाती है। भूमंडलीकरण के इस दौर में जीवन का शायद ही ऐसा कोई क्षेत्र हो जहां अनुवाद की उपादेयता न हो, अतः समय को देखते हुए आवश्यक हो गया है कि नए संसाधनों के विकास और व्यापक मानवीय संबंधों के परिप्रेक्ष्य में अनुवाद की प्रासंगिकता एवं उसकी सार्थकता पर विचार किया जाए।

3.2 अनुवाद की परिव्याप्ति, क्षेत्र एवं प्रयोजन

अनुवाद मानव सभ्यता के साथ विकसित एक ऐसी तकनीक है जो विभिन्न भाषाओं के बीच तालमेल बिठाने के लिए ही अस्तित्व में आई है। मानव-समाज में एक-दूसरे को समझने तथा निकट आने की दिशा में सबसे बड़ी बाधा भाषा ही रही है और इस बाधा को दूर करने तथा देश-काल की सीमाओं को पार करने में अनुवाद का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इस भाषायी बाधा को दूर करने वाली अनुवाद की पूर्व और पश्चिम के वाङमयों में स्वस्थ परंपरा रही है। ऐसा माना जाता है कि लगभग तीन हजार वर्ष ई. पूर्व अल्जीरिया के राजा सरगोन ने अपनी विजयों की घोषणा विभिन्न भाषाओं में अनूदित करवाई थी। ईसा से चार-पांच सौ वर्ष पूर्व यहूदी लोग हिब्रू भाषा में होने वाले प्रवचनों को दुभाषियों की सहायता से आर्मेइक भाषा में अनूदित कराके समझाते थे। विश्व का प्राचीनतम अनुवाद 'रोजेटा प्रस्तर' पर मिलता है-जो लगभग 200 ई. पू. का है और उसमें मिस्र की दो प्राचीन लिपियों-हीरोज्लाईफिक तथा देयांतिक में इतिहास एवं संस्कृति का वृतांत है तथा उसका प्राचीन मिश्र में अनुवाद भी है। बाइबिल के अनुवाद सबसे पहले व्यापक रूप में सामने आए। तदुपरांत होमर, प्लेटो की रचनाओं के अनुवाद हुए। पुनर्जागरण काल में, यूरोप में यूनानी गौरव-ग्रंथों का यूरोपीय भाषाओं में बड़ी संख्या में अनुवाद हुआ। फ्रांसीसी, अंग्रेजी, डच, जर्मन आदि भाषाओं में बाइबिल की नई पोथी के भी पर्याप्त अनुवाद हुए। 1522 ई. में मार्टिन लूथर ने बाइबिल की नई पोथी का जर्मन भाषा में अनुवाद प्रकाशित करवाया। इस कार्य के माध्यम से लूथर ने न मात्र जर्मन भाषा को परिनिष्ठत रूप प्रदान किया, बल्कि अनुवाद में बोधगम्यता पर स्पष्ट रूप से बल दिया।

प्राचीन भारतीय वाङ्मय में अनुवाद की पश्चिमी परम्परा प्रायः अनुपलब्ध है। उसका कारण है कि हमारा प्राचीन साहित्य बड़ा सम्पन्न था, साहित्य दर्शन एवं शास्त्र की भाष्य परंपरा आरम्भ से विकसित थी। उसे हम अनुवाद की भांति की एक सम्पूर्ण प्रविधि मान सकते हैं। अरब और चीन आदि देशों में भारतीय ग्रंथों का अपनी भाषा में अनुवाद अवश्य किया। आगे चलकर लौकिक संस्कृत के युग में अंतःभाषिक, अंतरभाषिक तथा अंतर-प्रतीकात्मक अनुवाद पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं जो भाष्य प्रकृति के ही हैं। प्राकृत के अनेक ग्रंथों के संस्कृत में अनुवाद भी हुए। आधुनिक काल में अनेक विश्व प्रसिद्ध कृतियों का अनुवाद संस्कृत और भारतीय भाषाओं में हुआ तो वहीं कई भारतीय रचनाओं का अनुवाद विश्व की अन्य भाषाओं में हुआ।

आधुनिक युग संचार क्रान्ति तथा सूचना प्रौद्योगिकी का युग है। इस संदर्भ में अनुवाद की प्रासंगिकता एवं उपादेयता आज असंदिग्ध है। ज्ञान-विज्ञान एवं तकनीक के क्षेत्रों में जिस प्रकार निरंतर प्रगति होती जा रही है, उससे संपूर्ण विस्तृत विश्व सिकुड़ता चला जा रहा है। वस्तुतः अब 'विश्व एक इकाई' हो गया है। ऐसी स्थिति में प्रतिक्षण आवश्यकता होती है। यह जानने कि कि किसने क्या कहा? किसने क्या लिखा?, कहां नई घटना घटी? यह सब अनुवाद के द्वारा ही संभव है। इसके द्वारा ही अन्य देशों के विचार, अनुसंधान कार्य, राजनीतिक हलचल, सामाजिक-सांस्कृतिक विचारधाराएं प्राप्त होती हैं। क्योंकि एक व्यक्ति ज्यादा से ज्यादा कुछ भाषाओं काज्ञाता हो सकता है वह विश्व की सभी भाषाओं को नहीं समझ सकता। इसलिए अनुवाद आज के जीवन का अनिवार्य अंग बन गया है। दूर-दूर सीमाओं में बंटी मानव-जाति आज अनुवाद के माध्यम से ही समीप हो रही है। अनुवाद के द्वारा ही कई मृत भाषाओं को पुनर्जीवन मिल रहा है।

पिछले पचास सालों में हमारे जीवन स्तर के हर क्षेत्र में व्यापक बदलाव आया है। शिक्षा, विज्ञान, तकनीक, मीडिया, संचार साधन, पर्यटन आदि प्रत्येक क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन आए हैं। हमारी आवश्यकताएं बदली हैं। इसी के साथ हमारी-जीवन शैली में आमूल-चूल बदलाव आया है। भौतिक सुख-सुविधाओं की नई-नई खोजों ने हमारे जीवन को यांत्रिक बना दिया है। इस बदलते दौर में अनुवाद के क्षेत्र में भी विकास हुआ है। पहले अनुवाद का प्रयोग अधिकतर साहित्यिक क्षेत्रों में हुआ करता था, धीरे-धीरे वह अपने दायरे को बढ़ाते हुए राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक विकास, तुलनात्मकता, व्यवसाय, तकनीकी, सूचना प्रौद्योगिकी, प्रशासन, विधि, न्याय, ज्ञान-विज्ञान, मानवविकी, वेबसाईट, पर्यटन, अंतरर्राष्ट्रीय सम्मेलन, कार्यालयी द्विभाषिका आदि सभी जगह आवश्यक हो गया है। इसलिए यहां अनुवाद के क्षेत्र को दो रूपों में रखा गया है-साहित्यिक क्षेत्र और साहित्येतर क्षेत्र।

3.2.1 साहित्यिक क्षेत्र

सामाजिक प्राणी होने के नाते मनुष्य दूसरे से जो अंतःक्रियाएं करता है, उसका आधार भाषा होती है। मनुष्य में भावाभिव्यक्ति एवं बोधगम्यता की अपूर्वशक्ति विद्यमान रहती है। भाषा विचारों के आदान-प्रदान का सशक्त माध्यम है। मनुष्य भाषा के माध्यम से सामाजिकता को स्थायित्व प्रदान करने के लिए, अनेक शास्त्रों का निर्माण करता है। इस प्रकार वह आनंदानुभूति को भाषाके माध्यम से विकसित करता है तथा ज्ञानार्जन के सशक्त माध्यम के रूप में भाषा की सहायता से कलात्मक रूप में अभिव्यक्त करता है, इसे ही साहित्य कहा गया है। साहित्य की व्यापकता में से अभिप्रेत रूप को रेखांकित करने के लिए उसमें 'रचनात्मक' अथवा 'सृजनात्मक' विशेषण जोड़ा गया है। 'रचनात्मक या सृजनात्मक साहित्य' का अभिप्राय उस समस्त 'शक्ति और ललित साहित्य से है जिसमें कथा साहित्य, उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, महाकाव्य, खंडकाव्य, निबंध, रेखाचित्र, यात्रा-वृत्त रिपोतार्ज, आत्मकथा, जीवनी, मुक्तक काव्य और संस्मरण आदि विभिन्न विधाओं में रचित साहित्य का समावेश किया जाता है।

आधुनिक युग में समूचे विश्व की जनता में समकालीन साहित्य को पढ़ाने की रुचि, अन्य भाषाओं के साहित्यके प्रति जिज्ञासा का भाव जाग्रत हो रहा है। विश्व-मानव के विश्व-साहित्य की कल्पना के साकार होने का सपना मनुष्य देख रहा है। इसलिए आज संसार भर में साहित्यिक अनुवाद की मांग बढ़ रही है। साहित्यिक अनुवाद के प्रसंग में यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण है कि जर्मन कवि एवं नाटककार गेटे ने 'शकुंतला' के अनुवाद को पढ़कर विश्व-साहित्य की कल्पना विकसित की थी। 'शकुंतला के साथ ही तुलसीकृत 'रामचरितमानस' प्रेमचन्द के 'गोदान' विभूतिभूषण के 'पाथेर पांचाली', तकषी के 'चेम्मीन' जैसी भारतीय भाषाओं की महत्त्वपूर्ण कृतियों के यूरोपीय भाषा में अनुवाद हुए। मार्क्स द्वारा जर्मन भाषा में लिखे गये ग्रंथों का अनुवाद विश्व-भर की भाषाओं में हो जाने के कारण ही विश्व के चिंतन को एक नई दिशा मिली। ठीक इसी प्रकार रवींद्रनाथ ठाकुर की 'गीतांजलि' का अनुवाद जब विश्व भर की भाषाओं में प्रकाशित हुआ तभी 'विश्व-भारती' की संकल्पना का प्रचार-प्रसार हुआ। इसी तरह अनुवाद से ही सुब्रमण्यम भारती राष्ट्रीय स्तर पर जाने गये। आज अनुवाद के द्वारा ही मनुष्य के बीच स्थित भौगोलिक, सांस्कृतिक, भाषागत दीवारों को तोड़कर दूरियां कम की जा सकती हैं।

3.2.2 साहित्येतर क्षेत्र

मनुष्य के अर्जित एवं संचित ज्ञान राशि का विपुल वाङ्मय, संवेदना-प्रधान और ज्ञान-प्रधान साहित्य के रूप में उपलब्ध है। संवेदना प्रधान साहित्य का संबंध सृजनात्मक साहित्य से होता है जबकि साहित्य से अलग संबंध रखने वाले ज्ञान-विज्ञान का संबंध साहित्येतर क्षेत्र से होता है। साहित्येतर क्षेत्र के अन्तर्गत-विज्ञान, अंतरिक्ष विज्ञान, प्रौद्योगिकी, विधि, न्याय, प्रशासन, गणतंत्र, मानविकी, समाज विज्ञान, वाणिज्य, बैंकिंग, उद्योग, व्यापार, कला, विज्ञापन, कम्प्यूटर तकनीक, मीडिया आदि आते हैं।

साहित्येतर अनुवाद जहां प्रबुद्ध मानव के बौद्धिक विकास के लिए उपयोगी है, वहीं सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद उसकी अंतर्वृत्तियों को समृद्ध एवं परिष्कृत करने के लिए महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी हैं। ये दोनों मिलकर ही मनुष्य को बेहतर बनाते हैं, मनुष्य को वास्तविक अर्थों में मनुष्य बनाते हैं। मानव-जीवन में इन दोनों प्रकार के मौलिक साहित्य का विशेष स्थान एवं महत्त्व है, वहीं इन दोनों दिशाओं में अनुवाद का विशेष महत्त्व है।

3.3 अनुवाद की प्रासंगिकता के कारण

अनुवाद एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा हम किसी भी देश के परिवेशगत जीवन, संस्कृति, साहित्य, चिंतन विचारधारा आदि से भली-भांति परिचित हो सकते हैं। इस दिशा में भारतीय और विश्व साहित्य की अनूदित कृतियां सामाजिक संस्कृति को बढ़ावा दे रही है। सूचना, विज्ञान, आवागमन के तीव्र साधनों एवं प्रौद्योगिकी के विकास के कारण दुनियाभर के लोगों के साथ आपसी संपर्क बढ़ा है। ज्ञान-विज्ञान के अतिरिक्त, व्यापार, उद्योग, पर्यटन, संयुक्त राष्ट्रसंघ, येनेस्को, विश्वबैंक, बहुराष्ट्रीय कम्पनियां जैसी अनेक अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं, राष्ट्रीय एवं अंतरर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सवों, विज्ञापनों, ओलंपिक और राष्ट्रमंडल जैसे खेलों आदि के क्षेत्र में अनुवाद की प्रासंगिकता और बढ़ गई है। संचार माध्यमों में समाचार, विज्ञापन, धारावाहिकों आदि विभिन्न कार्यक्रमों के लिए अनुवाद आवश्यक हो गया है। इनके अतिरिक्त फिल्म के संवाद एवं गानों के अनूदित रूप भी आने लगे हैं जिसके कारण अन्य भाषा-भाषी लोग भी इसकी ओर आकर्षित हो रहे हैं। अब अनुवाद सामान्य कार्य न होकर राष्ट्रीय अस्मिता एवं सेवा कार्य से जुड़ गया है। अनुवाद वह सेतुबंध है जो साहित्यिक आदान-प्रदान, भावनात्मक एकता, भाषा समृद्धि, तुलनात्मक अध्ययन, राष्ट्रीय सौमनस्य की संकल्पनाओं को साकार कर हमें व्यापक साहित्य जगत से जोड़ता है। भूमंडलीकरण के इस दौर में अनुवाद के प्रासंगिक होने के कई कारण हैं। यहां नीचे प्रमुख कारणों पर संक्षेप में विचार किया जा रहा है-

3.3.1 सामाजिक-सांस्कृतिक समन्वय

विश्व के सभी मानव-समाज की सभ्यता और संस्कृति पूर्णतः एक नहीं होती। इतना ही नहीं जहां एक ही देश के समाज की सभ्यता और संस्कृति भी भिन्न-भिन्न पायी जाती है वहां विविध 'राष्ट्रों' में विविध सभ्यताओं और संस्कृतियों का अस्तित्व रहना स्वाभाविक ही है क्योंकि स्थल, काल, परिवेश, मान्यताएं, भाषा और संस्कृति आदि की भिन्नता के कारण प्रत्येक समाज की अपनी अलग सभ्यता और संस्कृति होती है। भारत के संदर्भ में ही देखें तो तमिल, तेलगु, मलयालम तथा कन्नड़ भाषा-भाषी समाज की जो सभ्यता एवं संस्कृति परिलक्षित होती है ठीक वही मराठी, गुजराती, बंगाली तथा हिंदी भाषा-भाषी समाज में दृष्टिगोचर नहीं होती। इनमें कम अधिक मात्रा में अंतर अवश्य है। उसी प्रकार अंग्रेजी और फ्रैंच समाज, चीनी और रूसी समाज, जर्मन और जापानी समाज तथा इतावली और पुर्तगाली समाज की सभ्यता और संस्कृति प्रायः भिन्न पायी जाती है। इनकी भाषाएं भी पूर्णतः भिन्न हैं परन्तु आज ये विभिन्न समाज के लोग एक-दूसरे की सभ्यता एवं संस्कृति से परिचित हैं-इसका महत्त्वपूर्ण कारण अनुवाद है। अनुवाद से अन्य समाज (चाहे यह ग्रामीण हो या शहरी, आंचलिक हो या नागरी, स्वदेशी हो या विदेशी) की सभ्यता और संस्कृति से परिचय पाना सहज सुलभ हो जाता है। बहुभाषी राष्ट्र में समाज को एक-दूसरे की सभ्यता और संस्कृति का परिचय अनुवाद से ही होता है। प्रत्येक समाज को दूसरे समाज के सांस्कृतिक विचार, खान-पान, तीज-त्यौहार, व्रत-उपवास, पूजा-पाठ, वेशभूषा और सामाजिक विधि-विधान का परिचय अनुवाद द्वारा ही संभव हो पाता है।

विदेशी समाज-संस्कृति से परिचय और समन्वय स्थापित करने की दृष्टि से भी अनुवाद की एक सुदीर्घ परंपरा नजर आती है। इस संदर्भ में एशिया में, बौद्ध धर्म और भारतीय संस्कृति के प्रसार में भारतीय ग्रंथों के अनुवाद की विशेष भूमिका रही है। इसके माध्यम से ही सुदूर पूर्व और दक्षिण-पूर्व के देशों में भारतीय धर्म और दर्शन का प्रसार हुआ तथा भारतीय ग्रंथों के अनुवाद ने अरबी संस्कृति को प्रभावित किया। वहीं, दूसरी ओर, अरबी संस्कृति ने भी भारतीय संस्कृति को प्रभावित किया। किसी भी राष्ट्र की सभ्यता, संस्कृति एवं समाज का परिचायक उस राष्ट्र का साहित्य होता है। साहित्य के द्वारा ही संस्कृति और अन्य भाषी समाज उसके अनुवाद के द्वारा ही समझ पाता है। अपने देश के संदर्भ में हम 'रामायण' और 'महाभारत' को ले सकते हैं जिसे पढ़कर दूसरे देश या समाज के लोग हमारी प्राचीन सभ्यता और संस्कृति से समन्वय स्थापित कर सकते हैं। इसी तरह प्रेमचंद का 'गोदान' स्वतंत्रतापूर्व भारतीय किसान जीवन का जीवंत दस्तावेज है जिसे विदेशी लोग अनुवाद के द्वारा ही पढ़कर उस समय की सभ्यता और संस्कृति को समझ सकते हैं। आज संचार माध्यमों का प्रसार देशों की दूरियों को खत्म कर सामाजिक सांस्कृतिक गतिविधियों से एक-दूसरों को प्रभावित कर रहे हैं, आपस में इनका आदान-प्रदान कर रहे हैं। ऐसे में यह कहना अनुचित न होगा कि अनुवाद सामाजिक-सांस्कृतिक समन्वय का महत्त्वपूर्ण साधन है।

3.3.2 राष्ट्रीय एवं भावात्मक एकता का सेतु

राष्ट्रीय एवं भावात्मक एकता वर्तमान काल की अनिवार्य आवश्यकता है। भारत जैसे बहुप्रांतीय राष्ट्र में अनेक भाषा-भाषी बसे हुए होने के कारण उनमें अनेकरूपता मिलना स्वाभाविक ही है। जाति-वर्ग व्यवसाय, भाषा तथा प्रदेश आदि भिन्न-भिन्न होने के कारण हमारे यहां एकता की अपेक्षा अनेकता ही परिलक्षित होती है। इस अनेकता के कारण हमारे राष्ट्र में बहुत बार बड़े-बड़े प्रवाद खड़े हुए हैं। स्वतंत्रता गंवानी पड़ी है। कहना न होगा इससे हमारे राष्ट्र को हानि ही हुई है। फलस्वरूप आज अनेकता में एकता स्थापित कर राष्ट्रीय एवं भावात्मक एकता को बढ़ावा देना हमारी आवश्यकता बन गई है। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक विभिन्न भाषा-भाषियों में परिव्याप्त अनेकताओं के मध्य प्रवाहित एकता की धारा की समझ के विकास में अनुवाद की सर्वाधिक उपादेयता है। अनुवाद, भारतीय जनमानस को 'स्वभाषा' के प्रति लगाव और क्षेत्रीयतावाद जैसी संकीर्ण भावनाओं से मुक्त करके उनमें एकता और समानता की उच्च भावना का संचार करता है। भारतीय भाषाओं में रचित साहित्य की परंपरा इस तथ्य का उद्घाटन करती है कि सभी भाषाओं में मूलतः भावात्मक एकता ही है। उत्तर भारत में जहां गोस्वामी तुलसीदास ने 'रामचरित मानस' लिखी वहीं असमिया में शंकरदेव, तमिल में कंबन, उड़िया में लराम दास, मराठी में एकनाथ, नेपाली में भानुदत्त और मलयालम में एषुत्तच्छन भी राम की महिमा का बखान अपनी लेखनी से कर रहे थे। इसी तरह सूरदास ने जहां उत्तर भारत में कृष्ण की बाललीला और रासलीला का चित्रण किया वहीं कन्नड़ में कनकदास, उड़िया में जगन्नाथ दास बंगला में चंडीदास, गुजराती में नरसी मेहता, तेलगू में पोतन्ना भी कृष्ण की महिमा का बखान कर रहे थे।

एक प्रदेश के समाज, साहित्य एवं संस्कृति आदि को दूसरे के लोग अनुवाद के माध्यम से ही समझ सकते हैं। अनुवाद ही उनके बीच की दूरी को पाट सकता है। इसी से भाषिक वैभिन्न की दरार को भी खत्म किया जा सकता है। भावात्मक एकता से मानवता की रक्षा, मानव जाति का कल्याण और सहिष्णुता का संवर्द्धन होने में मदद मिलती है जो अनुवाद के माध्यम से संभव है। डॉ. रामचंद्र प्रसाद का कथन उपयुक्त लगता है- "विभाजन से उत्पन्न हुई खाई को पाटने तथा भिन्न-भिन्न संस्कृतियों के भावात्मक एवं राष्ट्रीय एकीकरण के लिए अनुवाद एक असाधारण पुल बन गया।" अनुवाद से प्रत्येक समाज तथा राष्ट्र में आपसी संस्कृति को समझा जा सकता है। इससे एक-दूसरे में प्रेम-भाव पनपता और पुष्ट होता है। डॉ. शंकर दयाल शर्मा जी का मत है कि- "अनुवाद के जरिए हम एक भाषा के साहित्य को दूसरी भाषा में उपलब्ध करा कर एक-दूसरे की संस्कृति को समझाने का रास्ता खोलेंगे। जिससे देश की भावात्मक और राष्ट्रीय एकता मजबूत होगी।" तात्पर्य बिल्कुल स्पष्ट है कि राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय और सामाजिक स्तर पर भावात्मक एकता को मजबूत करने तथा उसकी स्थापना कर उसे सामाजिक उपयोगिता से जोड़ने के सेतु के रूप में अनुवाद की प्रासंगिकता असाधारण है।

3.3.3 मानव मूल्यों की प्रतिष्ठा और प्रसार

मानव को सच्चे अर्थों में मानव बनाने का श्रेय उन उदात मूल्यों को है, जिनके माध्यम से वह अपना सात्विक जीवन बिता रहा है। वस्तुतः किसी भी राष्ट्र का मूल्यांकन वहां के जन-समाज के आचरणगत मूल्यों के आधार पर ही होता है। प्रत्येक राष्ट्र की एक परंपरागत संस्कृति होती है, जिसका सृजन उन मूल्यों के आधार पर होता है जिन्हें वहां के महापुरुषों ने अपने जीवन में अपनाया। वस्तुतः उन मूल्यों के और उनके माध्यम से ही उनका चरित्र एवं व्यक्तित्व गौरवमय बनकर स्वर्णाक्षरों में अंकित हुआ है। किसी भी देश की भौतिक प्रगति का भी महत्त्व है, लेकिन भौतिक प्रगति को उस देश का शरीर कहा जा सकता है, जबकि उसमें प्राण-तत्व का संचार करने वाले मानव-मूल्य ही हैं। इससे किसी भी व्यक्ति, जाति, समाज, देश व राष्ट्र के मानव-मूल्यों का महत्त्व स्पष्ट हो जाता है। मानव मूल्य का प्रधान उद्देश्य है मानव का विकास, मानव की उन्नति ओर मानव का हित। वस्तुतः मानव-मूल्य ही मानव के उत्कर्ष और भलाई का एक महत्त्वपूर्ण तत्व है। इस मानव-मूल्य की प्रतिष्ठा और प्रसार के लिए अनुवाद एक महत्त्वपूर्ण स्रोत है। भारतीय संदर्भ में लें तो 'महाभारत' और 'रामचरितमानस' मानवीय मूल्य को प्रतिष्ठित करने वाले ग्रंथ हैं। लेकिन इनकी भाषा संस्कृत और अवधी है। यदि कोई आज का व्यक्ति इन दोनों भाषाओं को नहीं जानता है या इसे कोई विदेशी व्यक्ति पढ़ना चाहता है तो उसे नहीं पढ़ पाएगा। यही अनुवाद की आवश्यकता पड़ती है। आज 'महाभारत' और 'रामचरितमानस' का अनुवाद कई भाषाओं में हुआ है। जिससे भारतीय मानवीय मूल्य विदेशों में समन्वित हो रहे हैं। इसी तरह बाइबिल तो संसार की अधिकतर भाषाओं में अनूदित है, कुरान को भी पश्चिम की कई भाषाओं में अनूदित किया गया है। बौद्ध

धर्म का प्रचार-प्रसार तो अनुवाद के द्वारा ही फलीभूत हुआ है। आज बौद्ध धर्म का प्रचार चीन, श्रीलंका, जापान तथा पूर्व एशिया में पर्याप्त हुआ है। इसी तरह आज कृष्ण के चारित्रिक मूल्यों की प्रतिष्ठा न केवल भारत में बल्कि पूरे विश्व में देखने को मिलती है। यदि सूरसागर का अनुवाद नहीं हुआ होता तो शायद सूरदास पूरे भारत में भी इतने प्रचलित नहीं हुए होते। मानवीय मूल्य को इस विशाल भूतल पर प्रतिष्ठापित करना मानव के उन्नयन के लिए आवश्यक है इसमें कोई संदेह नहीं, लेकिन इस प्रयोजन की पूर्ति के लिए अनुवाद का ही आश्रय लेना पड़ता है। आज अनुवाद ही एक ऐसा साधन है जो विविध देशों में दुनिया के कोने-कोने में मानवीय मूल्य की प्रतिष्ठा और प्रसार हेतु उपयोग में लाया जा सकता है।

3.3.4 आधुनिक वैचारिक विनिमय

प्राचीन काल में अनुवाद सर्जनात्मक साहित्य तक ही सीमित था, परंतु आज अनुवाद हमारे जीवन-व्यवहार की वस्तु है। विभिन्न राष्ट्रों की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विरासत के विचारों का आदान-प्रदान 'अनुवाद' द्वारा ही संभव हुआ है। अनुवाद की उपादेयता एवं प्रासंगिकता आज के वैचारिक विनिमय के लिए अत्यंत आवश्यक है। भारत की विभिन्न भाषाओं में रचित भारतीय साहित्य के इतिहास की सार्वभौमिकता को सिद्ध करने के लिए तथा इसमें अपने नये विचारों से दूसरों को उस संदर्भ में बताने के लिए भी अनुवाद का आश्रय लेना पड़ता है। विश्व में मानवीय ज्ञानात्मक एवं भावात्मक संवेदनाओं को बदलने में अनुवाद कारगर सिद्ध हुआ है, चाहे वैचारिक आदान-प्रदान की चेतना से सामाजिक या राजनैतिक वैचारिकता में परिवर्तन की बात हो या आधुनिक नवजागरण में पश्चिम के नए ज्ञान-विज्ञान से हमारे ज्ञान और चेतना को विकसित करने की बात हो।

आज देश-विदेश में हो रहे अधुनातन शोधों को, उसके निष्कर्षों को, मूल्यों को, राष्ट्र-विशेष की धारणाओं-अवधारणाओं को मानव समुदाय तथा जन-सामान्य के हितार्थ अनुवाद से ही फैलाया जा सकता है। अनुवाद के कारण ही एक देश दूसरे देश के सांस्कृतिक, सामाजिक, बौद्धिक, भौगोलिक तथा राजनैतिक विचारों को जानने लगे हैं। अनुवाद से दो देशों में बौद्धिक तथा भावात्मक निकटता बढ़ती जा रही है, एक दूसरे विचारों का आदान-प्रदान हो रहा है, संपर्क बढ़ रहे हैं, एक-दूसरे के अंतःकरण तक पहुंचना तथा एक-दूसरे के सुख-दुख में सम्मिलित होना संभव हो रहा है। आज दुनिया के किसी भी कोने में, किसी भी देश में यदि बाढ़ का प्रकोप, आंधी, महामारी, सुनामी, अकाल तथा भूकंप जैसे अनेक बुरे प्रसंगों में अन्यान्य देशों से तुरंत जो सहायता पहुंचायी जाती है, वह अनुवाद का ही सुफल है। क्योंकि प्रकोपग्रस्त देश की हालत के समाचार दुनिया के सभी देशों में अनुवाद के जरिए ही मालूम हो पाते हैं। मिस्र की क्रान्ति जो अठारह दिनों तक चली और उसमें वहां के राष्ट्रपति मुबारक के खिलाफ जो इतना जनाक्रोश सड़कों पर उतरा और देश के बाहर अन्य देशों से भरपूर समर्थन मिला उसे भी समाचार चैनलों द्वारा सभी देशों में अनुवाद के द्वारा ही बताया गया। निश्चय ही अनुवाद व्यक्ति-व्यक्ति के बीच दूरियां मिटाने का महत्त्वपूर्ण साधन है।

3.3.5 ज्ञान-विज्ञान तथा तकनीक-प्रौद्योगिकी का आदान-प्रदान

अनुवाद कार्य का आरंभ ही आदान-प्रदान के प्रयोजन से हुआ है। सहकार, सहयोग तथा सहजीवन हर समाज तथा राष्ट्र की भलाई के लिए आदान-प्रदान आवश्यक है। आदान के लाभ से हम तभी लाभान्वित हो सकते हैं जब हम प्रदान कर सकते हैं। ज्ञान-विज्ञान तथा तकनीकी प्रौद्योगिकी की अधुनातन सामग्री का आदान-प्रदान अनुवाद से ही सम्भव होता है। आज का युग ज्ञान-विज्ञान, तकनीकी तथा प्रौद्योगिकी का युग है। इसके बिना कोई देश आगे नहीं बढ़ सकता। ज्ञान-विज्ञान की बढ़ती हुई आवश्यकताओं एवं नित्य नए-नए अनुसंधानों ने मानव-जीवन को सहज बनाने की दिशा में महत्त्वपूर्ण प्रयास किए हैं और निरंतर उन्नतशील प्रौद्योगिकी एवं शोध-विकास ने विज्ञान को बहुआयामी स्वरूप प्रदान किया है। संपूर्ण विश्व में ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में हो रही संवृद्धि और अधुनातन जानकारी आदि को अन्य भाषाओं में अनुवाद के ही माध्यम से ही जाना जाता है। दूसरों के ज्ञान-भंडार से परिचित होने पर हमारे चिंतन की प्रौढ़ता एवं परिपक्वता प्राप्त होती है इसीलिए इस ज्ञान-विज्ञान तथा तकनीकी-प्रौद्योगिकी के परस्पर आदान-प्रदान की आवश्यकता के परिणामस्वरूप अनुवाद की महत्ता सर्वमान्य एवं सर्वस्वीकार्य हुई है।

विकसित और विकासशील देशों में इस प्रकार के अनुवाद की बड़ी आवश्यकता है। विकसित देशों ने इस दिशा में बहुत उन्नति की है। हमारे यहां भी कार्य प्रारंभ हो चुका है। वैज्ञानिक अनुवाद अपने देश में विदेशी भाषाओं से भारतीय

भाषाओं में तथा इनसे अंग्रेजी में करने की संभावना है। इसमें स्रोत भाषा में व्यक्त वैज्ञानिक एवं तकनीकी सूचनाओं का लक्ष्य भाषा में इस प्रकार अंतरण करना कि मूल की सूचनाएं अनुवाद में भी नष्ट न हों। वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की बुनियाद सा बन गया है। इस प्रकार के अनुवाद में 'कैसे' की अपेक्षा 'क्या' का अधिक महत्त्व है। यहां विषय मुख्य है और शैली गौण है। अध्येताओं की रुचि मात्र उसमें दी हुई सूचनाओं संकल्पनाओं तथा तथ्यों तक ही सीमित रहती है। दिल्ली में स्थित वैज्ञानिक अनुवादकों का संगठन (ISTA) और यूरोप के वैज्ञानिक अनुवादकों के संगठन में विचारों का आदान-प्रदान परस्पर होता रहता है।

किसी युग में विज्ञान एवं तकनीकी और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत अग्रणी रहा है। अनेक देशों में भारत ने विज्ञान तत्वों के प्रकाशन में नेतृत्व किया था। वेदों ने सोना जैसी धातुओं की चर्चा में रसायन-विज्ञान के बुनियादी तत्व बताए हैं। संख्याएं और दशमलव प्रणाली के आविष्कार के रूप में भारत ने अरब को गणित में पथ-प्रदर्शन किया था। ज्योतिष, खगोल, भू-गर्म विज्ञान, चिकित्सा आदि अनुवाद से पूरे विश्व में फैले हुए हैं। वे युगों में बदलते रहे और आज वे अनूदित होकर हमारे पास आ रहे हैं। अनुवाद से ही हम वैश्विक प्रौद्योगिकी, तकनीकी और वैज्ञानिककता को समझ सकते हैं।

3.4 भूमंडलीकरण की प्रक्रिया और अनुवाद की उपादेयता

नई विश्व-व्यवस्था के रूप में वैश्वीकरण की चर्चा चारों ओर सुनाई पड़ रही है। आज विश्व "विश्वग्राम' में परिवर्तित होता जा रहा है, दुनिया सिकुड़ती जा रही है। भूमंडलीकरण आज की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक चर्चाओं का केन्द्र बना हुआ है। भूमंडलीकरण की प्रक्रिया का संबंध विश्व में फैले विभिन्न आर्थिक कार्यकलापों का कार्यात्मक दृष्टि के एकीकरण से है राष्ट्रीय सीमाओं को लांघकर, विकसित हो रहे राजनीतिक और आर्थिक सहयोग से है। राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं का यह भूमंडलीय एकीकरण वस्तुओं के उत्पादन, उपभोग एवं व्यापार के क्षेत्र में घटित हो रहा है। इसका संबंध संसार के विभिन्न राष्ट्रों की भौगोलिक सीमाओं के आर-पार आर्थिक लेन-देन की प्रक्रियाओं एवं उनके प्रबंधन के प्रवाह तथा आर्थिक गतिविधियों के आयोजन से है।

भूमंडलीकरण की प्रक्रिया में उदारीकरण को अपनाया जाता है। उदारीकरण के रूप में निजीकरण, सरकारी नियंत्रणों में कमी, सरकारी व्यय में कटौती, उद्योगों से नियंत्रण को कम करने, लाइसेंस के तौर-तरीकों को आसान बनाने एवं प्रतियोगिता को प्रोत्साहन देकर उद्योगों की प्रतियोगी क्षमता एवं दक्षता में वृद्धि करना जैसे आर्थिक सुधार शामिल है। अनुवाद स्वयं में भूमंडलीकरण की प्रक्रिया है। यह केवल आर्थिक क्षेत्र तक ही सीमित न रहकर सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और इन सबसे बढ़कर भावात्मक स्तर पर एकीकरण की प्रक्रिया है। अनुवाद भिन्न-भिन्न संस्कृतियों के भावात्मक एकीकरण का अद्वितीय सेतु है। यह मानव के लिए मनोवैज्ञानिक अनिवार्यता है। अनुवाद मानव-चेतना के अद्वैत को उद्घाटित करता है। यह आर्थिक-राजनीतिक, सामाजिक-सांस्कृतिक आदि कारणों से विद्यमान भिन्नता में मानव-चेतना की नैसर्गिक एकता स्थापित करने में सहायता करता है। आज साहित्य, दर्शन, विज्ञान आदि ज्ञान-विज्ञान की विभिन्न शाखाओं-प्रशाखाओं में अनुवाद कार्य हो रहे हैं। अधुनातन और अद्यतन ज्ञान-विज्ञान अनुवाद से स्पंदित होकर इतर भाषा-भाषी तक पहुंच पाता है। ऐसे में यह कहना कोई अतिश्योक्ति नहीं कि वैज्ञानिक अनुसंधान होने पर भी अनुवाद के अभाव में विश्व सिमट कर एक ग्राम, एक परिवार जैसा न होता। इसलिए अनुवाद वह अमोघ शस्त्र है जो भूमण्डलीकरण को सही अर्थवत्ता प्रदान करता है।

भूमंडलीकरण में विश्व बाजार को एक ही क्षेत्र में देखने का भाव निहित है। किन्तु जहां विभिन्न राष्ट्रीय-क्षेत्रीय भाषाएं इसके मार्ग में बाधा पहुंचाती है, वहां अनुवाद विभिन्न भाषाओं के बीच सेतु की भूमिका निभाते हुए भाषायी दीवारों को ध्वस्त करता चलता है। अगर भूमंडलीकरण, व्यापार के लिए देश-काल की दूरियों को मिटाने की युक्ति है तो अनुवाद उसे मूर्त रूप प्रदान करने का साधन। वैश्विक, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय, प्रादेशिक आदि विभिन्न स्तरों पर समाजों में परिव्याप्त भाषा-संबंधी भेद के बावजूद परस्पर संवाद का समाधान है- अनुवाद। अनुवाद आज के भूमंडलीकृत युग की अनिवार्यता है। बाजारवाद के कारण पनप रही उपभोक्ता संस्कृति, जनसंचार माध्यमों से पल्लवित हो रही है और इसमें अनुवाद एक महत्त्वपूर्ण आयाम लिए हुए चल रहा है। आजकल टी.वी. चैनलों के कार्यक्रमों में अनुवाद का सहारा लिया जाता है। यह अनुवाद हमें डबिंग, सब टाइटलिंग और वॉयस ओवर आदि के रूप में साफ नजर आता है। डिस्कवरी चैनल, कार्टून नेटवर्क, पोगो चैनल आदि पर प्रसारित होने वाले हिंदी कार्यक्रम वस्तुतः अनुवादों के उदाहरण हैं। इसी तरह

'टाइटैनिक', 'जुरासिक पार्क', 'एनाकोंडा' और विश्व रक्षक जैसी विदेशी फिल्में डब होकर हिंदी दर्शकों तक पहुंची हैं। भूमंडलीकरण के इस दौर में 'विज्ञापन' प्रचार का सशक्त तरीका है। इसी तरह आज पर्यटन में रोजगार दिखाई देने लगा है। पर्यटन के अतिरिक्त ड्रेस डिजाइनिंग, फैशन टेक्नोलोजी इंटीरियर डेकोरेशन आदि क्षेत्र भी अनुवाद के माध्यम से भूमंडलीकृत हो रहे हैं। भाषा के विकास की दृष्टि के अनुवाद की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है, इस तरह अनुवाद मानव समाज को वास्तव में एक करने का कारगर साधन-उपकरण हैं और भूमंडलीकरण की अवधारणा में भले ही आर्थिक संदर्भों में ही सही, लेकन मानव-समाज की इसी एकता का भाव निहित है।

3.5 अनुवाद : रोजगार का साधन

अनुवाद आज रोजी-रोटी की दिशा में अत्यंत कारगर सिद्ध हो रहा है। वरिष्ठ या कनिष्ठ अनुवादक, तत्काल भाषांतर कर्त्ता, हिंदी अधिकारी, अंग्रेजी या हिंदी अध्यापक, प्राध्यापक, भाषा-निदेशक, उपनिदेशक, सहायक निदेशक, राजभाषा अधिकारी, समाचार वाचक, संवाददाता, संपादक, सह-संपादक, उप संपादक, सहायक संपादक, विज्ञापन लेखक, कम्प्यूटर अनुवादक, बैकं अधिकारी आदि अनेक पदों पर अनुवादकों की नियुक्तियां होती हैं या हो सकती हैं। केन्द्र सरकार या राज्य सरकार के कार्यालयों में, बैंकों में, हस्पतालों में, रेलवे, एयर लाईंस, पर्यटन, संसद विधानसभाओं में, राजदूतावासों में, पत्र-पत्रिकाओं के कार्यालयों में, अकादमियों में, प्रकाशन संस्थानों में, सरकारी प्रेस आदि में, रेडियो, दूरदर्शन, आदि के कार्यालयों में विज्ञापन एजेंसियों में, अभिवादन पत्र बनाने वाली संस्थाओं में, शिक्षण-प्रशिक्षण संस्थाओं में, विज्ञान-तकनीक तथा प्रौद्योगिकी से संबद्ध कार्यालयों में, अनुवाद ब्यूरों में, भाषा संबंधी निदेशालयों तथा संस्थाओं में, विश्वविद्यालयों, स्कूलों तथा जन संपर्क आदि कार्यालयों में, होटलों में, प्रदर्शनियों में संग्रहालयों में, पुस्तकालयों में, नाट्य संस्थानों में, खेलों में, बाजार भावों में, वित्त-वाणिज्य तथा अर्थशास्त्र में, बीमा क्षेत्र मे, कोश विज्ञान में, पारिभाषिक शब्दावली बनाने वाली संस्थाओं में तथा साहित्य आदि अनेक क्षेत्रों में अनुवाद की उपादेयता एवं प्रासांगिकता असंदिग्ध है। लाखों लोग इन क्षेत्रों में अनुवाद के माध्यम से कार्य करते हुए धनार्जन कर रहे हैं या रोजी-रोटी कमा रहे हैं। सिनेमा भी आज अनुवाद का बहुत बड़ा मंच बन गया है। टेलीविजन के अनेक चैनल भी आज अनुवाद के माध्यम से ही अपने कार्यक्रम चला रहे हैं। यही नहीं, निजी ट्रांसलेशन ब्यूरो या एजेंसी खोलकर देश-विदेश की भाषाओं में या भाषाओं का अनुवाद करने या करवाकर उपलब्ध कराने की सेवाएं भी दी जा रही हैं। आज डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, जज, फैशन, डिजाईनर, इंटीरियर डैकोरेटर, आर्किटेक्ट, मनोवैज्ञानिक, बिल्डर आदि भी अनुवाद के माध्यम से अपने व्यवसाय को व्यापक स्तर पर देश-विदेश में फैलाने-बढ़ाने का काम कर रहे हैं।

आज अनुवाद कार्य का मान-सम्मान के साथ मानदेय भी सम्मानजनक हो गया है। अतः स्वांतः सुखाय के लिए किए गए अनुवाद कार्य की प्रासंगिकता तो असंदिग्ध रही है अब 'परिहिताय' तथा 'सर्वजन सुखाय' के लिए किए जाने वाले अनुवाद कार्य भी दुधारू गाय की तरह लाभप्रद सिद्ध होने लगे हैं। अनुवादक यदि शुद्ध संकल्प हो तथा पूरी निष्ठा एवं समर्पण भाव से अनुवाद का कार्य करता है तो देश-विदेश की सैंकड़ों संस्थाएं ऐसे आदर्श तथा मानक अनुवादकों को आजीवन अनुवाद कार्य देने को तैयार बैठी हैं।

3.6 भाषा प्रौद्योगिकी और अनुवाद

संचार माध्यम आज के युग की वह जादुई ताकत है जो हरे को लाल, लाल को सफेद और सफेद को नीला दिखा सकती है। यही वह ताकत है जो सामान्य को विशिष्ट और विशिष्ट को साधारण दिखा सकती है। तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत का वर्चस्व तेजी से बढ़ रहा है। प्रचार-प्रसार माध्यमों का तेजी से हो रहा समाजीकरण तथा जन-मानस पर निरंतर बढ़ रहा कम्प्यूटरीकरण का प्रभाव इसके मूल में हैं। भारत जैसे बहुभाषा भाषी देश में विदेशों से आई कम्प्यूटर विद्या ने प्रारंभ में अपने अंग्रेजी वर्चस्व से आतंकित अवश्य किया, किन्तु भारतीय मनीषा तथा यहां की भाषायी शक्तियों और अनुवाद ने इस चुनौती को शीघ्र ही चुनौती दे डाली। परिणामतः भारत के युवा-मस्तिष्क एवं अनुभवी दिशा-निर्देश ने 'सूचना-प्रौद्योगिकी' का उत्तर 'भाषा-प्रौद्योगिकी' से दिया। दरअसल भाषा प्रौद्योगिकी एक अनुशासनिक विषय है, जिसकी पृष्ठभूमि बीसवीं सदी के उतरार्द्ध के सूचना क्रान्ति से बनी एवं भूमंडलीकरण के प्रभाव से पोषित है। इसमें केंद्रीय घटक भाषा है, जो भाषा विज्ञान से लिया गया है, वहीं प्रौद्योगिकी मूलतः उपभोक्तावादी प्रवृति की मांग की देन

है, जो किसी कार्य को तेजी से करने के आग्रह के भाव की अनुभूति कराता है। गौरतलब है कि 'प्रौद्योगिकी' शब्द के केन्द्र में उद्योग शब्द अंतर्निहित है, जिसका मुख्य उद्देश्य उत्पादन करना होता है, वह भी बड़े पैमाने पर और बड़ी मात्रा में तथा कम समय में।

मानव समाज की दैनंदिन चतुर्दिक बढ़ती आवश्यकताओं ने प्रौद्योगिकी को मानव-सभ्यता के लिए अपरिहार्य बना दिया है। यह मुक्त कंठ से स्वीकार किया जाना चाहिए कि यदि मानव-सभ्यता स्वयं को विकसित या विकासशील होने का दावा कर रही है तो इसका बहुत बड़ा श्रेय पूरी तरह प्रौद्योगिकी पर आधारित सूचना क्रांति को जाता है, परंतु यह ध्यातव्य है कि वैश्विक स्तर पर इस सूचना-क्रान्ति की भाषा अंग्रेजी ही रही है। जबकि विश्व के विभिन्न देशों में असंख्य भाषाओं एवं बोलियों की व्याप्ति की स्थिति में अनेक भाषायी अवरोध हैं। इसी कारण आज के सूचना क्रान्ति के दौर में प्रौद्योगिकी से आत्मीय रिश्ता स्थापित करने की दिशा में अनुवाद अत्यंत सार्थक भूमिका निभा रहा है। अनुवाद से ही शब्दों का, उसमें निहित अर्थ संकेतों का भूमंडलीकरण संभव हुआ है। विश्वफलक पर घटने वाली घटनाओं और गतिविधियों से संबंधित सूचनाओं और आंकड़ों को तत्क्षण और संपूर्णता में पाने की भूख तेज हो गई है। इस भूख को शांत करने में भाषा संबंधी रुकावट को तत्परता से दूर करने में अनुवाद हमारी बहुत मदद करता है। अनुवाद विश्व स्तर पर संवाद का सुगम प्लेटफार्म बनाता है। भाषा प्रौद्योगिकी के नए-नए करिश्में का ज्ञान हमें अनुवाद के जरिए ही पता चलता है। अतः भाषा प्रौद्योगिकी के युग में अनुवाद का महत्त्व स्वतः ही बढ़ गया है।

3.7 तुलनात्मक-साहित्य-अध्ययन में अनुवाद की भूमिका

अध्ययन तथा अनुसंधान आज ज्ञानात्मक क्षेत्र की चरम उपलब्धियां हैं। अब संसार की अनेक भाषाओं के अध्ययन एवं अनुसंधान का लाभ एक दूसरे को हो रहा है। प्रत्येक देश एक-दूसरे के ज्ञानात्मक, विज्ञानात्मक और सृजनात्मक साहित्य के अध्ययन से लाभान्वित हो रहा है। इसके साथ ही एक-दूसरे की साहित्यिक, सामाजिक और वैज्ञानिक आदि सामग्री के तुलनात्मक अध्ययन का एक नया आयाम खुल गया है। अतः राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर तुलनात्मक अध्ययन के द्वारा एक भाषा में रचित भिन्न-भिन्न साहित्यक रचनाओं आदि की अन्य भाषा की रचनाओं के साथ तुलना करना, दो भाषाओं के साहित्य के अंतर्संबंध को व्यक्त करने वाली ऐसी विशेषताओं को उद्घाटित कर पाना संभव हो जाता है जो साहित्य के सामान्य अध्ययन से प्रकाश में नहीं आ पातीं। तुलनात्मक साहित्याध्ययन से साहित्य की एकात्मकता को पहचान पाना और उसे व्यक्त कर पाना संभव होता है। डॉ. नगेंद्र ने अपनी पुस्तक 'तुलनात्मक साहित्य की भूमिका में लिखा है कि 'तुलनात्मक साहित्य' वास्तव में एक प्रकार का अंतःसाहित्य अध्ययन है जो अनेक भाषाओं को आधार मानकर चलता है और जिसका उद्देश्य होता है-

'अनेकता में एकता का संधान।' दो भाषाओं के साहित्यों का तुलनात्मक अध्ययन करते समय लगातार ऐसा प्रतीत होता है कि दो भाषाओं के माध्यम से वस्तुतः एक ही सोच, एक ही संस्कृति को दो अभिव्यक्ति-माध्यमों से प्रस्तुत किया गया है। विभिन्न भाषाओं के आचरण में एक ही वैचारिक धरातल या एक ही जीवन-मूल्य का साक्षात्कार इंगित करता है कि इनके बीच की भिन्नता केवल आवरण की है, आत्मा की नहीं। 'रामचरितमानस' और 'कृतिवास रामायण', विद्यापति, सूरदास और नरसी मेहता की कृष्ण भक्ति, हिन्दी और गुजराती उपन्यास, दिनकर और इकबाल, फणीश्वरनाथ रेणु और सीतानाथ भादुड़ी, हिंदी और पंजाबी संत काव्य, हिंदी और कन्नड़ भक्ति आंदोलन, महादेवी वर्मा और बालमणि अम्मा जैसे न जाने कितनी ही दिशाओं में तुलनात्मक अध्ययन और अनुसंधान का विस्तार हुआ है। इन सभी साहित्याध्ययन के निष्कर्षों पर पहुंच पाना अनुवाद के द्वारा ही संभव है।

साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन हो या तुलनात्मक अनुसंधान दोनों को अस्तित्व का प्रचार-प्रसार अनुवाद द्वारा ही संभव है। आज अनुवाद तुलनात्मक साहित्याध्ययन का प्रधान साधन बन गया है जिससे दो भिन्न-भिन्न भाषाओं में स्थित समानता और विषमता का बोध होता है। अनुवाद के माध्यम से ही साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन नवीन आयाम, नए संदर्भ और नई दिशाएं नियंत्रित होती हैं। अनुवाद के कारण ही एक भाषा के साहित्य और साहित्यकार से, एक राष्ट्र के साहित्य की अन्य राष्ट्रों के साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन की परिकल्पना मूर्तरूप ग्रहण कर पाती है। अनुवाद के द्वारा ही तुलनात्मक अध्ययन की गाड़ी राष्ट्रीय से अंतर्राष्ट्रीय हो पाई तभी तो भारत के कबीर और फ्रांस के रैबेले, मैक्सीम गोर्की और प्रेमचंद, टी.एस., इलियट और अज्ञेय, एजरा पाऊंड और निराला जैसे साहित्यकारों की तुलना हमारे

सम्मुख आ पाई। इस संदर्भ में कहा जा सकता है कि तुलनात्मक अध्ययन को एक व्यापक परिप्रेक्ष्य प्रदान करने की दृष्टि से साहित्यिक अनुवाद का उल्लेख आवश्यक है नहीं तो अरस्तू, प्लेटो, सुकरात, दाँते, वर्जिल, मोपांसा, टॉलस्टॉय, पुस्किन, तुर्गनेव, शेक्सपीयर, शेली, दयानंद, तुलसीदास, रवींदनाथ ठाकुर, बंकिम चंद्र, निराला, प्रसाद, भारतेन्दु आदि को शायद अपने देश या अपने क्षेत्र के अलावा बाहर का कोई नहीं जानता।

3.8 राष्ट्र एवं विश्व विकास में अनुवाद का योगदान

आज हमारा राष्ट्र एवं सारा विश्व अंतर्राष्ट्रीय संपर्क, सद्भाव, सह अस्तित्व तथा सहयोग की कामना कर रहा है ओर उस दिशा में आगे बढ़ रहा है। राष्ट्रीय भाषाओं और संसार की सैंकड़ों भाषाओं में विचारों का आदान-प्रदान अनुवाद से ही संभव हो पा रहा हैं अनुवाद से हम किसी समाज अथवा राष्ट्र के चिंतन से, सामाजिक सरोकार से तथा नैतिक मूल्यों से परिचित हो पाते हैं। इससे दूसरे समाज तथा राष्ट्र का अत्यंत निकटता से परिचय हो जाता है और इसी के परिणामस्वरूप एक-दूसरे के प्रति सद्भावना में वृद्धि होती है। इसी के द्वारा ही हमें विश्व साहित्य के श्रेष्ठ ग्रंथ उपलब्ध होते हैं। वह पूर्वी तथा पश्चिमी और उत्तर तथा दक्षिणी देशों के बीच का पुल बनाता है, प्राचीन तथा नवीन के बीच की कड़ी बनता है। इस समस्त धरती को एक परिवार मान लेने की उदात्त भावना संपूर्ण विश्व में अनुवाद से ही विकसित हो रही है। अनुवाद के कारण संपूर्ण विश्व व राष्ट्र में प्रेम, सेवा, शांति, सद्भाव, मैत्री तथा वैश्वीय एकात्मता के प्रसार में सहायता मिल रही है। विश्व की प्रत्येक भाषा के श्रेष्ठ विचारक, लेखक, चिंतक, राजनेता, दार्शनिक, वैज्ञानिक, पत्रकार, अध्यापक आदि की यह हार्दिक इच्छा होती है उसकी उपलब्धि से, उसके ज्ञान से, उसकी नई-नई स्थापनाओं तथा खोजों से पूरा विश्व लाभान्वित हो। उसे भाषायी बैरियर रोक न सके और वह अपनी उपलब्धियों की कीर्ति के साथ विश्व नभ पर अवस्थित हो सके। इसके लिए वह चाहता है कि उसके प्रदेश का देश-विदेश की अनेक भाषाओं में अनुवाद हो। जिससे संपूर्ण विश्व लाभान्वित हो। 'वसुधैव कुटुम्बकम' की संकल्पना को साकार करके शत्रुत्व, परायापन आदि को नष्ट करना, मनुष्य को जोड़ना तथा विश्व बंधुत्व की भावना का संवर्द्धन करना अनुवाद का परम लक्ष्य है।

वर्तमान संदर्भों में राष्ट्रीय एवं वैश्विक स्तर पर कला, साहित्य, संस्कृति, ज्ञान-विज्ञान, सूचना-तकनीकी, मनोरंजन, खेल आदि की नवीन जानकारियों के लिए अनुवाद कार्य महत्त्वपूर्ण हो गया है। वास्तव में अनुवाद को पूरे विश्व की एक भाषा कहा जा सकता है। मानव को मानव के निकट लाने, संवाद स्थापित करने, मौन तोड़ने की यह भाषा विश्व कुटुम्बकम की भावना को साकार करने का काम करती है। दो देशों, दो राज्यों, दो इकाईयों, दो संस्कृतियों, दो भाषाओं, दो विचारों, दो मूल्यों, दो धर्मों, दो समुदायों को जोड़ने की दिशा में अनुवाद का महत्त्व है जिसे राष्ट्रीय एवं वैश्विक परिदृश्य में देखा जा सकता है।

3.9 सारांश

इस इकाई में आपने पढ़ा कि अनुवाद आज किस तरह राष्ट्रीय एवं वैश्विक परिदृश्य में महत्त्वपूर्ण होता जा रहा है। परिव्याप्ति साहित्यिक क्षेत्र से अलग ज्ञान विज्ञान, प्रशासन, सूचना प्रौद्योगिकी, व्यवसाय, पत्रकारिता, अनुसंधान, प्रतिरक्षा, विधि, न्याय, कला, संस्कृति, चिकित्सा, जनसंचार, भाषा-प्रौद्योगिकी, संपर्क माध्यम आदि विविध क्षेत्रों में हो गई है। इसी तरह यह तुलनात्मक साहित्य के लिए, समाज शास्त्रीय अध्ययन के लिए, ऐतिहासिक-सांस्कृतिक कृतियों के जीणोद्धार के लिए उपयोगी तथा आवश्यक विद्या बन गया है। सूचना-प्रौद्योगिकी के इस युग में दुनियासिमट कर हमारी मुट्ठी में आ गई है। जनसंचार माध्यमों को सशक्त एवं लोकप्रिय बनाने में अनुवाद कार्य की महत्ता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। अब तो मनुष्य अपनी बौद्धिक क्षमता से यंत्रों द्वारा अनुवाद कार्य को संपन्न कर रहा है। आज आपसी सम्पर्क के लिए अंतरिक्ष में घूमते हुए कृत्रिम उपग्रहों से लेकर समूची धरती पर फैले अनेकानेक संचार माध्यमों में अनुवाद का प्रयोग किया जा रहा है। आज हमारे देश या पूरे विश्व में कोई भी व्यक्ति केवल अपनी भाषा द्वारा आगे बढ़ने की नहीं सोच सकता। कहीं न कहीं उसे अनुवाद का सहारा लेना ही पड़ता है। आज पूरे विश्व में अनुवाद रोजगार का प्रधान साधन हो गया है। यह केवल साहित्यिक रूप से नहीं बल्कि व्यवसाय या रोजगार के हर क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण हो गया है। अनुवाद के द्वारा ही हम पूरे विश्व में मानव मूल्यों की प्रतिष्ठा एवं सामाजिक सांस्कृतिक समन्वय स्थापित

कर पाते हैं। यह आज आधुनिक विचार-विनिमय का प्रमुख साधन बन गया है। इस तरह जीवन की हर दशा में अनुवाद की महत्ता प्रभावित हो चुकी है। इस तरह कहा जा सकता है कि वर्तमान परिदृश्य में राष्ट्रीय एवं वैश्विक परिप्रेक्ष्य में अनुवाद ने हमारे सोच व व्यवहार के प्रत्येक स्तर पर हमें आश्रित कर लिया है, जिससे उसकी प्रासंगिकता खुद-ब-खुद तय हो जाती है।

3.10 अभ्यास के लिए प्रश्न

1. वर्तमान संदर्भ में अनुवाद क्यों महत्त्वपूर्ण है?
2. अनुवाद के साहित्येतर क्षेत्र कौन-कौन से हैं?
3. सामाजिक एवं सांस्कृतिक समन्वय में अनुवाद की आवश्यकता पर प्रकाश डालिए।
4. आधुनिक वैचारिक विनियम अनुवाद के बिना सफल नहीं हो सकता? इस पर विचार कीजिए।
5. अनुवाद आज रोजगार का प्रमुख साधन कैसे बन गया है? विचार कीजिए।
6. भूमंडलीकरण की प्रक्रिया में अनुवाद आज किस तरह उपयोगी है? प्रकाश डालिए।
7. तुलनात्मक साहित्य में अनुवाद का महत्त्व बताईए।

3.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. भाटिया, कैलाश चंद्र, *अनुवाद कलाः सिद्धांत और प्रयोग*।
2. गोस्वामी, कृष्ण कुमार, *अनुवाद विज्ञान की भूमिका*।
3. सिंह, अनुज प्रताप, *अनुवाद सिद्धांत एवं व्यवहार*।
4. नगेन्द्र, *अनुवाद विज्ञानः सिद्धांत एवं अनुप्रयोग*, दिल्ली, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय।
5. पालीवाल, रीतारानी, *अनुवाद प्रक्रिया*, दिल्ली, साहित्य निधि।
6. Nida, E.A. and Tuber, C., *The Theory and Practice of Translation.*
7. Catford, J.C., *A Linguistic Theory of Translation.*

इकाई 4 अनुवाद के उभरते मुद्दे

इकाई की रूपरेखा

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 अनुवाद के उभरते मुद्दे

4.2.1 अनुवाद : एक सांस्कृतिक रूपांतरण

4.2.2 अनुवाद : एक भाषिक अन्तरण

4.2.3 अनुवादक की दृश्यता

4.2.4 अनुकूलन (Adaptation) के रूप में अनुवाद

4.2.5 मशीनी अनुवाद

4.3 अनुवाद की समस्याएं

4.4 सारांश

4.5 अभ्यास के लिए प्रश्न

4.6 कुछ उपयोगी पुस्तकें

4.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप जान सकेंगे कि-

- अनुवाद के उभरते मुद्दे कौन से हैं।
- अनुवाद की समस्याओं से परिचित हो सकेंगे।

4.1 प्रस्तावना

1970 के अंत में अनुवाद को गंभीरता से लिया जाने लगा। अब वह अवैज्ञानिक महत्त्व का नहीं रहा। 1980 में इसका सैद्धांतिक और व्यावहारिक रूप निरंतर विकसित होता रहा। 1990 में आखिर अनुवाद ने अपना स्वतंत्र अस्तित्व पा ही लिया। यह दशक व्यापक विस्तार का था। अनुवाद को मानवीय आदान प्रदान के लिए आवश्यक कर्म के रूप में स्वीकार कर लिया गया। इस समय में होने वाले इलेक्ट्रोनिक मीडिया के प्रचार ने अंतरसांस्कृतिक संपर्कों को बढ़ावा दिया। दुनिया भर में सांस्कृतिक मूल्य को पुनर्जीवित करने और पहचान को ढूंढने से जुड़े पक्षों को खोजने की रुझान जाग रही है। अनुवाद इस खंडित होते संसार को समझने में मददगार साबित हो रहा है। माइकेल कोनिन ने अनुवादक को एक यात्री के रूप में माना है जो एक स्रोत से दूसरे में यात्रा करता है। 21वीं सदी निश्चित रूप से स्थान और समय की दृष्टि से निरंतर गतिशील है और अनुवाद इसे समझने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है।

अनुवाद में बढ़ती रुचि के कारण अनुवाद अध्ययन की दिशा में बहुत परिवर्तन हुआ है। विद्वानों ने इस दिशा में बहुत अनुसंधान किया है। निश्चित रूप से अनुवाद हमारे वैश्विक ज्ञान का आकार दे रहा है भविष्य के लिए तैयार कर रहा है। यह सैद्धान्तिक संदर्भ में बहुआयामी और प्रयोजन ने बहुमुखी बन गयाहै। इसकी सार्थकता और व्यावहारिक प्रयोजन सामने आये हैं। अध्ययन की दिशाओं के आधार पर अनुवाद के विषय में जानना एक आवश्यकता बन गया है। आगे हम अनुवाद अध्ययन के उभरते मुद्दों पर विचार करेंगे।

4.2 अनुवाद के उभरते मुद्दे

अनुवाद के द्वारा मृत साहित्य और संस्कृति का पुनरुद्धार होता हें जो सेफीन बोमर का मानना है कि 'अनुवाद में मूल पाठ जीवित रहता है। वह मूल रचना का प्रभावशाली परलोक का जीवन है, दूसरी भाषा में एक नया मूल है। उदाहरण के लिए अनुवाद न होता तो भूली हुई प्राचीन ग्रीस क्लासिकी महिला कवयित्रियों के बारे में कोई क्या जान पाता?

भारत में अनुवादों का प्रारंभ संस्कृत ग्रंथों से हआ था। इन अनुवादों ने धर्म, दर्शन, काव्य शास्त्र आदि क्षेत्रों को एक वर्ग-विशेष के आधिपत्य से मुक्त कर दिया और इस प्रकार एक संपूर्ण युग पुनः गठित हो गया।

4.2.1 अनुवाद : एक सांस्कृतिक रूपांतरण

रेनारो पोगिओली का मानना है कि 'एक राष्ट्रीय साहित्य अपने अनुवादों की संख्या तथा उत्कृष्टता के माध्यम से अपने नवजागरण तथा नवजीवन की शक्ति को व्यक्त करता है। कभी कभी वह उन्हीं के प्रयासों से जीवित रह पाता है।' इसलिए वे साहित्य के लिए अच्छे लेखक से ज्यादा अच्छे अनुवादक की जरूरत महसूस करते हैं। यही नहीं देश की प्राचीन सांस्कृतिक परंपरा का मूल भी उस युग के अनुवादों में सुरक्षित रहता है। भारतीय इतिहास की सामग्री शिलालेखों, ताम्रपत्रों, स्तम्भों आदि में भी मिलती है। इनकी भाषा संस्कृत, पालि, प्राकृत अथवा मिश्रित है। अनुवाद के द्वारा अधिकांश सामग्री आधुनिक भाषाओं में अनूदित और उपलब्ध है। यही स्थिति विदेशी पर्यटकों और लेखकों के वृतांतों की रही, जो मूलतः ग्रीक, रोमन, चीनी तथा तिब्बती भाषाओं में मिलते हैं। आधुनिक भाषाओं में इनके अंशों के अनुवाद तत्कालीन समाज और संस्कृति की विशेषताओं से परिचित करवाते हैं। इतिहासकारों के अनुसार लगभग 200-300 ई. पूर्व. में भारतीय लोककथायें पश्चिम की ओर गयी, उन्हें यूरोपीय साहित्य में स्थान मिला। उनके साथ हमारी संस्कृति और सामाजिकता भी वहां पहुंची होगी। सन् 300 से 700 ई. के समय में ब्राह्मणों के विद्यालयों और बौद्ध मठों में आने वाले चीनी और दक्षिण-पूर्व एशियाई विद्यार्थी अनुवाद की सहायता से ही भाषिक अंतर को दूर करते होंगे। सन् 900 से 1300 ई. तक के समय में प्राचीन ग्रंथों पर भाष्य लिखे गये जिनमें तात्कालिक प्रथाओं की चर्चा मिलती है। ये अनुवाद सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ के महत्त्व को घोषित करते हैं।

18वीं शताब्दी से यूरोप में निरंतर सीमा पार से लोगों का आवागमन चलता रहा। बहुत से विद्वान आगे की शिक्षा के लिए विदेश जा रहे थे। विभिन्न देशों के अर्थशास्त्रियों, विचारकों, दार्शनिकों और राजनीतिज्ञों के बीच विचारों का आदान प्रदान चल रहा था और चल रहा है। इससे सामाजिक सम्पर्क की स्थापना हुई। इसके साथ अनुवाद का महत्त्व बढ़ने लगा। अनुवाद के इतिहास पर हुए अनुसंधानों से स्पष्ट हुआ कि अनुवाद ने अतीत में हमारे विश्व संबंधी ज्ञान को आकार दिया, अब वह हमारे भविष्य को नया स्वरूप देने के लिए तैयार है।

ज्यों-ज्यों अनुवाद संबंधी रुझान बढ़ रहा है। त्यों-त्यों अनुवाद के सामाजिक-सांस्कृतिक पक्ष का महत्त्व भी बढ़ रहा है। पहले विद्वानों का ध्यान भाषा और जीवन पद्धति के बीच के संबंध को केन्द्र में रखता था पर झुकाव भाषा विज्ञान की तरफ था। अब सांस्कृतिक पक्ष पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है। अनुवाद और समाज के बीच एक वैचारिक संबंध निर्मित हो गया है। अनुवाद अध्ययन से जुड़ी पुस्तकों के अलावा स्वयं अनुवादक भी सामाजिक तत्व की विवेचना कर रहे हैं। 1980 में निर्णयात्मक सैद्धांतिक कदम के द्वारा स्रोत भाषा के पाठ के अनुवाद में वातावरण पर ध्यान दिया गया पर फिर भी विवेचना के समय पहले स्थान पर औपचारिक विवेचना रही, जबकि सामाजिक दृष्टि को दूसरे नंबर पर रखा गया। आलोचक और अनुवादक भी अनुवाद और समाज के संबंध का मूल्यांकन करते समय इस प्रश्न से कतरा रहे थे। किसे अधिक महत्त्व दिया जाना चाहिए अनुवाद की गुणवत्ता को या उसके सामाजिक महत्त्व को? किन्तु नये समाजशास्त्री लैटिन और ग्रीक के अलावा आधुनिक विज्ञान की भाषाओं-अंग्रेजी, फ्रेंच और जर्मन-में भी पारंगत थे और शायद यह जान गये थे कि राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर अनुवाद सामाजिक संपर्क का एक प्रमुख माध्यम था। इसीलिए उसे नये विषयों में समाहित किया जा सकता है।

अनुवाद-विषयक साहित्यिक विवेचन के जो प्रचलित मानदंड थे, वे अब बदल गये हैं। सबसे अधिक उत्साह वर्धक नयी प्रवृत्ति है-अनुवाद का स्वतंत्र विषय के रूप में विस्तार। 1990 में अनुवाद के बारे में दो विरोधी मत सामने आये:

1. एक के अनुसार अनुवादक अच्छा सृजनात्मक कलाकार है जो अंतर-सांस्कृतिक संबंधों में मध्यस्थता करता है:

2. दूसरे के अनुसार उसका काम संदेहास्पद है क्योंकि वह पाठ रचना की प्रक्रिया में आर्थिक, राजनीतिक, भौगोलिक असमानताओं को प्रतिबिम्बित करता है। महाश्वेता सेन गुप्ता के अनुसार अनुवाद लक्ष्य संस्कृति द्वारा बनायी गयी छवि की शासकीय सत्ता के आगे झुकना बन सकता है। 'हम अनूदित पाठ द्वारा बनायी और पुष्ट की गयी सांस्कृतिक रूढ़िबद्ध धारणा में कैसे रह जाते हैं'

3. पीटर फ्रांस का मानना है कि 'आज सिद्धान्तकारों और विद्वानों के सामने अनुवाद के अच्छे और बुरे होने से ज्यादा जटिल कार्यक्रम है जैसे कि यह जानना कि अनुवादक अपने सामने खुली संभावनाओं और उनके संदर्भ में ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक बदलाव को किस तरह ग्रहण करता है।'

4.2.2 अनुवादः एक भाषिक अन्तरण

भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन भाषा विज्ञान कहलाया। अधिकांश विचारकों ने अनुवाद सिद्धांत को भाषा विज्ञान की शाखा माना। मोना बेकर, रोजर बेल आदि ने अनुवाद की भाषा विज्ञान पर आधारित विवेचना की, तो कैटफर्ड, न्यूमार्क जैसे विद्वानों ने अनुवाद की प्रक्रिया पर अनुसंधान कर अपनी स्थापनाएं सामने रखी। अनुवाद को स्वतंत्र विषय के रूप में मानने के पक्षधर विद्वानों का विचार था कि भाषा वैज्ञानिक संदर्भ जनित विस्तार को स्वीकार नहीं करते और साहित्यिक विद्वान निरर्थक तुलनात्मक विवेचन करते हैं।

नए अध्ययनों के साथ भाषा विज्ञान और अनुवाद के बीच फासला आने लगा। बहुभाषिकता की प्रवृत्ति संसार भर में फैलने लगी। इसके परिणाम स्वरूप अनुवाद की स्थिति भी संकुचित नहीं रही। अब अनुवाद केवल मूल रचना का प्रतिरूप नहीं बल्कि लक्ष्य भाषा में लिखे गये मूल ग्रंथ का पद पा चुका है। आज विश्व के प्रत्येक क्षेत्र में संवाद को संप्रेषणीय बनाने में अनुवाद की आवश्यकता पड़ती है। किन्तु भाषा विज्ञान और अनुवाद में एक समान तत्व है भाषा। भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन भाषा विज्ञान कहलाता है और इसमें भाषा के विभिन्न घटकों का विवेचन होता है अनुवादक को भी उन सबको व्यवहार में लाना पड़ता है। ये है ध्वनि, पद, वाक्य, अर्थ जो अनुवाद कार्य में सहायक और आवश्यक होते हैं।

ध्वनि विज्ञान भाषा विज्ञान पूरी तरह इस पर निर्भर होता है, यह महत्त्वपूर्ण घटक है। अंग्रेजी से अनुवाद करते समय जैसे अंग्रेजी नाम आदि का अपनी भाषा के अनुरूप ध्वन्यानुकूलन जरूरी है, वैसे ही हर भाषा से अनुवाद के समय यह ध्यान रखना जरूरी है। लक्ष्य भाषा के प्रतिकूल शब्द-प्रयोग हास्यापद लगेगा।

पद विज्ञान : अनुवादक के लिए दोनों भाषाओं की प्रकृति जानना जरूरी होता है क्योंकि तभी वह सही पद प्रयोग कर सकेगा। कभी कभी उसे आवश्कयतानुसार शब्द गढ़ने की भी जरूरत पड़ सकती है, पर उस समय उसे दोनों भाषाओं की प्रकृति को ध्यान में रखना होगा।

वाक्य विज्ञान : अनुवाद का स्वरूप वाक्य में उभर कर आता है। कई भाषाओं के वाक्यों में कर्ता, कर्म और क्रिया के क्रम से हटकर प्रयोग किया जाता है। विदेशी भाषा ही नहीं, प्रादेशिक भाषाओं में भी यह अंतर देखा जा सकता है। ऐसे में अनुवाद का दायित्व लक्ष्य भाषा की प्रकृति को ध्यान में रखना होगा। अन्यथा वह लक्ष्यभाषा के पाठक के प्रति दायित्व नहीं निभा पायेगा।

अर्थ विज्ञान : किसी की रचना का अर्थ पक्ष महत्त्वचपूर्ण होता है। मूल पाठ का अर्थ समझे बिना अनुवाद कार्य दुष्कर है। कुछ शब्द, कोई उक्ति, मुहावरा आदि का अनुवाद करना कठिन हो तो भी यदि प्रसंग स्पष्ट हो तो समतुल्य शब्द रखा जा सकता है, किन्तु यदि अर्थ ही अस्पष्ट हो तो अनुवाद निश्चित रूप से गलत होगा। ऐसे में मूल लेखक और लक्ष्यभाषा के पाठक दोनों के प्रति अन्याय होगा।

अतः कहा जा सकता है कि अनुवाद को भले ही भाषा विज्ञान की छत्र दाया से दूर रखा जाए, फिर भी वह उससे जुड़ा रहेगा।

4.2.3 अनुवादक की दृश्यता

पहले मूल पाठ को ईमानदारी से ज्यों का त्यों रख सकने वाला अनुवाद अर्थात् शब्द-अर्थ और वाक्य के स्तर पर समानार्थक शब्द प्रयाग कर सकने वाला अनुवाद ही अच्छा माना जाता था।

तात्पर्य यह कि स्रोत भाषा को महत्त्व दिया जाता था और अनुवाद को दोयम स्थिति पर रखा जाता था। 20वीं शताब्दी से प्रमुख शोधों के परिणाम स्वरूप समानार्थकता की धारणा में बदलाव आने लगा। फ्रेंच विद्वान रोला बार्थ ने मूल लेखक का अंत माना।

अब केन्द्र में लेखक के स्थान पर अनुवादक आ जाता है। वह अपने अनुसार अर्थग्रहण करता है, क्योंकि होई भी रचना-एकार्थक नहीं होती, उसके कई अर्थ निकल सकते हैं। तदोपरांत अनुवादक मूल पाठ के अनुवाद करेगा। वह किसी भी प्रकार की मनमानी नहीं कर सकता, जब मूल पाठ के समय और अनुवादक के समय में अंतर हो तो समानार्थकता को मानदंड बनाना सही नहीं होगा।

कैटफर्ड, नाइडा ने भाषा, शैली, भाव तथा पाठ परक समतुल्यता का सुझाव दिया पर उन्हें भी अन्तिम लक्ष्य नहीं माना जा सकता।

आधुनिक युग में अनुवाद की दोयक स्थिति को नकारते हुए विद्वानों ने इसकी सर्जनात्मकता को महत्त्व दिया है। देरीदा ने कहा कि 'अनुवाद लेखन है, नकल नहीं। यह मूल पाठ का सृजनात्मक लेखन है। सृजनात्मक कहते ही मूल पाठ के प्रति ईमानदारी और समानार्थकता का दबाव ढीला पड़ जाता है। आज लेखक और अनुवादक दोनों को सृजनात्मक रचयिता का समान पद मिल गया है।

ऑक्टेवियो पाज का विचार है कि 'लेखक चाहे तो शब्दों को आदर्श अपरिवर्तनीय आकार दे सकता है पर अनुवादक का काम है कि वह स्रोत भाषा में कैद शब्दों को मुक्त करके लक्ष्यभाषामें फिर से जीवित होने का मौका दे।' लॉरेंस वेनुटी अनुवादक की सृजनात्मकता और अनुवाद में उसकी दृश्य उपस्थिति पर बल देते हैं।

नये यूरोपियन लेखकों ने अनुवाद को सर्जनात्मक पुनर्लेखन के रूप में देखा है। अनुवादक को स्रोत लेखक, मूल रचना तथा लक्ष्य भाषा के पाठक के बीच सेतु निर्माण करने वाला माना है। शेरी साइमन के अनुसार भाषा सिर्फ सत्य का प्रतिबिम्बन नहीं करती बल्कि अर्थ को आकार देने में सहायक होती है।

4.2.4 अनुकूलन (Adaptation) के रूप में अनुवाद

सिनेमाई भाषा का माध्यम दृश्य होता है जिसे भाषिक प्रतीकांतरण भी कहा जा सकता है, जबकि साहित्य का माध्यम मुद्रित शब्द होता है। साहित्य के आधार पर चित्र रचना होती रही है और फिल्में, टी.वी. के सीरियल बनते रहे हैं। अन्य क्षेत्रों की तरह इसमें भी अनुवाद ने विस्तार ला दिया है। प्रादेशिक भाषाओं और विदेशी भाषाओं की फिल्में अनुवाद के आधार पर ही प्रसार पाती हैं। शब्दों को सिनेमाई दृश्य में अनूदित करने की प्रक्रिया के दौरान सिनेमी मांसकों और साहित्यकारों के बीच खुलकर विचार-विमर्श होता है।

दर्शक को स्थिर चित्र की अपेक्षा गतिशील दृश्य अधिक जीवंत लगता है। उसे दृश्य की सच्चाई पर विश्वास होने लगता है। सिनेमाई माध्यम वस्तु के रूप को हूबहू हमारे सामने लाता है, इसके साथ गतिशील वस्तुओं की गति को भी ध्वनि के साथ हमारे सामने रखने में सक्षम हो पाता है। गति के यही तत्व दृश्य भाषा का निर्माण करते हैं। लिखित शब्द में ये गुण बिल्कुल नदारद होते हैं। व्यक्ति गतिशील दृश्य के साथ सहज ही तादात्म्य स्थापित कर लेता है। शब्द दृश्य में अनूदित होकर अपने निहितार्थ को स्पष्ट करने का दृश्यात्मक साधन पा लेते हैं। गतिशील भाषा लिखित शब्द के लिए बहुत बड़ी चुनौती बन गयी है।

छवि सिनेमाई भाषा का प्राणतत्व है। क्रिश्चियन मेत्ज के अनुसार एक छवि से दूसरी छवि तक जाने की प्रक्रिया ही छवि से भाषा तक पहुंचने की प्रक्रिया है। सिनेमा में छवि अन्य घटकों के साथ मिलकर संप्रेषण का माध्यम की तरह अपने मंतव्य को व्यक्त करता है। मेत्ज ने सिनेमाई भाषा को बोल-चाल की सामान्य भाषा मानने का प्रयास किया है। सिनेमा की भाषा की तुलना पारंपरिक भाषा से नहीं की जा सकती और ना ही उसके आधार पर विश्लेषित की जा सकती है। मेत्ज सिनेमा की भाषा के शब्द 'शॉट' को शब्द से आगे, एक पूरे वक्तव्य के रूप में लेते हैं जो पारंपरिक भाषा में न होकर मौखिक रूप में होता है। इसे भाषा विज्ञान के नियमों के आधार पर समझना कठिन होता है। सामान्य भाषा व्यवस्था वाक्य पर पूरी होती है, सिनेमाई भाषा वहां से शुरू होती है क्योंकि फिल्म निर्माता के शब्द 'शॉट' से वाक्य शुरू होता है। सिनेमाई संज्ञा की पारंपरिक छवि से भिन्न होती है जैसे-कुर्सी के साथ लकड़ी, लोहे आदि की कल्पना

जुड़ती है जबकि सिनेमा में दिखने वाली कुर्सी साफ दिखने के कारण कल्पना को जगह नहीं देती। फिल्म की संज्ञा संकेतक और संकेतित दोनों होने के कारण अर्थ की दृष्टि से एक ही रूप रखती है। मेत्ज के इस सिद्धांत को एकल मुखरित रूप (सिंगल आर्टिकुलेट) कहा गया है। समय और परिस्थितियों के अनुसार हर भाषा की तरह सिनेमा के आने के कारण सिनेमा में उप-शीर्षकों पर भी ध्यान देना जरूरी होता है। फिल्म की भाषा से यदि दर्शक का साधारणीकरण नहीं हो पायेगा तो फिल्म असफल हो जायेगी। उपशीर्षकों में भी अनुवाद की सहायता ली जाती है। ये न होते हो हम दूसरी भाषाओं की सुंदर फिल्मों को देखने से वंचित रह जाते। बाजार की संभावनाओं से प्रेरित होकर निर्देशक और प्रोड्यूसर शब्द के महत्त्व को समझ गये हैं और अच्छे उपशीर्षक देने की दिशा में डिजीटल टेक्नोलॉजी तथा दूसरे तरीकों से भी मदद ले रहे हैं। इस दिशा में भी भाषा का रूप उदार सर्वग्राहक होने पर जोर दिया जा रहा है।

4.2.5 मशीनी अनुवाद

भारत में कम्प्यूटर अनुवादके क्षेत्र में विशेष विकास नहीं हो पाया है। क्योंकि भारतीय भाषाओं की लिपि और भाषिक संरचना को कम्प्यूटर से जोड़कर ही अनुवाद का प्रयोग संभव हो सकता था। इसलिए 1980 के बाद ही यह काम शुरू हो गया। पर हमारे पास जो कम्प्यूटर है उसकी टैक्नोलॉजी आयातित है, स्वनिर्भर नहीं, और भाषा अंग्रेजी है। केन्द्रीय प्रोसेसिंग यूनिट और स्मरण शक्ति की भाषा भी अंग्रेजी है। जब तक हमारे पास इनपुट आउटपुट यूनिट की द्विभाषी रूप में काम करने की सक्षमता नहीं आयेगी तब तक यह काम नहीं हो पायेगा। कम्प्यूटर एक मशीन है। उसका कंपाइलर किसी भाषा में दिये गये आदेश को उसी भाषा में बदल सकता है जिसे मशीन समझती है। इसलिए कम्पयूटर में भारतीय भाषाओं तथा हिन्दी में प्रोग्राम करने की व्यवस्था होनी जरूरी है। "वर्ल्ड वाइड वेब' के विस्तार से अनुवाद में संभावनाओं की कल्पना अभी हमने शुरू ही की है। निकट भविष्य में जैसे जैसे इलेक्ट्रॉनिक अनुवाद अधिक सुविज्ञ होगा, वैसे-वैसे अनुवाद के अध्ययन को भी अधिक विकसित होना पड़ेगा।"

4.3 अनुवाद की समस्याएं

वास्तव में देखा जाये तो अनुवाद की सीमाएं और समस्याएं एक सी ही हैं अनुवादक का कार्य स्रोत भाषा की पाठ सामग्री को लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करना है। जब तक वह मूल रचना के मर्म तक नहीं पहुंच जाता है तब तक लक्ष्य भाषा में ला पाना असंभव है। यही नहीं मर्म तक पहुंचने के बाद भी यदि भाषा प्रयोग उपयुक्त और सटीक नहीं होता तो प्रस्तुति प्रभावपूर्ण नहीं बन पायेगी। यह प्रक्रिया नियमों से आबद्ध है। अतः किसी भी अच्छे अनुवाद के लिए दो बातें जरूरी हैं। अनुवादक का मूलपाठ से साधारणीकरण और भाषा पर नियंत्रण। स्पष्ट है कि अनुवाद कर्म उतना सहज नहीं है जितना सोचा जाता है। सिसरों ने युगों से पहले इस समस्या पर प्रकाश डालतें हुए लिखा, 'अगर मैं शब्द के स्थान पर शब्द रखता हूं तो वह भद्दा लगेगा और अगर जरूरत से मजबूर होकर काम करते समय कुछ बदलता हूं तो लगेगा कि मैं अपने कर्म से हट गया हूं।' लेवी का मानना है कि अनुवाद का मूल पाठ की कठिन अभिव्यक्ति को छोड़ देना या बदलना अनैतिक होगा। यह स्रोत ग्रंथ का लेखक नहीं बन सकता फिर भी लक्ष्य ग्रंथ के लेखक के रूप में लक्ष्य भाषा के पाठक के प्रति उसकी नैतिक जिम्मेदारी है।

अनुवाद केवल भाषा का शाब्दिक और व्याकरणिक पर्याय नहीं है। पोपोविच इसे दो भाषाओं के बीच अभिव्यक्ति परक पहचान बनाने वाला मानते हैं। यह मानना पड़ेगा कि एक ही रचना के भले ही एक ही भाषा में दर्जन भर अनुवाद किये जायें पर वे सब भिन्न होंगे, फिर भी उन दर्जन अनुवादों में मूल रचना का एक अपरिवर्तनीय मर्म छिपा रहता है। वह नहीं बदलता है केवल अभिव्यक्ति बदलती है। मुकारो का यही विचार है कि साहित्यिक रचना का चरित्र स्वतंत्र और अभिव्यक्ति परक होता है। समानार्थक शब्दों को खोजते समय इन दोनों तत्वों को ध्यान में रखना चाहिए, क्योंकि भाषा की भिन्न-भिन्न अभिव्यक्तियों में समानता नहीं आ सकती। नाइडा कैटफर्ड आदि विद्वान अनुवादक की उस कठिनाई को समझते हैं जो लक्ष्य भाषा में अनुपलब्ध होते हैं। आंद्रे लेफेवर भी यही मानते हैं कि 'अनुवाद की समस्यायें कम से कम जितनी धारणात्मक और पाठांतर से उपजती हैं उतनी ही भाषा के अंतर से भी आती हैं। 14. नाइडा और कैटफर्ड ने इस कठिनाई को दो प्रकार का माना है : 1. भाषाओं के अंतर के कारण, 2. संस्कृति के अंतर से। भाषायी कठिनाई का कारण भाषाओं का भाषा-वैज्ञानिक अंतर होता है, तो सांस्कृतिक कठिनाइयों का कारण देश प्रदेश की सांस्कृतिक और स्थितिजन्य विभिननताएं होती हैं।

इस विषय पर विस्तृत चर्चा के लिए हम समस्याओं को तीन वर्गों में प्रस्तुत करेंगे जो एक दूसरे की घनिष्ठता से जुड़ी है। 1. भाषापरक, 2. सामाजिक सांस्कृतिक, 3. पाठ की प्रकृति।

1. हर भाषा की अपनी भाषिक संरचना होती है, यहां तक कि बहुभाषी देशों में एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश की भाषा भी भिन्न होती है। कई बार दूसरे प्रदेश की भाषा समझना असंभव होता है। ऐसे में यह सोचना कि एक भाषा के शब्द का दूसरी में समानार्थक शब्द मिल सकता है- एक असंभव परिकल्पना है। कई बार भाषा की ध्वनि और विन्यास की भी समस्या आ जाती है। भाषाओं में अंतर के कारण अभिव्यक्ति भी भिन्न होती है।

2. भाषा द्वारा सामाजिक सांस्कृतिक अभिव्यक्ति से परिचय होता है। सांस्कृतिक उपमानों का अनुवाद एक बड़ी समस्या है। यह समस्या समसांस्कृतिक भाषाओं में और भी विकट हो जाती है।

   मुहावरों, चुटकुलों या हास्यव्यंग्य की उक्तियों, दैनिक व्यवहार की चीजों के अनुवाद बहुत कठिन होते हैं। कई बार पर्याय न मिलने पर स्थिति और भी कठिन हो जाती है। जहां अनवुाद असंभव हो वहां शब्द को ज्यों का त्यों लिख देना चाहिए जैसे ऑक्सफोर्ड शब्द कोश में हिन्दी के शब्द-ब्रह्म, माया योग आदि को इसी रूप में जोड़ दिया गया है। कैटफोर्ड का विचार है कि शब्द वैसे ही लिखकर पाद टिप्पणी में अर्थ दे देना चाहिए। इससे एक तो पाठक को समतुल्य शब्द मिल जायेगा दूसरे उसे स्थानीय/अंतर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक विशेषता की जानकारी भी हो जायेगी। यह जरूर ध्यान रखना होगा कि पाद टिप्पणियों की संख्या इतनी अधिक ना हो जाये कि मूल पाठ के प्रवाह में बाधक हो जाये।

   मुहावरों के समतुल्य मुहावरे रचना का आस्वाद बढ़ा सकते हैं, पर ना मिलने की स्थिति में शब्दार्थ देने से हास्यास्वाद लग सकता है। ऐसे में भावानुवाद करना अधिक उपयुक्त होगा, किन्तु इसे भी सतर्कता से करना होगा। चिकन हार्टड (Chichen Hearted) का शब्दानुवाद मुर्गी का दिल है पर 'कमजोर दिल' का प्रयोग भाव को सही रूप में संप्रेषित करेगा।

3. साहित्येतर विषयों का अनुवाद हो या साहित्यिक विधाओं का अनुवाद, विज्ञापन हो या तकनीकी विषय के अनुवाद; अनुवादक को पाठ की प्रकृति के अनुसार कार्य करना पड़ता है। शिक्षा क्षेत्र के लिए किए जाने वाले अनुवाद में छात्र की उम्र और कक्षा का ध्यान रखना जरूरी होगा तो सामान्य पुस्तक में यह समस्या होगी कि भाषा न तो बहुत क्लिष्ट हो और न ही गंवारू। अतः पाठ तथा पाठक के अनुरूप अनुवाद करना होगा। कई बार ज्यों का त्यों अनुवाद भाषिक दृष्टि से भले ही सही हो कर्ण कटु लगता है और कई बार बदलाव लाने में भाव के बदल जाने का डर रहता है। पर अच्छा अनुवादक जब मूल रचना से तादात्म्य कर पाता है, तब समस्यायें स्वयं दूर हो जाती है।

4.4 सारांश

पहले अनुवाद को भाषा विज्ञान की शाखा माना जाता था, अब उसे स्वतंत्र माना जाने लगा है। अनुवादक को मूल लेखक के समकक्ष रखा जा रहा है। अनुवाद का अर्थ शब्दशः समानार्थ प्रस्तुत करना नहीं है, बल्कि उसे अनुवादक की सृजनात्मकता का प्रमाण माना जाता है। भाषा के क्षेत्र में भी बहुत परिवर्तन हुआ है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना स्थान बनाने के लिए यह उदारता जरूरी है। अब पारिभाषिक शब्दावली को देवनागरी में लिखने, विदेशी शब्दों को आत्मसात् कर अपनी प्रकृति के अनुरूप बदलने की प्रवृत्ति आ रही है। इस प्रकार विचार के साथ अभिव्यक्ति भी आधुनिक हो रही है। किसी भी व्यक्ति के लिए हर भाषा में पारंगत होना संभव नहीं है। पर अनुवाद भी न होता तो हम दूसरी भाषाओं के साहित्य, फिल्मों आदि से पूरी तरह वंचित रह जाते। साहित्यिक ग्रंथों के अनुवादों और फिल्मों के उपशीर्षकों (sub titles) की बदौलत हम सबसे संपर्क में हैं। यह अनुवाद की ही महिमा है कि एक मध्य वर्गीय, अंग्रेजी कम जानने वाला बच्चा भी हैरी पॉटर की काल्पनिक दुनिया का हिस्सा बन सका है।

4.5 अभ्यास के लिए प्रश्न

1. अनुवाद में उभरते मुद्दों पर विचार कीजिए।
2. क्या अनुवाद भाषिक अंतरण है? विचार कीजिए।
3. अनुवाद को पुनर्सृजन कहना कितना उचित है? आलोचनात्मक विवेचन कीजिए।
4. अनुवाद की समस्या पर विचार कीजिए।

4.6 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. नगेन्द्र, 1993, *अनुवाद विज्ञान,* दिल्ली विश्वविद्यालय।
2. गुप्ता, नीता एवं टंडन, पूरनचंद, 2001, *अनुवाद शतक,* दिल्ली, प्र. सं. भारतीय अनुवाद परिषद।
3. श्रीवास्तव और गोस्वामी, *अनुवाद सिद्धांत और समस्याएं,* दिल्ली।
4. विश्वनाथ अय्यर, एन. ई., *अनुवाद भाषायें; समस्यांए,* त्रिवेंद्रम्।
5. तिवारी, भोलानाथ; *अनुवाद विज्ञान,* दिल्ली, शब्दकार।
6. Baker, Mona; 1992, *In other words*; New York, Routledge.
7. Bassenett; Susan; 2003, *Translation Studies*; New York, Routledge.
8. Cronin, Michal; 2000, *Across the lines*; Corkmiuonly Press.
9. France, Peter; 2000, *The Oxford Guide to Literature in English Translation*; Oxford.
10. Cruitian, Metz ; 1974, *Film Language*; New York.
11. Sepir Adword; 1956, *Language & Personality*; Los Angles.
12. Levy J.; 1963, *The Art of Translation*; Prague.
13. Derride, J.; 1985, *Difference in Translation*; Ithaca.